

UNIVERSAL
LIBRARY

OU 180994

UNIVERSAL
LIBRARY

OUP—67—11—1—68—5,000.

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H82
R12V
Author राघव, रामाय.
Title वेदिका का जोड़ना

Accession No. H4069

This book should be returned on or before the date last marked below.



हिन्दी शेक्सपियर

वेनिस का प्रौढ़ावर

शेक्सपियर

अनुवादक: 37. रंगेश शर्मा

राजपाल मण्ड संम, करमीरी गेट, दिल्ली-६



मूल्य : पौने दो रुपये (१७५ नये पैसे)
प्रथम संस्करण : जुलाई १९५७
आवरण : नरेन्द्र श्रीवास्तव
प्रकाशक : राजपाल एण्ड सन्स, बिल्ली
मुद्रक : हिन्दी प्रिंटिंग, प्रेस, बिल्ली



शेक्सपियर

विश्व-साहित्य के गौरव, अंग्रेजी भाषा के अद्वितीय नाटककार शेक्सपियर का जन्म अप्रैल, १५६४ ई० में स्ट्रैटफोर्ड-अग्न-एवोन नामक स्थान में । उसकी बाल्यावस्था के विषय में बहुत कम ज्ञात है। उसका पिता एक किसान का पुत्र था, जिसने अपने पुत्र की शिक्षा का खर्च उठाने का प्रबन्ध भी नहीं किया । १५८२ ई० में शेक्सपियर का ब्रिस्टल आया, जहाँ से आठ वर्ष बड़ी ऐनहैथवे से हुआ और सम्भवतः उसका पारिवारिक जीवन सन्तोषजनक नहीं था । महारानी एलिजाबेथ के शासनकाल में १५८७ ई० में शेक्सपियर लन्दन आकर नाटक कम्पनियों में काम करने लगा । हमारे जायसी, सूर और तुलसी का प्रायः समकालीन यह कवि यहीं आकर यशस्वी हुआ और उसने अनेक नाटक लिखे, जिनसे उसने धन और यश दोनों कमाये । १६१२ ई० में उसने लिखना छोड़ दिया और अपने मूलस्थान को लौट गया और शेष जीवन उसने समृद्धि तथा सम्मान से बिताया । १६१६ ई० में उसका स्वर्गवास हुआ ।

इस महान् नाटककार ने जीवन के इतने पहलुओं को इतनी गहराई से चित्रित किया है कि वह विश्व-साहित्य में अपना सानी नहीं ढूँढ सकता । मारलो तथा बेन जानसन जैसे उसके समकालीन कवि उसका उपहास करते रहे, किन्तु वे तो लुप्त-प्रलय हो गये, और यह कविकुल-दिवाकर आज भी देदीप्यमान है । शेक्सपियर ने लगभग ३६ नाटक लिखे हैं, कविताएँ अलग ।

उसके कुछ प्रसिद्ध नाटक हैं—जूलियस सीज़र, अॉथेलो, मैकबेथ, हैमलेट, लियर, रोमियो जूलियट (दुःखान्त); ग्रीष्म-मध्यरात्रि का स्वप्न, वेनिस का सौदागर, बारहवीं रात, तिल का ताड़ (मच एंडू अबाउट नर्थिंग), शीतकाल की कथा, तूफ़ान (सुखान्त) । इनके अतिरिक्त ऐतिहासिक नाटक हैं तथा प्रहसन भी हैं । प्रायः उसके सभी नाटक प्रसिद्ध हैं ।

शेक्सपियर ने मानव-जीवन की शाश्वत भावनाओं को बड़े ही कुशल कलाकार की भाँति चित्रित किया है । उसके पात्र आज भी जीवित दिखाई देते हैं । जिस भाषा में शेक्सपियर के नाटकों का अनुवाद नहीं है वह भाषाओं में कभी नहीं गिनी जा सकती ।

भूमिका

‘मर्चेन्ट ऑफ वेनिस’ (वेनिस का सौदागर) का विषय शेक्सपियर के पूर्व ही व्यवहृत हो चुका था—इसका पता सम-सामयिक सूत्रों से भली प्रकार चलता है। इसके कथानक की रूप-रेखा सर जियोवानी फिओरेन्टिनो की इटैलियन पुस्तक ‘इल पेकोरोन’ से बहुत कुछ साम्य रखती है। उपलब्ध सामग्री से यह ज्ञात होता है कि शेक्सपियर ने अपने इस नाटक की रचना सन् १५६८ से पूर्व की थी। इसकी कथावस्तु भी शेक्सपियर को एक ऐसे देश से प्राप्त हुई जिसका प्रभाव एलिज़ाबेथ कालीन इंग्लैण्ड की संस्कृति पर प्रभूत मात्रा में पड़ा था।

‘मर्चेन्ट ऑफ वेनिस’ की कथावस्तु नितांत रोचक है। वेनिस शहर का एक सुंदर और सजीला नौजवान बैसैनियो तीन ‘caskets’ (जवाहरात और शव की राख रखने वाले बक्सों) को प्राप्त करने के लिये अपना भाग्य अजमाने बेलमोन्ट तक की यात्रा को जाने के लिये उत्सुक है क्योंकि इन तीन caskets पर अपना भाग्य आजमा लेने पर ही वह सुन्दरी पोर्शिया के हृदय को जीत सकने में समर्थ हो सकता है। बैसैनियो स्वभावतः बड़ा खर्चीला है और अपने धन को पानी की तरह बहाता है अतः जब बेलमोन्ट की यात्रा पर जाने के लिये उसे धन की आवश्यकता पड़ती है तो वह अपने एन्टोनियो नाम के एक व्यापारी मित्र से धन उधार माँगता है। किंतु एन्टोनियो का सारा धन व्यापार में लगा होने के कारण समुद्र पर जहाज में था, जिससे वह अपने पास से उसे न देकर शाइलॉक नामक

एक यहूदी से तीन हजार स्वर्ण मुद्राएँ कर्ज दिला देता है । कर्ज लेते समय कितना आश्चर्यजनक 'तमस्सुक' (बाँण्ड) भरा जाता है, बैसैनियो को अपने लक्ष्य की प्राप्ति में कहाँ तक सफलता प्राप्त होती है और वह कैसे निश्चित समय पर शाइलॉक का कर्ज चुकाने में असमर्थ रहता है तथा उसका मित्र ऐन्टोनियो किस प्रकार दुर्भाग्य की क्रूर लपेट में आता है एवं इस भयानक परिस्थिति से किस प्रकार पोशिया इनकी रक्षा करती है—यही सब 'मर्चेन्ट ऑफ वेनिस' में वर्णित है ।

'मर्चेन्ट ऑफ वेनिस' शेक्सपियर के नाटकों में अन्यतम है और अत्यन्त लोकप्रिय हुआ है ।

—रांगेय राघव



पात्र-परिचय

वेनिस का ड्यूक

मोरक्को का राजकुमार
अरागोन का राजकुमार

} पोशिया के प्रेमी

एन्टोनियो
बैसैनियो

} एक व्यापारी
: एन्टोनियो का मित्र और
: पोशिया का प्रेमी

सेलैनियो
सेलैरिनो
ग्रेशियानो
सेलैरियो

} एन्टोनियो और बैसैनियो का मित्र

लौरेन्जो
शाइलॉक
ट्यूबॉल
लॉन्सलौट गोब्बो
वृद्ध गोब्बो
लियानाडॉ

: जैसिका का प्रेमी
: एक धनवान यहूदी
: एक यहूदी : शाइलॉक का दोस्त
: शाइलॉक का सेवक
: लॉन्सलौट का पिता
: बैसैनियो का सेवक

स्टीफनो
बालथाज़र

} पोशिया की सेविकाएँ

(८)

पोशिया : राजकन्या
नेरिसा : पोशिया की अंतरंग सेविका
जैसिका : शाइलॉक की पुत्री

[न्यायालय का क्लर्क, वेनिस के रईस, न्यायालय के अफसर, बंदीगृह
का अध्यक्ष, पोशिया के सेवक एवं अन्य दर्शक इत्यादि]



पहला अंक

दृश्य १

[वेनिस-पथ]

[एन्टोनियो, सैलैरिनो और सैलैनियो का प्रवेश]

एन्टोनियो : सच कहता हूँ, मैं नहीं जानता, मैं इतना उदास क्यों हूँ । यह उदासी मुझे खाये जा रही है, यहाँ तक कि इससे तुम्हारा मन भी बोझिल होने लगा है । किंतु मैं स्वयं नहीं जानता कि आखिर यह है क्या । क्यों घेर लिया है इसने मुझे, क्यों छा गई है यह वेदना मुझ पर ! मैं तो जानता भी नहीं कि अचानक ही इसका उदय कैसे हो गया ! आह ! इस विषाद ने मुझे ऐसी व्यापकता से ग्रस लिया है, मेरी चेतना को ऐसा पराभूत कर दिया है कि मैं तो अपने आपको भी सरलता से पहचान तक नहीं पाता ?

सैलैरिनो : तुम्हारा मन समुद्र की लहरों के थपड़े खा रहा है । जहाँ दीर्घ पालों वाले तुम्हारे विशाल जहाज वैभव और गौरव से उन्नत तरंगों पर चलते हैं मानों वे समुद्र की भव्य यशःकाया हैं जो छोटे जहाजों की सलामियाँ लेते हुए बढ़ते हैं । उनका उन्नत शीश अपने से छोटों को अकिंचन समझ कर और ऊपर उठ जाता है और वे छोटे पोत अपनी क्षुद्रता में दीन मन से अपने विनीत पाल फैलाये अभिवादन करते हुए इधर-उधर घूमा करते हैं ।

सैलैनियो : विश्वास करो, यदि मैं तुम्हारे स्थान पर होता, तो ऐसे उत्तुंग लहरों वाले प्रचण्ड समुद्र पर अपने ऐसे जहाजों को भेज

कर सदैव ही उनकी चिंता से ग्रस्त रहता। क्षण-क्षण घास उड़ाया करता और देखता कि हवा का रुख किधर है। हर क्षण नक्शों पर रहती मेरी आँखें और बन्दरगाहों और समुद्र-तोर के नगरों को ढूँढा करता; जहाँ-जहाँ मेरे जहाजों को तूफ़ान और खतरों में शरण मिल सकती, उनको ही देखा करता।

सैलैरिनो : अगर मैं अपने शोरवे को फूँक मारकर ठंडा करता होता, तो मुझे याद आ जाती उन भयानक तूफ़ानों की जो मेरे जहाजों को नुकसान पहुँचा सकते और बस इस विचार से ही मेरे तो रोंगटे खड़े हो जाते ! कभी अगर मेरी नज़र घड़ियाल की धसकती बालू पर आती, तो तुरंत मुझे ध्यान आ जाता उन मछलियों के भुण्डों और रेतीले समुद्री किनारों का जिनमें बहुमूल्य वस्तुओं से लदे जहाज जाकर फँस जाते हैं और ऊँचे-ऊँचे मस्तूल भी भुक जाते हैं; वहीं उनकी कब्र बन जाती है और वे सदैव के लिये विनष्ट हो जाते हैं। कभी मैं गिरजे में जाता और उपासना-स्थल की पत्थर की इमारत को देखता तो मुझे फौरन समुद्र में डूबी हुई उन भयानक चट्टानों का खयाल आ जाता जिनसे मामूली तरह से टकराकर मेरे जहाज खंड-खंड हो जाते और उनकी बहुमूल्य सामग्री और रेशमी माल इत्यादि टूट-टूट कर नष्ट-भ्रष्ट होकर लहरों पर बिखर-बिखर कर बहने लगते। वे जो कि अपार संपत्तियुक्त होते, वे ही केवल विध्वंसमात्र बच रहते। यदि अपने जहाजों पर टूटने वाली इन विपत्तियों का मैं विचार करता रहता तो ऐसे विनाशजन्य विषाद ने मुझे भी सदा के लिये आक्रान्त कर लिया होता। तुम नहीं कह सकते ऐन्टोनियो ! कि मेरी कल्पना अनुचित है। मैं पक्की तरह से कह सकता हूँ कि इन जहाजों की चिंता ने ही तुम्हें इतना

उदास बना दिया है ।

ऐन्टोनियो : मेरा विश्वास करो कि यह गलत है । यह मेरा सौभाग्य ही समझो कि मैंने अपना सारा कीमती माल एक ही जहाज में नहीं लादा, न मेरे सब जहाज कहीं एक ही जगह गये हैं । इस वर्ष के व्यापार पर मेरा भाग्य बिल्कुल निर्भर नहीं है । मुझे समुद्र पर गये अपने जहाजों की तो तनिक भी चिंता नहीं हो रही है ।

सैलैरिनो : यदि ऐसा है तो तुम्हारे दुख में पड़े रहने का कारण यही है कि तुम्हें प्रेम की पीड़ा हो रही है ।

ऐन्टोनियो : क्या ऊटपटांग बात है !

सैलैरिनो : ऊटपटांग तो यह है कि तुम्हारी उदासी का कारण न व्यापार है, न प्रेम ही । तब एक ही बात कही जा सकती है कि तुम्हारा दिल खुश नहीं है और यदि तुम उदास न होते तो आनंद से चंचल हो उठते । द्विशिरस् देवता जेनस की शपथ ! प्रकृति ने भी अपने क्षेत्र में कैसी-कैसी विचित्रताओं का निर्माण किया है ! कुछ में तो ऐसी मस्ती भरी रहती है कि वे हर समय हर बात पर हँसते रहते हैं, यहाँ तक कि वे बिला वजह, बिला तुक एक संगीत-वादक के वाद्ययंत्र को ही देखकर हँस सकते हैं, जैसे तोते किलकिलाया करते हैं । और कुछ ऐसे होते हैं कि चेहरे पर गम छाया रहता है और ऐसी बातें कि जो कथाओं में वर्णित यूनान के गंभीरतम व्यक्ति नेस्टर को भी हँसा देतीं, उन्हें विचलित नहीं करतीं । यह भी नहीं कि ज़रा मुस्कराते में उनके दाँत ही दीख जायें ! मजाल है !

सैलैरिनियो : यह लो ! ग्रेशियानो और लौरेन्जो के साथ तुम्हारा कुलीन बंधु बैसैनियो आ रहा है । अच्छा हमें बिदा दो, हम तुम्हें कहीं अच्छा संग देकर जा रहे हैं ।

सैलैरिनो : मैं तो तब तक रुकता जब तक तुम्हें हँसा न देता, किंतु अब तुम्हारे योग्यतम मित्र आ गये हैं ।

एन्टोनियो : तुम दोनों का मूल्य मेरे लिये किसी भी रूप में कम नहीं है । मुझे तो ऐसा लगता है कि तुम्हें इस समय कहीं कोई काम है और तुमने निकल जाने का यह अवसर ढूँढ़ लिया है ।

[बैसैनियो, लौरेंजो और ग्रेसियानो का प्रवेश]

सैलैरिनो : नमस्कार ! श्रीमन्तो ! नमस्कार !

बैसैनियो : आह मेरे अच्छे दोस्तो ! कब आयेगा वह समय जब हम कभी मिलकर आनंद मनायेंगे ? इतनी जल्दी हमें छोड़ कर क्यों जा रहे हो ? ऐसा लगता है जैसे तुम तो हमारे लिये बिल्कुल अजनबी होते जा रहे हो ! क्या ऐसा करना उचित है ?

सैलैरिनो : फिर कभी तनिक अवकाश में हम अवश्य उपस्थित होंगे । इस समय क्षमा करना ।

[सैलैरिनो और सैलैनियो का प्रस्थान]

लौरेंजो : प्रिय श्रीमन्त बैसैनियो ! अब तो एन्टोनियो आपको मिल ही गये हैं, तो हम भी जाते हैं । लेकिन रात को खाते समय... महरबानी करके भूल न जाना, याद है न आपको कहां पहुँचना है ?

बैसैनियो : मैं जरूर पहुँच जाऊँगा तुम्हारे यहाँ ।

ग्रेसियानो : श्रीमन्त एन्टोनियो ! क्या बात है ? तबियत ठीक नहीं है ? लगता है कि दुनियादारी के जंजालों ने बहुत अधिक जकड़ लिया है आपको ! यह याद रखना कि जो सारी चिंता की कीमत देकर इसे खरीदते हैं, वे बाकी सब कुछ खो देते हैं । विश्वास करना ! बहुत-बहुत बदले हुए दिखाई देते हो ।

एन्टोनियो : ग्रेसियानो ! मैं तो दुनिया को जैसी देखता हूँ न, वैसी

ही स्वीकार कर लेता हूँ। यह संसार एक रंगमंच है, जहाँ हर कोई अपने भाग का अभिनय करता है, और यह मेरा दुर्भाग्य है कि मुझे दुःख का भाग प्राप्त हुआ है।

प्रेसियानो : मैं तो विदूषक बनूँगा। हँसते-खेलते ही बूढ़ा हो जाना चाहता हूँ। आनंद और हास्य ही मेरे चेहरे पर झुर्रियों का ताना-बाना बुनें, न कि चिन्ताएं। मेरे जिगर को शराब की भभक गर्म रखे यही अच्छा है बनिस्बत इसके कि सदैव आहें मेरे दिल को ठंडा कर दें, कराहें मेरी रगों को भिगो दें। ये चीजें तो जिंदगी को तबाह कर देती हैं। एक स्वस्थ युवक जिसकी नसों में स्फूर्ति और शक्ति धड़कती हैं, उसे ऐसा पीला पड़ जाने का कारण ? जैसे अपने परदादा की संगमरमर की मूर्ति हो; ठंडा, निर्जीव ! क्यों न उनमें जीवन गमका करे ? चिड़चिड़ाहट की रफ्तारों में आखिर क्यों वह एक दिन पीलिया का शिकार बन कर ही रहे ? सच मानो ऐन्टोनियो ! मैं तुमसे प्रेम के नाते ही कहता हूँ कि इस दुनिया में आदमियों की एक ऐसी किस्म भी है कि उनके चेहरों पर ऐसा स्थिर, जड़ और अपरिवर्तनशील भाव बना रहता है जैसे किसी शांत, गतिहीन तालाब के पानी की सतह पर गंदी काई जम जाती हो। वे जान-बूझ कर गंभीर बनते हैं और चुप बने रहते हैं ताकि उन्हें यह सस्ता यश मिल जाये कि वे बड़े बुद्धिमान हैं, बड़े गंभीर हैं, और उनमें विचारों की बड़ी गहराई है। कभी-कभी बोलकर वे ऐसा खयाल पैदा करने की कोशिश करते हैं जैसे जब वे बोलते हैं तो कोई पैगम्बर बोलता है, जिसको कोई काटने की हिम्मत न करे और उनकी बात को ज्यों का त्यों स्वीकार कर लिया जाये। लेकिन मेरे ऐन्टोनियो ! ऐसों का यश तो सिर्फ़ इसी बात पर निर्भर करता

है कि वे हठ करके मौन साधे रहते हैं। और मुझे विश्वास है कि अगर वे बोल जायें तो समझो कि गजब की बेवकूफी जाहिर हो और सुननेवाले तुरंत ही उनको मूर्ख ही समझें। इस बारे में हम फिर भी बातचीत करेंगे। लेकिन व्यर्थ क्या चक्कर में पड़े हो ! यह यश तो कमाने योग्य भी नहीं है जो मूर्खों में भले ही स्तुत्य हो, मगर दुख के लासे से ऐसे यश की मछली पकड़ना इस लायक काम तो नहीं कि उसमें उलझे रहा जाये ! चलो, मित्र लौरेंजो ! भोजन के उपरांत फिर मैं अपनी बात समाप्त करूँगा।

लौरेंजो : तो फिर खाने के वक्त तक के लिये हम जा रहे हैं। मुझे लगता है कि मुझे भी वैसा ही मौन बुद्धिमान बनने को विवश होना पड़ेगा जिसका अभी ग्रेशियानो ने वर्णन किया है, क्योंकि यह आदमी इतना बातूनी है कि मुझे मुँह खोलने का मौका ही नहीं देता।

ग्रेशियानो : सच कहता हूँ, दो साल और मेरे साथ रह लो, तुम अपनी आवाज़ भी पहचानना भूल जाओगे।

ऐन्टोनियो : अच्छा बिदा ! जो कुछ ग्रेशियानो ने कहा है उसे अपने विचार में रखते हुए अब भविष्य में अधिक बोलने का अभ्यास करूँगा।

ग्रेशियानो : क्या बात कही है ! वाह ! शाबाश ! चुप रहना या तो एक खुशक ज़बान के बैल के लिये तारीफ़ की चीज़ है, या फिर शादी के लिये नाक्राबिल लड़की के लिये।

[ग्रेशियानो और लौरेंजो का प्रस्थान]

ऐन्टोनियो : क्या कह गया ये तमाम सब !

बैसैनियो : न कुछ, पर जितना ज़्यादा ग्रेशियानो बोल सकता है,

वेनिस में तो उसकी टक्कर का कोई है नहीं। पूरी दो भूसे की ढेरियों में सिर्फ दो दाने गेहूँ के मिल जायें, बस उसकी ढेर-ढेर बातों में मतलब की इतनी ही मिल जायें तो भी बहुत समझो। पूरा दिन आप इसी में बरबाद कर दीजिये कि आखिर इतना बोल रहा है उसमें कुछ अक्ल की भी कहता है, तो मजाल है कि ढूँढे से भी मिल जाये? और किस्मत से एक-आद मिल भी गई तो फिर इसका अफ़सोस शुरू कीजिये कि आपकी इतनी कड़ी मेहनत का कितना नाचीज़ मुआवज़ा आपके हाथ आया!

एन्टोनियो : छोड़ो, यह बताओ, वह कौन-सी स्त्री है जिससे तुम गुप्त रूप से मिलना चाहते हो। याद है न? तुमने आज मुझे सब कुछ बता देने का वादा किया था!

बैसैनियो : और मेरे एन्टोनियो! तुमसे तो कुछ छिपा नहीं है कि मैंने अपनी चादर के बाहर पाँव फैलाकर ही अपनी शान कायम रखी है। इतनी आमदनी भी कहाँ मेरी जो इतना दिखावा निभ जाता। मेरी संपत्ति का काफ़ी से ज्यादा हिस्सा तो इसी में खर्च हो चुका है। और अब जाके अपना खर्च घटाया है तो क्या मुझे इसका खेद होगा? लेकिन प्रश्न तो यह है कि किस सम्माननीय ढंग से अपना ऋण चुका डालूँ कि बात भी बनी रह जाये? मैं तो गर्दन तक डूबा हुआ हूँ। एन्टोनियो! तुमने मुझे कितनी मदद दी है, क्या कहूँ, धन भी दिया और स्नेह भी। मैं क्या कभी इसे भूल सकता हूँ। तुम्हारा असीम प्रेम और तुम्हारी सहायता देने की तत्परता ही मुझे आज यह स्पष्ट कह देने की प्रेरणा देते हैं कि मैं तुम्हें अपने सारे ऋण चुका देने की योजना बता दूँ।

एन्टोनियो : मेरे बैसैनियो! मुझे बताओ, मैं कहता हूँ कुछ छिपाना नहीं। अगर वह अच्छी योजना है और होगी ही, क्योंकि तुम

स्वयं अच्छे हो, मैं विश्वास दिलाता हूँ कि मैं, मेरा धन, मेरी हर तरकीब, तुम्हारी आवश्यकता पूर्ण करने के लिये तत्पर हैं।

बैंसनियो : अपने स्कूल के दिनों में जब निशाना लगाते वक्त एक तीर चूक जाता था तब मैं वैसा ही दूसरा तीर चलाता था, उसी दिशा में, उसी जोर से, और फिर उसे लक्ष्य की ओर जाते देखता था चुपचाप, और अक्सर कर मुझे दोनों ही तीर मिल जाया करते थे। मैंने तुम्हें बचपन के अनुभव की बात इसलिये बताई है कि मेरी योजना इस वक्त भी ऐसी ही बचपन की-सी है, बिल्कुल मासूम। वैसे ही मैं तुम्हारा काफ़ी कर्जदार हूँ। और एक खर्चीले नौजवान की तरह सब कुछ खर्च कर चुका हूँ। लेकिन अगर तुम चाहो कि उसी दिशा में दूसरा तीर मारो जिधर पहला मारा था, मुझे इसमें संदेह नहीं, क्योंकि लक्ष्य की ओर मैं देख रहा हूँ, तुम्हारे दोनों तीर तुम्हें मिल जायेंगे। अगर यह नहीं हुआ तो इस बार की दी हुई रकम तो तुम्हें मिल ही जायगी और रही पहले कर्ज की बात, सो मैं उसके लिये कृतज्ञ ही हूँ और सदैव स्मरण रखूँगा।

एन्टोनियो : घुमा-फिरा कर बात करके अपना समय नष्ट करने में तुम्हें क्या मिलेगा ? और वह भी तब जब तुम जानते हो कि तुम्हारे प्रति मेरे हृदय में क्या भावनाएँ हैं। मुझे तो इसका ही दुख है कि तुम इसमें भी संदेह करते हो कि जितना मुझसे बन सकेगा उतना मैं तुम्हारे लिये करूँगा। तुम मेरी सारी दौलत लो तो भी मुझे गम न हो। साफ़-साफ़ बता दो कि तुम मेरी क्या मदद चाहते हो ? मैं तैयार हूँ, जो कर सकता हूँ अवश्य करूँगा। बोलो !

बैंसनियो : बेलमोन्ट में एक स्त्री है जो अपने पिता की मृत्यु के उपरांत

एक धनी उत्तराधिकारिणी बनी है । बड़ी अनुपमेय सुंदरी है और वैसे ही उसमें अतुलनीय गुण भी हैं । कभी-कभी पहले जब मैं उससे मिलता था, उसकी आँखें मुझे कहती थीं मानो उसके हृदय में मेरे लिये कुछ स्थान था । उसका नाम है पोशिया और किसी भी तरह केटो की पुत्री पोशिया से कम नहीं, जिसका कि ब्रूटस से विवाह हुआ था । यह भी नहीं कि संसार में उसके गुणों से लोग अपरिचित ही हों, क्योंकि चारों दिशाओं से उसके विवाहेच्छुक प्रेमी आ रहे हैं । उसकी सुनहली लट्टें उसके कानों के पास झूला करती हैं । बेलमोन्ट में उसका निवास-स्थान दूसरा कोलचोस^१ समुद्र-तीर हो गया है जहाँ आधुनिक जेसन^२ इकट्ठे हुआ करते हैं उसके लिये । प्रिय ऐन्टोनियो ! काश मैं भी उनमें से किसी से स्पर्धा करने के योग्य हो जाता ! न जाने क्यों मुझे विश्वास-सा होता है कि मैं अवश्य सफल होऊँगा, निस्संदेह मुझे सफलता मिलेगी ।

ऐन्टोनियो : तुम तो जानते ही हो कि इस समय मेरा सारा धन जहाजों में गया हुआ है । अब इस वक्त न मेरे पास धन है, न कोई माला ही कि इतना धन इकट्ठा कर सकूँ । लिहाजा, चलो, वेनिस में मेरे नाम की साख जो उठा सके उसीको काम में लाया जाये । जितना भी वह कर सके, मुझे स्वीकृत है, ताकि तुम सुंदरी पोशिया के पास बेलमोन्ट पहुँच सको । शीघ्र जाकर तलाश करो और मैं भी जाता हूँ कि धन है किसके पास ! और उसे चुका देने का निश्चय रखो; मैं धन एकत्र कर लूँगा चाहे लोगों से अपने व्यक्तिगत सम्बन्धों के बल पर या उधार पर ही सही ।

[प्रस्थान]

१. क्लासिक नाम । २. जेसन—प्रेमी ।

दृश्य २

[बेल्मोन्ट : पोशिया के भवन में एक कमरा]

पोशिया : मैं तो इस संसार से तंग आ गई हूँ, नैरिसा !

नैरिसा : क्यों श्रीमती! यदि आप दरिद्र होतीं, अभागिनी होतीं, या जैसा भाग्य और संपत्ति आपके पास हैं वैसे की अधिकारिणी न होतीं तब तो आपका तंग आना किसी सीमा तक उचित भी लगता। लेकिन जहाँ तक मेरा अनुभव है, मैं यही कह सकती हूँ कि अपार धनराशि में डूबे लोग भी उतने ही जीवन के प्रति ऊबे होते हैं जितने वे, जिनके पास कुछ भी नहीं होता, न भुखमरी, न अटूट धन। मुझे तो लगता है, इन दोनों के बीच की स्थिति ही ठीक रहती है। जिनके पास बहुत धन होता है वे बहुत-से व्यसनों में पड़ जाते हैं और समय से पूर्व ही बूढ़े हो जाते हैं, लेकिन जिनके पास इतना भर होता है कि बस रोज़ की जरूरतें पूरी होती रहें, वे न सिर्फ़ ज्यादा दिन जीते हैं, मगर सुखी भी रहते हैं।

पोशिया : कितनी अच्छी बात कहती है तू। और कितने प्यारे ढंग से।

नैरिसा : और जो इन्हें व्यवहार में ले आया जाये तो कितनी सुंदर बन जायेंगी यही !

पोशिया : अगर करना भी उतना ही आसान होता जितना किसी अच्छी बात को जान लेना, तो गरीबों की कुटियों में महल होते और हर उपासना-स्थान गिरजा बन जाता। अपने ही उपदेशों को व्यवहार में लाने वाला वास्तविक रूप से धार्मिक होता है। मैं बीसियों को बता सकती हूँ कि अच्छा क्या है, लेकिन उस पर अमल करते समय उन बीस में से एक स्वयं नहीं हो सकती। विवेक नियम बना सकता है कि जीवन के आवेश और वासनाएँ

नियंत्रण में रह सकें किंतु यौवन की उत्तेजनाएं संयम में रखने के लिये दबा देने के लिये बहुत उग्र होती हैं। पगली जवानी उस पागल खरगोश की तरह होती है जो कि सदुपदेश के निर्बल जाल से शीघ्र भाग निकलता है। लेकिन इस तर्क से मुझे अपना पति चुनने में क्या लाभ मिलता है ? चुनना ! हाय कंसा शब्द है ! न मैं पसंद का व्यक्ति चुन सकती हूँ, न नापसंद व्यक्ति से इंकार ही कर सकती हूँ। ऐसी ही तो है एक मृत पिता की वसीयत जो एक जीवित लड़की को सब तरफ से जकड़े हुए है ! क्या यह मेरे लिये कठोर बात नहीं है नैरिसा ! कि जिसे चाहती हूँ उसे पा नहीं सकती और जिसे नहीं चाहती, उससे इंकार नहीं कर सकती ?

नैरिसा : तुम्हारे पिता पवित्रात्मा थे और पवित्र व्यक्ति मरते समय सदैव ऐसे ही प्रेरणादायक कार्य करते हैं। इसलिये जो इन तीन— सोने, चाँदी और राँग के डिब्बों की लॉटरी उन्होंने रखी है, कि जो भी ठीक डिब्बा चुन लेगा, तुम्हें पायेगा; निस्संदेह, वही ठीक चुनाव कर सकेगा जो तुम्हें सच्चा प्यार करता है। सच बताओ, तुम्हारे मन में इन विवाहेच्छुक कुलीन राजकुमारों के प्रति क्या है, जो आ गये हैं !

पोर्शिया : एक-एक नाम दुहराती चल और मैं कहती चलूंगी, बस उसी से मेरे मन की बात का अनुमान लगा लेना।

नैरिसा : सबसे पहले तो नेपल्स के राजकुमार हैं।

पोर्शिया : वह तो घोड़ा है, जो अपने घोड़े के सिवाय और किसी विषय पर बात ही नहीं करता। और इसमें तो अपनी खास काबलियत समझता है कि वह खुद ही घोड़े की नाल भी ठोक लेता है।

नैरिसा : और वह है, वह पैलैटाइन का काउन्ट !

पोर्शिया : वह बस गुराया करता है, जैसे पूछ रहा हो—मुझे नहीं चुनेगी तो जा मर ! वह तो इतना मनहूस और उदास रहता है कि उसके चेहरे पर बड़े से बड़े मज़ाक की बात मजाल है एक हल्की मुस्कान भी झलका दे ! और जब जवानी में वह इतना उदास और गंभीर है तो भगवान जाने बुढ़ापे में तो वह हेराक्लिटस—वह था न, 'रोने वाला दार्शनिक', वैसा ही निराशावादी हो जायेगा । मैं तो बेहतर है खुशी से एक ऐसे हड्डी के ढाँचे से शादी कर लूंगी, जिसके मुँह पर होंठ ही न हो, बनिस्बत इसके कि इन दोनों में से किसी से शादी करूँ । भगवान बचाये मुझे इन दोनों भलेमानुसों से ।

नैरिसा : और फ्रेंच लॉर्ड मुसिये ले बॉन के विषय में तुम्हारी क्या राय है ?

पोर्शिया : उसे भी ईश्वर ने बनाया है, तो उसे भी मनुष्य ही समझना चाहिये । सचमुच ईश्वर की सृष्टि का उपहास करना तो एक पाप है, किंतु यह फ्रेंच लॉर्ड तो अपने घोड़े के बारे में नेपल्स के राजकुमार से कहीं अधिक बातें करता है और त्यौरी चढ़ाये रखने में तो पैलैटाइन का काउन्ट उसके सामने कुछ है ही नहीं । वह तो सर्वगुणसंपन्न होने का ऐसा दावा करता है, जब कि उसे तो आदमी कहने में भी संकोच होता है । एक चिड़िया ज़रा चहकी कि वह तो नाचने लगता है । उससे अगर मैंने शादी कर ली तो समझो मैंने बीस मर्दों से ब्याह किया, क्योंकि वह तो अपने को बीस मर्दों के बराबर समझता है । मैं तो ज्यादा खुश इस बात से होऊँ कि वह मुझसे घृणा करे, क्योंकि जो कहीं वह पूरे आवेश से प्रेम करने लगा, तो उसके प्रेम का प्रत्युत्तर मैं दूंगी कैसे, क्योंकि आखिर क्या मैं बीस आदमियों से

एक साथ प्रेम कर सकूंगी ?

नैरिसा : और तुम्हारा उस तरुण अंगरेज बैरन फॉल्कन ब्रिज के बारे में क्या विचार है ?

पोशिया : मैं तो उसके बारे में कुछ भी नहीं कह सकती, क्योंकि हम एक दूसरे की भाषा ही नहीं समझते। न वह लैटिन जानता है, न फ्रेंच, न इटैलियन और इस बात को तुम हज़ारों के सामने दावे के साथ कह सकती हो कि मैं अंगरेजी नहीं के बराबर जानती हूँ। है वह बड़ा सुंदर, लेकिन मैं कैसे स्वीकार कर लूँ उसे ? हम एक दूसरे को अपने भाव ही नहीं बता सकेंगे। कितनी भी सुंदर तस्वीर क्यों न हो, लेकिन उससे कोई बोलता तो नहीं ? और उसकी पोशाक कितनी विचित्र है। उसका कोट तो इटैलियन फ़ैशन का, ब्रीचेस फ्रेंच कट है और उसका टोप है जर्मन ढंग का और रहे उसके आचार-व्यवहार तो सारी दुनिया का घोल उतर आया है उसमें।

नैरिसा : और वह जो स्कॉट लॉर्ड हैन, जो अंगरेज बैरन का पड़ोसी है, उसके बारे में क्या राय है तुम्हारी ?

पोशिया : उसमें एक पड़ोसी की दयानतदारी है, क्योंकि उसने अपनी कनपटी पर अंगरेज के हाथ का घूँसा उधार लिया और उसने कसम खाई कि जब कभी वह समर्थ होगा अवश्य उसका कर्जा चुका देगा। मेरा खयाल ऐसा है कि वह फ्रेंच उसकी ज़मानत में खड़ा रहा जिसने कहा कि अगर वह कर्जा चुकायेगा तो उसकी मदद अवश्य की जायेगी।

नैरिसा : सैक्सनी के ड्यूक के भतीजे उस तरुण जर्मन के विषय में तुम क्या सोचती हो ?

पोशिया : सुबह तो वह बुरा लगता है जब नशे में नहीं होता, और

दुपहर बाद जब पिये रहता है तब तो बहुत ही बुरा लगता है। जब वह अच्छी से अच्छी हालत में रहता है तब वह किसी भी इंसान से नीचा और जब वह बुरी से बुरी हालत में रहता है तब किसी भी पशु से तनिक ऊँचा होता है। यदि बुरे से बुरा भी हो जाये, मैं तो उसे कभी नहीं चुनूंगी। उसके बिना ही मैं अच्छी हूँ।

नैरिसा : अच्छा मान लो, वह तुम्हारा विवाहेच्छुक है और किस्मत का जोर कि उसने ठीक डिब्बा चुन लिया तब अगर तुमने उससे शादी करने से इंकार कर दिया तो क्या तुम अपने पिता की वसीयत मानने से इंकार नहीं करती हो ?

पोर्शिया : इसीलिये तो डर से मरी जाती हूँ। एक काम करो न ! गलत डिब्बे पर तेज़ फ़ेञ्च शराब रख दो ताकि मैं इस विपत्ति से बच जाऊँ। मुझे यकीन है कि वह शराब के लालच में गलत डिब्बा ही चुन लेगा चाहे उसमें भीतर शैतान ही क्यों न हो। मैं कुछ भी कर सकती हूँ नैरिसा, पर उस जबर्दस्त पियक्कड़ से शादी नहीं करूँगी।

नैरिसा : श्रीमती ! तुम्हें डरने का कोई कारण नहीं है कि इनमें से एक को चुनना पड़ेगा। उन्होंने मुझसे साफ़ कह दिया है कि वे अपने-अपने घरों को लौट रहे हैं और अब वे आपको इस चुनाव के पचड़े से परेशान नहीं करेंगे, तब तक जब तक कि वे आपके पिता की वसीयत में लिखे इस डिब्बे चुनने के तरीके के अलावा और कोई रास्ता नहीं खोज लेते जिससे वे आपको हासिल कर सकें।

पोर्शिया : पिता की वसीयत के अलावा मैं और कौन-सी तरकीब से शादी कर सकती हूँ। मैं तो डायना की भाँति क्वारी बनी रहने

को विवश हूँ, चाहे सिबिला की भाँति मैं दीर्घायु ही क्यों न होऊँ। मैं यह देखकर बहुत खुश हूँ कि प्रेमियों का यह दल अक्लमंद है और कायदे से लौटा जा रहा है। उनमें से कोई भी नहीं है जिसका जाना मुझे नापसंद हो। मैं ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि उनकी यात्राएँ सफल हों।

नैरिसा : श्रीमती ! क्या तुम्हें उस सुंदर वेनिसवासी की याद है जो तुम्हारे पिता के समय में मॉन्फ़ेरात के मार्क्विस् के साथ आता था, योद्धा था और साथ ही विद्वान भी !

पोशिया : हाँ, हाँ। वह तो मेरे खयाल से बैसैनियो था। यही था न उसका नाम ?

नैरिसा : हाँ श्रीमती ! मैं मूरख जितना समझती-देखती हूँ, सारे आदमियों में जो आपने देखे हैं, वही आपके योग्य था।

पोशिया : मुझे उसकी खूब याद है और वह था भी ऐसा ही जैसी कि तू तारीफ़ करती है।

[सेवक का प्रवेश]

क्यों ? क्या बात है ?

सेवक : चार अजनबी आपसे मिलना चाहते हैं श्रीमती। वे बिदा ले रहे हैं और जाने से पहले आपसे मिल जाना चाहते हैं। एक और व्यक्ति आया है, जिसने ख़बर दी है कि उसके स्वामी मोरक्को के राजकुमार आज रात यहाँ आयेंगे।

पोशिया : मुझे तो उसके आने की तब प्रसन्नता होगी जो मैं उसका वैसा ही स्वागत कर पाती जैसे उत्साह से मैं इन चार को बिदा दे रही हूँ। अगर उसका रंग शैतान का है और आत्मा एक संत की-सी है, तो वह मेरा पति न होकर पुरोहित हो जाये वही अच्छा होगा। चलो, नैरिसा ! (सेवक से) तू आगे चल।

एक प्रेमी के लिये द्वार बंद करते हैं हम, दूसरा तभी दरवाजे पर दस्तक देने लगता है ।

[प्रस्थान]

दृश्य ३

[वेनिस : एक सार्वजनिक स्थान]

[बैसैनियो और शाइलॉक का प्रवेश]

शाइलॉक : तीन हजार ड्यूकैट ! तीन हजार सिक्के ? अच्छा ।

बैसैनियो : हाँ श्रीमान् ! केवल तीन मास के लिये ।

शाइलॉक : हूँ ? तीन महीने के लिये ? अच्छा ।

बैसैनियो : और मैं आपसे कह चुका हूँ, एन्टोनियो मेरी ज़मानत देगा ।

शाइलॉक : एन्टोनियो ज़मानत देगा ? अच्छा !

बैसैनियो : बताइये आप मेरी मदद करेंगे ? क्या आप मुझ पर यह उपकार करेंगे ? बताइये न ?

शाइलॉक : तीन हजार सिक्के ! तीन महीनों के लिये और एन्टोनियो की ज़मानत पर !

बैसैनियो : आपका क्या उत्तर है ?

शाइलॉक : एन्टोनियो आदमी तो अच्छा है ।

बैसैनियो : क्या आपने उसके यश के विरुद्ध भी सुना है जो उसे कलंकित कर सके ?

शाइलॉक : अरे नहीं-नहीं, ऐसा नहीं है । मैं जब उसे अच्छा आदमी कहता हूँ तो तुम्हें सिर्फ़ यही समझना चाहिये मैं उसे पूरी तरह से इस काबिल मानता हूँ । लेकिन फिर भी उसकी संपत्ति स्थिर नहीं है । उसका धनी होना अभी तो एक अनुमान की बात है ।

उसका एक जहाज़ त्रिपोली जा रहा है, दूसरा इन्डीज़ की ओर चल रहा है, और मुझे सट्टे की दूकान से पता चला है कि उसका तीसरा जहाज़ मैक्सिको जायेगा, चौथा इंग्लैंड को। इसी तरह उसके सारे जहाज़ दुनिया में अलग-अलग समुद्रों में जा रहे हैं। लेकिन जहाज़ तो काठ के बने होते हैं, और उन पर समुद्र में हर तरह का खतरा आ सकता है। और जहाज़ी सिर्फ़ इंसान ही तो होते हैं जो समुद्र के भीषण तूफानों में मर सकते हैं। और फिर समुद्र में तो डाकुओं से भी बड़ा डर रहता है, कि जैसे धरती पर वे लूटते हैं। अलावा इसके जहाज़ों को तो समुद्र पर अनेक आपत्तियों का सामना करना पड़ता है, तूफान हैं, लहरें हैं, चट्टानें हैं। लेकिन जैसा कि मैंने कहा, बावजूद इन सबके एन्टोनियो ज़ामिन बनने के पूरी तरह से योग्य है। तीन हज़ार ड्यूकैट चाहते हो तुम ! ठीक है। मैं मान लूंगा अगर वह ज़िम्मेदारी उठा लेगा।

बैसैनियो : उस तरफ़ से आप बेफ़िक्र रहिये।

शाइलॉक : तुम कहते हो तो मैं निश्चित हो जाऊंगा। लेकिन मेरी दिलजमई होनी चाहिये और यही उचित होगा कि मैं एन्टोनियो से इस बारे में बातचीत कर लूँ सीधी।

बैसैनियो : बिल्कुल ठीक है। आप आज हमारे साथ ही भोजन करिये न ?

शाइलॉक : ज़रूर ! ताकि मैं सूहर के माँस * को सूँघ सकूँ, जिसमें तुम्हारे पैगम्बर ईसामसीह ने शैतान की रूह को घुसाया है। मैं तुम्हारे साथ खरीद सकता हूँ, बेच सकता हूँ, चल सकता हूँ, बात कर सकता हूँ, और सब कुछ कर सकता हूँ, लेकिन तुम्हारे

*यहूदी भी मुसलमानों की भाँति सूहर के माँस को वर्जित समझते हैं। असल में सेमेटिक जातियों में सूहर टैबू ही मिलता है।

साथ खा नहीं सकता, पी नहीं सकता, न तुम्हारे साथ प्रार्थना कर सकता हूँ। स्ट्रे की दूकान से क्या कोई ख़बर मिली है कभी ? वह कौन आ रहा है ?

[ऐन्टोनियो का प्रवेश]

बैसैनियो : ये तो श्रीमन्त ऐन्टोनियो हैं।

शाइलॉक : (स्वगत) कितना भोला-भाला सीधा-सादा लगता है ? लेकिन मैं इससे घृणा करता हूँ, क्योंकि यह ईसाई है। लेकिन मुझे इससे भी ज़्यादा इससे घृणा इसलिये है कि यह अपनी नम्रतारूपी मूर्खता के कारण बिना ब्याज के ही रुपया उधार देता है, और वेनिस में हमारे ब्याज की दर को यों ही गिरा देता है। एक बार अगर यह मेरी पकड़ में आ गये तो मैं इससे अपने पुराने बैर का सारा बदला निकाल लूँ, जो न जाने कब से मेरे दिल में पल रहा है ! यह हमारे पवित्र धर्म (यहूदी धर्म) से घृणा करता है, हमारी पवित्र जाति से घृणा करता है। * और मुझे तो जब भी कहीं सारे व्यापारी इकट्ठे होते हैं, सबके सामने ही डाँट देता है। यह मेरे व्यापार की निंदा करता है और ईमानदारी से अर्पित मेरी कमाई, मेरे मुनाफ़ों को ब्याज की और पाप की कमाई कहा करता है। अगर मैं इसे क्षमा कर दूँ तो ईश्वर का प्रकोप मेरी जाति पर उतरे !

बैसैनियो : आप इतने चुप क्यों हैं शाइलॉक ?

शाइलॉक : मैं अपने पास इस वक्त मौजूद धन का मन ही मन हिसाब लगा रहा था। जहाँ तक मैं समझता हूँ इस वक्त मैं ऐसी हालत में नहीं हूँ कि तुम्हें एकदम तीन हज़ार सिक्के दे सकूँ। लेकिन

* यहूदी अपनी जाति को ईश्वर की चुनी हुई जाति मानते हैं, और अपने को संसार में सर्वश्रेष्ठ मानते हैं।

इससे क्या फ़र्क पड़ता है ! मेरा धनी यहूदी मित्र ट्यूबॉल मौजूद है । उससे मैं सारी कमी को पूरा कर सकता हूँ, लेकिन ज़रा ठहरो ! तुम्हें कितने महीनों के लिये रुपये चाहियें ? (एन्टोनियो से) कहिये श्रीमान् ! अच्छे तो हैं ! अभी-अभी हम लोग आप ही के बारे में बातें कर रहे हैं ।

एन्टोनियो : शाइलॉक ! हालाँकि मेरा यह सिद्धांत रहा है कि मैं न रुपया उधार लेता हूँ, न ब्याज पर देता हूँ, लेकिन अपने दोस्त की गहरी ज़रूरत को पूरा करने के लिये, मैं एक अपना नियम तोड़ता हूँ । (बेंसेनियो से) क्या तुमने इनसे कह दिया है ? कितने की ज़रूरत है तुम्हें ?

शाइलॉक : हाँ-हाँ, तीन हजार ड्यूकेंट !

एन्टोनियो : और सिर्फ़ तीन महीनों के लिये ।

शाइलॉक : हाँ तीन महीने ! मैं भूल गया । तुमने कहा तो था । ठीक है । तुम ज़मानत दो । मैं कोशिश करता हूँ, लेकिन सुनो । लेकिन तुमने कहा कि तुम न ब्याज पर उधार लेते हो, न देते हो !

एन्टोनियो : हाँ, मैं ऐसा ही करता हूँ ।

शाइलॉक : हमारे आदि पुरुष अब्राहम का वंशज जेकब अपने चाचा लेबान की भेड़ें चराया करता था और यद्यपि अब्राहम के उत्तराधिकार का स्वत्व क्रम से पहले उसके पुत्र इसाक और तब इसाक के ज्येष्ठ पुत्र इसाऊ को मिलना चाहिये था, वह उसके छोटे पुत्र जेकब को मिला क्योंकि उसकी माता ने ऐसी चतुराई की कि इसाऊ का स्थान जेकब ने ले लिया.....

एन्टोनियो : जेकब की बात क्यों करते हो ? क्या वे भी सूद लिया करते थे ?

शाइलॉक : नहीं, वे सूद नहीं लेते थे, ऐसा सूद नहीं लेते थे जिसे

आजकल सूद कहा जाता है। लेकिन देखो न, जेकब ने क्या किया ! उसने अपने चाचा लेबान से यह तय किया कि वह जो लेबान की भेड़ों को चराता है, उनकी देखभाल करता है, उसकी मेहनत के बदले में वह लेबान की भेड़ों के उन सब बच्चों को ले लेगा जिन पर धब्बे होंगे, धारियाँ होंगी। जेकब की चतुरता से अधिकतर बच्चे धारियों और धब्बों वाले पैदा हुए। इस तरीके से उसे अपने हिस्से से कहीं ज्यादा भेड़ें मिल गईं और आगे चलकर वह बहुत समृद्ध हुआ और उसे परमात्मा ने आशीर्वाद भी दिया। इसे तो परमात्मा का आशीर्वाद ही समझना चाहिये यदि दूसरों का माल चुराये बिना ही आदमी ईमानदारी से मुनाफ़ा कमा सके।

एन्टोनियो : जेकब के मामले में तो कुछ किस्मत का जोर ही समझना चाहिये। वैसे जेकब का धारीदार, धब्बेदार बच्चे होने में न कोई जोर था, न उसका इसमें कुछ हाथ ही हो सकता था। कुछ भगवान की ऐसी मर्जी थी और ऐसा हो गया। लेकिन धर्मग्रंथ का हवाला इसलिये दिया है, ब्याज लेने को अच्छा साबित कर सको ? या तुम्हारा सोना-चाँदी भी भेड़-बकरियों की तरह है ?

शाइलॉक : क्या बताऊँ। मैं तो कोशिश यही करता हूँ कि यह भी दिन दूना रात चौगुना बढ़ता जाये। लेकिन मेरी बात सुनो।

एन्टोनियो : देखो बैसैनियो ! देखते हो न कि अपने लाभ के लिये शैतान भी धर्मग्रंथों में से उद्धरण देता है ? एक कुटिल व्यक्ति यदि पवित्र बाइबिल में से साक्ष्य उपस्थित करे तो वह उस नीच की भाँति है जो हँसता रहता है और भीतर ही भीतर भयानक होता है। ऊपर से साफ़, चिकना, सुन्दर सेव और

भीतर से सड़ा-गला । हाय-हाय ! बुराई भी ऊपर से कितनी खूबसूरत बनकर आती है !

शाइलॉक : तीन हजार ड्यूकैट ! यह तो बहुत बड़ी रकम है । बारह में से तीन महीनों के लिये ? ठहरो, मुझे सूद की दर जोड़ने दो !

एन्टोनियो : शाइलॉक ! क्या तुम यह रकम दोगे ?

शाइलॉक : श्रीमन्त एन्टोनियो ! तुमने बहुत बार सट्टे की दुकान में मेरा अपमान किया है कि मैं सूद लेता हूँ, बेईमानी करता हूँ । लेकिन मैंने धैर्य से सारे अपमानों को सहन किया है क्योंकि सहनशक्ति ही हमारी यहूदी जाति की एक विशेषता है । तुम मुझे ईसाई धर्म नहीं मानने के कारण यहूदी जानकर विधर्मी कह चुके हो, तुमने मुझे कटखना कुत्ता कहा है, तुमने मेरे यहूदी धर्म की परम्परा को प्रदर्शित करनेवाले चोगे पर थूका है । और क्यों ? सिर्फ़ इसलिये कि मैंने अपना धन कमाया है । और अब तुम्हें मेरी मदद की जरूरत आ पड़ी है । तो लो ! देखो ! आज तुम आये हो । आकर कहते हो—शाइलॉक ! हमें धन चाहिये । तुमने तो मेरे मुँह पर थूका था ! तुम्हारी नज़र में तो मैं सड़क के दोगले कुत्ते से भी गया-बीता था न, जिसमें लात लगाने को तुम्हारा पाँव मचला करता था ? आज तुम धन की प्रार्थना कर रहे हो ? क्या जवाब दूँ मैं तुम्हें ? बोलो कह दूँ—कि क्या कुत्ते के पास धन होता है ? क्या कभी यह हो सकता है कि एक कुत्ता ३००० ड्यूकैट उधार दे सके ? या कहो, नीचे झुक जाऊँ और गुलाम की तरह घिघियाता, कांपता, दीन मन, हाँफता हुआ कहूँ—श्रीमान् ! आपने पहले बुधवार को मुझ पर थूका था, आपने उस रोज़ मुझे दोगला कुत्ता जानकर मुझमें लात दी थी, और एक और दिन आपने

मुझे कुत्ता कहा था । आपकी इन्हीं तीन मेहरबानियों के बदले में मैं आपको ३००० सिक्के उधार देना चाहता हूँ !

ऐन्टोनियो : मैं तो ऐसे ही फिर भी कहूँगा, फिर भी तुम पर थूकूँगा, और लात भी लगाऊँगा । अगर तुम उधार देते हो तो, अपना दोस्त समझकर क्यों देते हो ? क्योंकि दोस्ताने में बेजान सिक्के कब ब्याज के रास्ते से सिक्कों को पैदा करते हैं ? यों समझो कि अपने दुश्मन को उधार दे रहे हो ! बिना किसी शर्म के तुम मुझे सजा दिला लेना अगर तुम्हारा धन ठीक समय पर नहीं लौटा !

शाइलॉक : लेकिन तुम बेवजह इतना ताव क्यों दिखा रहे हो ? मैं तो तुम्हारा दोस्त बनना चाहता हूँ और जो मेरा अपमान तुमने किया है, उस सबको भूल जाना चाहता हूँ । मैं तुम्हारे माँगे हुए धन को दूँगा, और कोई ब्याज भी नहीं लूँगा । लेकिन तुम मेरी बात ही नहीं सुनते ! मेरी यह बात बिल्कुल दया-भरी है । है न ?

बेसैनियो : अगर तुम सत्य कहते हो तो इसे निश्चय ही दया कहा जा सकता है !

शाइलॉक : मेरी यह दया तो निश्चित समझो । तुम एक वकील के पास चलो और एक कागज़ लिख कर उस पर दस्तख़त कर दो । लेकिन महज़ मज़ाक की खातिर उसमें एक बात जोड़ देना कि अगर तुम निश्चित दिन पर रुपया न दे सके, निश्चित स्थान पर तुमने धन न चुकाया, तो मुझे यह अधिकार हो जायेगा कि तुम्हारे शरीर में से कहीं से भी मुझे आधा सेर गोश्त काट कर निकाल लेने का अधिकार होगा !

ऐन्टोनियो : मैं तैयार हूँ इस शर्तनामे पर दस्तख़त करने को और

मैं खुले आम कह सकता हूँ कि आखिर तुमने कमाल की रहमदिली दिखाई है।

बेसैनियो : ऐसे खतरनाक शर्तनामे पर मैं तुम्हें कभी दस्तखत नहीं करने दूँगा। इससे तो अच्छा है कि मेरे काम ही बिगड़ जायें। मेरी ज़रूरत ही पूरी न हो।

एन्टोनियो : अरे डरते क्यों हो ? मैं दण्ड नहीं भूँगा। जो कर्ज मैं ले रहा हूँ उससे कई गुना धन मेरे जहाज दो महीनों में ही ले आयेंगे। म्याद से एक महीने पहले ही देख लेना।

शाइलॉक : हे पवित्र आदि पूर्वज अब्राहम ! यह ईसाई भी विचित्र होते हैं ! यह दूसरों के प्रति इतने कठोर और निर्दय होते हैं कि दूसरों को भी अपना जैसा ही समझते हैं। अच्छा ज़रा बताओ तो सही ! अगर इसने ठीक समय पर धन नहीं लौटाया तो मैं उस गोश्त को लेकर करूँगा क्या ? इंसान के जिस्म से आधा सेर गोश्त न तो कोई कीमत ही रखता है, न फायदेमन्द ही है। वह कोई भेड़, गाय या बकरी के गोश्त की तरह अपनी कीमत तो रखता नहीं। मैं तो इनकी स्नेहभरी मित्रता को जीतने के लिये ऐसा करता हूँ। मेरा हाथ बढ़ा हुआ है। थामना है थाम लो, नहीं तो जाने दो। कृपया, मेरा अनिष्ट नहीं करो कि मुझ पर, मेरी हितचिन्ता पर संदेह करो।

एन्टोनियो : हाँ शाइलॉक ! मैं इस शर्तनामे पर ज़रूर दस्तखत कर दूँगा।

शाइलॉक : तो फिर मुझसे वकील के घर मिलो। इस मज़ाकिया शर्तनामे को उसे बताना और मैं धन-वन लेकर सीधा वहीं पहुँचता हूँ। देख तो लूँ कि मेरा घर सही-सलामत भी है या नहीं, क्योंकि वहाँ एक बेकार का बदमाश है, जिसका ज़रा

भी यकीन नहीं किया जा सकता । बस ! मैं तुरंत पहुँचता हूँ ।
 ऐन्टोनियो : ओ दयालु यहूदी ! जल्दी करना ।

[शाइलॉक का प्रस्थान]

यह यहूदी तो ईसाई हो जायगा, देखो न ? इसमें कितनी दया
 आ गई है ?

बैसैनियो : जब मैं किसी कुटिल व्यक्ति से मीठे वचन सुनता हूँ तो
 मुझे बहुत संदेह होने लगता है ।

ऐन्टोनियो : चलो, वकील के यहाँ चलें । इस मामले में डरने की
 कोई गुंजायश नहीं है । म्याद से एक महीने पहले ही भरे जहाज़
 लौट आयेंगे ।

[प्रस्थान]

दूसरा अंक

दृश्य १

[बेलमोन्ट : पोशिया के मकान का कमरा]

[तुरही-निनाद । मोरक्को के राजकुमार का प्रवेश । उसके पीछे सेवक हैं ।
पोशिया तथा नैरिसा और उसके अन्य सेवकों का प्रवेश]

मोरक्को का राजकुमार : (पोशिया से) मुझे मेरे रंग के कारण नापसंद न करो । यह तो प्रचण्ड सूर्य का प्रसाद है, क्योंकि मैं ऐसे प्रदेश में रहता हूँ जहाँ सूर्य की प्रखर किरणें पड़ती हैं । तुम मेरे सामने एक गोरे रंग के आदमी को लाओ जो ऐसे उत्तर में जन्मा है, जहाँ सूर्य में इतना भी ताप नहीं कि वह हिमकणों को पिघला सके और फिर अपने प्रेम की परीक्षा के लिये हमारा युद्ध कराओ, कि देखें किसका लोह अधिक लाल है, तो श्रीमती ! देखना कि मेरे नाम से बड़-बड़े शूर-वीर थर्रा जाते हैं । तुम्हारे प्रति मेरे प्रेम की शपथ ! मेरे देश की अत्यंत प्रशंसित सुंदरियों ने भी मुझे सदैव प्रेम किया है । यदि तुम्हारे प्रेम को जीतने का प्रश्न न हो तो मैं तो कभी अपने इस रंग को बदलने की इच्छा भी नहीं करूँगा । मेरी रानी !

पोशिया : पति चुनने के विषय में मैं अन्य सुंदरियों की भाँति केवल बाहरी रूप की ओर आकर्षित नहीं होती और फिर मेरे स्वयं पति चुनने की आज़ादी को तो इन डिब्बों की लाँटरी ने और छीन रखा है । यदि मेरे पिता ने मुझे अपनी बुद्धि से न बाँध रखा होता, मेरे चारों ओर ऐसा घेरा न डाल दिया होता; कि जो बात मैंने आपको बताई, मुझे उसी की पत्नी बनना पड़ेगा

जो मुझे उसी तरीके से हासिल करेगा; तो हे विख्यात राजकुमार ! मैं सच कहती हूँ आप विश्वास करें, मुझे प्राप्त करने में आप किसी से भी पीछे नहीं रहते। मेरा प्रेम कोई भेद नहीं मानता।

मोरक्को० : इसके लिये मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। इसीलिये मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे उन डिब्बों के पास ले चलें। देखें मेरा भाग्य क्या कहता है। मैं इस तलवार की कसम खाता हूँ, जिसने फ़ारस के बादशाह को मार डाला था, जिसने एक ऐसे फ़ारस के शाहज़ादे को मारा था जो तीन बार सुल्तान सुलेमान को हरा चुका था। मैं इस तलवार की सौगंध खाकर कहता हूँ कि मैं इस वीरकर्म को तुम्हारा प्रेम जीतने के लिये कर सकता हूँ। संसार में सबसे क्रूर दृष्टि रखने वाले को अपनी आँखों से झुका सकता हूँ और अत्यंत दुस्साहसी को भी अपने साहस से हरा सकता हूँ। मैं रीछनी के दूधपीते बच्चों को उससे छीन सकता हूँ और शिकार के भूखे दहाड़ते शेर को भी चुनौती दे सकता हूँ। क्यों ? केवल तुम्हारे लिये। किंतु दुर्भाग्य है कि ऐसा यहाँ कोई अवसर नहीं। यदि पुरानी यूनानी कहानियों में वर्णित संसार के सबसे सशक्त और सबल पुरुष हरक्यूलिस और उसके सेवक लिचास में एक दिन चौपड़ का खेल होता और पाँसों के खेल से ही यह भी निर्णय होने को होता कि जो जीतेगा वही सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति माना जायेगा, तो क्या मालूम कि पाँसों का पलटा किस्मत का पलटा बनकर लिचास को ही सर्वश्रेष्ठ बना देता। जिस प्रकार महान हरक्यूलिस अपने सेवक से हार जाता, उसी प्रकार मैं भी अंधे भाग्य के हाथों हार सकता हूँ। कौन जाने कोई अयोग्य व्यक्ति ही अपनी योग्यता से अधिक वस्तुपाने में यहाँ समर्थ हो जाये कि मैं आर्त्त वेदना से व्याकुल हो उठूँ ?

पोर्शिया : आप अपनी किस्मत आजमाइये । या फिर इस चक्कर में पड़िये ही मत या फिर चुनाव के पहले कसम खाइये कि यदि आप गलत चुनाव करेंगे तो फिर आप कभी किसी स्त्री से प्रेम नहीं करेंगे कि आप उससे शादी कर सकें । सोच लीजिये !

मोरक्को : हाँ, मैं किसी स्त्री से भी शादी नहीं करूँगा । आओ ! मुझे एक अवसर लेने दो ।

पोर्शिया : पहले गिरजे चलें जहाँ शपथ ली जायेगी और खाना खाने के बाद आप अपनी किस्मत आजमायेंगे ।

मोरक्को : हे सौभाग्य ! तेरे ही हाथ में है कि तू मुझे संसार का सबसे सुखी व्यक्ति बनाये या इस पृथ्वी का सबसे दुखी और गया-बीता व्यक्ति बना दे ।

[तुरही-निनाद और प्रस्थान]

दृश्य २

[बेनिस-पथ]

[लॉन्सलौट गोब्बो का प्रवेश]

लॉन्सलौट : मुझे पक्का यकीन है कि आखिरकार मेरी अंतरात्मा मुझे अपने स्वामी यहूदी शाइलॉक की नौकरी से दूर भगाकर ही मानेगी । दायें हाथ पर खड़ा हुआ शैतान मुझे ललचा कर कहता है : 'गोब्बो, लॉन्सलौट गोब्बो, अच्छे गोब्बो, अच्छे लॉन्सलौट गोब्बो, अपने पाँवों का इस्तेमाल करो, ज़रा चलो, दौड़ो और भाग जाओ, तराट जाओ ।' लेकिन मेरी अन्तरात्मा कहती है : 'नहीं, ध्यान करो । ईमानदार लॉन्सलौट ! ईमानदार गोब्बो, भागो मत । इस भाग जाने से घृणा करो ।' यह शैतान, इतना

वीर शैतान फिर कहता है : 'भाग ! भाग जा ! हिम्मत बाँध गोब्बो !' शैतान पुकारकर कहता है : 'ईश्वर के लिये भाग जा !' और मेरे हृदय को बाँधनेवाली मेरी अंतरात्मा कहती है, बड़ी अक्लमंदी से कहती है : 'मेरे ईमानदार लॉन्सलौट, मेरे दोस्त ! तू एक ईमानदार आदमी का बेटा है, न सही, तू एक ईमानदार औरत का बेटा है,' वह कहती है : 'लॉन्सलौट, टस से मस मत हो ।' भाग ! कहता है शैतान, ठहर ! कहती है अंतरात्मा । मैं कहता हूँ : 'अंतरात्मा तू ठीक कहती है।' मैं कहता हूँ : 'शैतान तू ठीक कहता है।' अन्तरात्मा का शासन मानूँ तो मुझे स्वामी के साथ रहना होगा, उस स्वामी के साथ, भगवान कसम ! निश्चय जानो, वह भी एक तरह का शैतान ही है और इस यहूदी के पास से भाग जाऊँ, तब तो मुझ पर शैतान का ही शासन हो गया समझो, जो, माफ़ करना, खुद ही शैतान है । निश्चय ही यह यहूदी, शैतान का ही अवतार है और मेरी अंतरात्मा कहती है कि मेरी अंतरात्मा तो बड़ी कठोर अंतरात्मा है जो मुझे इस यहूदी के पास रहने को कहती है । शैतान की सलाह ज्यादा दोस्ताना है । ओ शैतान ! मैं तो भागता हूँ । मैं तो तुम्हारी शरण हूँ । आज्ञा दो । मैं भागता हूँ ।

[वृद्ध गोब्बो का एक टोकरी के साथ प्रवेश]

गोब्बो : नौजवान ! मालिक शाइलॉक यहूदी का घर किधर है, मुझे महरबानी करके बता सकोगे ? मुझे जाना है वहाँ ।

लॉन्सलौट : (स्वगत) हे भगवान ! यह तो खास मेरा ही बाप है जो आधे से ज्यादा अंधा हो चुका है कि मुझे भी नहीं पहचान पाया ! मैं इसे गड़बड़ाने की चाल चलता हूँ ।

गोब्बो : हे नौजवान ! क्या आप मुझे शाइलॉक के मकान का पता बता सकेंगे ?

लॉन्सलौट : राह के अगले मोड़ पर अपने दायें हाथ की ओर मुड़ जाना और अगले वाले पर अपने बायें मुड़ जाना । तीसरे मोड़ पर मुड़ना नहीं किधर भी, बस सीधे घर में घुसे चले जाना, वही यहूदी का घर है ।

गोब्बो : परमात्मा के संतों की कसम ! तुम्हारी सलाह को मानकर चलने में तो उसका घर ढूँढना मेरे लिये एक बहुत कठिन काम है । तुम महरबानी करके मुझे एक लॉन्सलौट के बारे में कुछ बता सकोगे जो कि शाइलॉक की नौकरी में है ? क्या वह यहूदी के साथ रहता है या उसने उसकी नौकरी छोड़ दी है ?

लॉन्सलौट : क्या तुम तरुण कुँवर लॉन्सलौट के बारे में बातें कर रहे हो ? (स्वगत) और देखो, मैं कैसे इसकी आँखों में आँसू लाता हूँ । (प्रगट) क्या तुम तरुण कुँवर लॉन्सलौट के बारे में बातें कर रहे हो ?

गोब्बो : वह कुँवर नहीं कहला सकता श्रीमान् ! वह तो एक गरीब आदमी का बेटा है । वह बहुत गरीब है पर बड़ा ईमानदार है, और भगवान की कृपा से अब अच्छी तरह अपनी जिंदगी बिता रहा है ।

लॉन्सलौट : उसके बाप को चाहे जैसे रहने दो । हम तो तरुण कुँवर लॉन्सलौट की बातें कर रहे थे ।

गोब्बो : वह श्रीमन्त का मित्र होगा, किंतु खाली लॉन्सलौट है ।

लॉन्सलौट : लेकिन मेरी सुनो ! बुजुर्गवार ! इसीलिये मैं कहता हूँ तरुण कुँवर लॉन्सलौट !

गोब्बो : जी हाँ, अगर आप नाराज न हों तो लॉन्सलौट !

लॉन्सलौट : इसीलिये, कुँवर लॉन्सलौट ! लेकिन कुँवर लॉन्सलौट के बारे में बात करने से क्या फ़ायदा पिता ? क्योंकि वह नौजवान तो, यदि मैं पांडित्यपूर्ण भाषा का प्रयोग करूँ तो, भाग्य की क्लोथो, लैचीशिया और एट्रोपोस नामक देवियों के कारण स्वर्ग चला गया अर्थात् मर गया ।

गोब्बो : हे भगवान ! यह सच नहीं हो सकता । क्योंकि वही मेरी बुढ़ापे की लाठी थी, वही मेरा सहारा था ।

लॉन्सलौट : (स्वगत) क्या मैं लाठी जैसा लगता हूँ ? क्या मैं कोई डण्डा जैसा मालूम होता हूँ ? (प्रगट) पिता ! क्या तुम मुझे नहीं पहँचानते ?

गोब्बो : हाय रे दुर्दिन ! मैं आपको नहीं जानता । लेकिन मैं विनती करता हूँ कि आप मेरे पुत्र का पता बतायें ! भगवान उसकी आत्मा को शांति दे ! क्या वह जीवित नहीं है ?

लॉन्सलौट : पिता ! क्या आप मुझे नहीं पहँचानते ?

गोब्बो : हाय रे भगवान ! मेरी आँखें कितनी अंधी हो गई हैं । मैं तो तुम्हें नहीं पहँचान पाता !

लॉन्सलौट : अगर आँखें भी होतीं तो भी शायद आप मुझे नहीं पहँचानते । बुद्धिमान पिता हो अपने बच्चे को पहँचानता है । तो सुनिये बुजुर्गवार ! मैं आपको आपके बेटे की ख़बर देता हूँ । मुझे दुआ दीजिये (भुकता है) सचाई आखिर सामने आयेगी । कुछ दिन के लिये भले ही इंसान का बेटा छिपाया जा सके, लेकिन खून बहुत दिन तक छिपाया नहीं जा सकता । सचाई आखिर उजागर होगी ही ।

गोब्बो : कृपया खड़े होइये ! मुझे विश्वास है आप मेरे पुत्र लॉन्सलौट नहीं हो सकते ।

लॉन्सलौट : बेकार की बातें छोड़िये । मुझे दुआ दीजिये । मैं ही लॉन्सलौट हूँ, आपका पुत्र । आपही का बेटा हूँ, था और रहूँगा ।

गोब्बो : मैं नहीं मान सकता कि तुम मेरे बेटे हो ।

लॉन्सलौट : हाय अब मैं करूँ तो क्या करूँ ? लेकिन मैं हूँ तो लॉन्सलौट ही । मैं ही यहूदी का नौकर हूँ और यकीनन तुम्हारी स्त्री मार्जरी मेरी माँ है ।

गोब्बो : ठीक कहते हो । उसका नाम मार्जरी ही है । और अगर तुम लॉन्सलौट ही हो तो मैं कसम से कह सकता हूँ कि तुम मेरे ही रक्त-मांस हो ! हे भगवान ! ऐसा ही हो ! क्या दाढ़ी है तुम्हारी ! (सिर के लंबे बालों पर हाथ रखता है) तुम्हारी ठोड़ी पर तो इतने बाल हैं जितने मेरी गाड़ी खींचने वाले घोड़े डॉबिन की पूँछ में भी नहीं ।

लॉन्सलौट : (उठकर) अगर यह बात है तो इसका मतलब यह है कि डॉबिन घोड़े की पूँछ घटती जा रही है । जब मैंने उसे देखा था तो निश्चय ही उसकी पूँछ में मेरी ठोड़ी की तुलना में कहीं ज्यादा बाल थे !

गोब्बो : हे भगवान ! तुम तो सचमुच बहुत बदल गये । कहो, तुम्हारी अपने मालिक से केंसी पट रही है ? मैं उसके लिये एक भेंट लाया हूँ । मैं समझता हूँ तुम दोनों में अच्छी कट रही है ?

लॉन्सलौट : जहाँ तक मेरा सवाल है, मैंने तो तय कर लिया है कि मैं उसे छोड़ कर भाग जाऊँगा और बहुत दूर पहुँच कर ही चैन लूँगा । वह तो खालखेंचा एक असली यहूदी है । उसे भेंट देने की बजाय उसको फाँसी लगा लेने को एक रस्सी देनी चाहिये । मैं तो उसकी नौकरी में भूखा मर गया । ज़रा हाथ फेर के देखो, मेरी एक-एक पसली गिन सकते हो ! तुम आ गये पिता ! सच

मैं बहुत खुश हूँ। यहाँ एक श्रीमन्त बैसैनियो हैं। अपनी भेंट उन्हें देने के लिये दे दो ! वे तो अपने नौकरों को बड़ी सुंदर पोशाक देते हैं। अगर मुझे उनके यहाँ नौकरी नहीं मिली तो मैं दूर कहीं भाग जाऊँगा, धरती के किसी अनजान कोने में। आह रे सौभाग्य ! ये लो वे ही आ रहे हैं। आओ उनसे मिलें। अगर मैं अब यहूदी की और नौकरी करूँ तो मैं भी यहूदी ही बन जाऊँ।

[बैसैनियो का लियोनार्डो तथा अन्य सेवकों के साथ प्रवेश]

बैसैनियो : यही करो। लेकिन जल्दी करो कि पाँच बजे तक खाना विल्कुल तैयार हो जाये। यह खत वक्त पर पहुँच जायें। और सेवकों के लिये नये कपड़े बनने चाहियें। और ग्रेशियानो से कहो कि वे तुरंत मेरे यहाँ आ जायें।

[एक सेवक का प्रस्थान]

लॉन्स० : चलो पिता ! उनसे मिल लो !

गोब्बो : भगवान श्रीमान् का भला करे।

बैसैनियो : धन्यवाद ! क्या तुम मुझसे कुछ कहना चाहते हो ?

गोब्बो : यह मेरा बेटा है हुजूर... एक गरीब लड़का...

लॉन्स० : नहीं श्रीमान् ! गरीब लड़का नहीं, बल्कि अमीर यहूदी का सेवक है और मेरे पिता बतायेंगे.....

गोब्बो : श्रीमान् ! इसकी बड़ी इच्छा है कि यह, क्या बताऊँ... सेवा करे...

लॉन्स० : किस्सा कोताह हुजूर यह है कि मैं यहूदी का सेवक हूँ और मेरी इच्छा है, जैसा कि मेरे पिता बतायेंगे.....

गोब्बो : यह और इसके मालिक, हुजूर बुरा न मानें, अच्छे ताल्लुकात नहीं रखते.....

लॉन्स० : मतलब यह हुआ ! कि थोड़े में कहूँ तो सचाई यों है कि यहूदी ने मेरे साथ अन्याय किया है और जैसे कि मेरे पिता ईमानदार आदमी हैं, आपको सचाई बतायेंगे.....

गोब्बो : यह मेरे पास कुछ फ़ाख़ता हैं हुआ ! मैं इन्हें आपकी नज़र करना चाहता हूँ.....

लॉन्स० : बहुत ही संक्षेप में कहूँ तो सारी प्रार्थना मेरे बारे में है, जैसा कि श्रीमान् स्वयं ही मेरे ईमानदार पिता की बात से समझ जायेंगे, और हालाँकि मैं यह कहता हूँ, जो मुझे कहना नहीं चाहिये, फिर भी मेरे पिता बूढ़े हैं...और वे गरीब हैं.....

बैसैनियो : एक वक्त में एक ही बात करो। तुम मुझसे चाहते क्या हो ?

लॉन्स० : आपकी नौकरी करना चाहता हूँ श्रीमान् !

गोब्बो : बस हुआ ! इतनी-सी बात है बस।

बैसैनियो : मैं तुम्हें जानता हूँ और तुम्हारी दरख्वास्त को मंज़ूर करता हूँ। आप ही सुबह तुम्हारे मालिक शाइलॉक ने तुम्हारे बारे में बातें की थीं और तुम्हारी सिफारिश भी मुझसे की थी। लेकिन क्या यह ठीक होगा कि तुम उस धनी यहूदी की नौकरी छोड़कर मुझ जैसे गरीब नागरिक की सेवा करो ?

लॉन्स० : श्रीमान् ! 'ईश्वर की दया सबसे अच्छी' की कहावत आप पर ही चरितार्थ होती है। आप पर ईश्वर की दया है, शाइलॉक के पास तो केवल धन है।

बैसैनियो : खूब कहा। अब तुम अपने बाप के साथ जाओ और अपने पुराने स्वामी से छुट्टी लो और मेरे निवासस्थान पर आ जाओ। (अपने सेवकों से) इसे भी पोशाक देना, औरों से अच्छी। ध्यान रखना !

लॉन्स० : देखा पिता ! तुम कहते थे मुझे नौकरी नहीं मिलेगी ! तुम्हारा विचार था कि मुझे बोलना भी नहीं आता ! (अपनी हथेली देखकर) यदि कोई ज्योतिषी देखे तो मेरे हाथ में जो भाग्य है, वह इटली के किसी भी व्यक्ति का नहीं । यह देखो, जीवन की रेखा ! है जोर की ? यह बीवियों की रेखा है, अरे इससे क्या ? पन्द्रह बीवियाँ होती हो कितनी हैं ? मर्द के ग्यारह बेवाएँ और नौ क्वारियाँ अगर बीवियाँ हों तो क्या बड़ी बात है ? यह एक और रेखा है जो बताती है कि मैं तीन बार डूबने से बचूँगा और एक बार शादी के खतरे से बचूँगा । लेकिन इन सबका मैं क्या घमंड करूँ ? अगर, जैसा कि लोग कहते हैं, यह सच है कि किस्मत एक औरत है, तब वह बहुत ही अच्छी औरत है, क्योंकि उसने मुझसे बड़े अच्छे वायदे कर रखे हैं । चलो पिता । पलक मारते मैं यहूदी से छुट्टी लेता हूँ ।

[लॉन्सलौट और वृद्ध गोब्ज़ो का प्रस्थान]

बैसैनियो : सुनो लियोनार्डो ! इस मामले पर जरा गौर से सोचो । यह सब चीजें कायदे से खरीद कर बेलमोन्ट जाने वाले जहाज़ पर चढ़ा दी जायें, और फिर तुम तुरंत मेरे पास लौट आओ । क्योंकि रात को दावत है और मेरे वे दोस्त आ रहे हैं जिन पर मैं बहुत विश्वास करता हूँ । शीघ्र जाओ ।

लियोनार्डो : जितनी जल्दी हो सकेगा मैं ऐसी ही कोशिश करूँगा ।

[ग्रेशियानो का प्रवेश]

ग्रेशियानो : तुम्हारे स्वामी कहाँ हैं ?

लियोनार्डो : वे रहे श्रीमान् ! टहल रहे हैं ।

[प्रस्थान]

ग्रेशियानो : श्रीमान् बैसैनियो !

बैसैनियो : ग्रेसियानो !

ग्रेसियानो : मुझे तुमसे एक प्रार्थना करनी है ।

बैसैनियो : स्वीकार कर ली गई । कहो ।

ग्रेसियानो : मैं भी तुम्हारे साथ बेलमोन्ट चलूंगा । मना मत करना ।

बैसैनियो : अगर तुम इसी पर अड़ते हो तो चलो । लेकिन सुनो ग्रेसियानो ! तुम बड़े मुंहफट हो और सलीके से भी पेश नहीं आते । तुम्हारे यह गुण तुम्हें इसलिये फव जाते हैं क्योंकि हम तुम्हें जानते हैं और तुम्हारे साफ़ दिल से वाकिफ़ हैं, तभी तुम्हारे इन अवगुणों पर ध्यान नहीं देते । लेकिन जो तुम्हें अच्छी तरह नहीं जानते, उनको तो यही अवगुण भी लग सकते हैं । इसलिये अच्छा यही होगा कि तुम अपने पर काबू रखो और ठीक तरह मे नम्र व्यवहार करो, वर्ना कहीं ऐसा न हो कि जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम्हारे व्यवहार से मुझे भी ग़लत समझा जाये और मैं भी अपनी आशाओं से हाथ धो बैठूँ ।

ग्रेसियानो : श्रीमन्त बैसैनियो ! सुनो । अगर मैं गंभीर न बना रहूँ, इज्जत से बातें न करूँ, और शायद ही कभी कसम खाली तो खाली, जब मैं प्रार्थना-पुस्तक न रखे रहूँ और संजीदा दिखाई न दूँ, और खाने के पहले जब प्रार्थना की जाये तब आँखों तक टोप नीचे झुकाकर बहुत ही क्रायदे से 'आमीन्' न कहूँ, सारे नम्रता और शिष्ट व्यवहार के नियमों का पालन न करूँ, ऐसे जैसा कोई भी अत्यंत सभ्य व्यक्ति करता है, ऐसे जैसा कोई भी अत्यंत शिक्षित व्यक्ति करता है, अपनी दादी का दिल खुश करने को चेहरा उदास बना लेता है, तो कुछ कहना, बल्कि फिर तुम मुझ पर कभी विश्वास ही मत करना !

बैसैनियो : अच्छी बात है । देखेंगे तुम कैसा व्यवहार करते हो !

ग्रेशियानो : लेकिन आज रात नहीं। आज रात मैं जो कुछ करूँ उससे मेरे व्यवहार की कल्पना मत करना, उसी से मुझे पर निर्णय मत दे देना।

बैसैनियो : अजी नहीं। आज रात इसकी क्या जरूरत है? बल्कि मैं तो कहता हूँ कि आज तो अपनी सारी मौज-बहार उँडेल देना क्योंकि आज तो कुछ खास दोस्त आ रहे हैं और वे सब हँसी-दिल्लगी के शौकीन हैं। लेकिन इस वक्त मुझे जाने दो मुझे बहुत ज़रूरी काम है।

ग्रेशियानो : मुझे भी लौरेंज़ो से मिलना है और भी लोग हैं। खाने के वक्त रात को आऊँगा।

[प्रस्थान]

दृश्य ३

[वेनिस : शाइलॉक के घर का कमरा]

[जैसिका और लॉन्सलौट का प्रवेश]

जैसिका : मुझे सचमुच इसका बड़ा शोक है कि तुम मेरे पिता की नौकरी छोड़ कर जा रहे हो। हमारा घर तो नरक की तरह बेजान और बंजर है। काफ़ी हद तक तुम्हारी मज़ाकिया तबियत दिल लगाया करती थी, लेकिन तुम तो जाने की बात पक्की कर चुके हो, तो फिर बिदा! यह लो एक ड्यूकैट ले जाओ। बैसैनियो की मेज़ पर तुम खाना खाते हुए लौरेंज़ो को पाओगे। चुपचाप बिना किसी के भी जाने हुए गुप्त रूप से यह पत्र उसे दे देना। अब बिदा। मैं नहीं चाहती कि तुमसे बातें करते हुए मेरे पिता मुझे देख लें।

लॉन्स० : बिदा! आंसू मुझे बोलने नहीं देते। ओ अत्यंत सुंदर

विधर्मी ! ओह प्रिय यहूदिन ! किसी दुराचारी ईसाई ने ही तेरी माता से स्नेह प्रगट करके तुझे जन्म दिया होगा । किंतु बिदा ! यह निर्बलता के प्रतीक मेरे अथु मेरे साहस को कुछ कम कर रहे हैं । बिदा !

जैसिका : बिदा, अच्छे लॉन्सलौट !

[लॉन्सलौट का प्रस्थान]

उफ़ ! कितना घृणित पाप है मेरा कि मैं अपने ही पिता की पुत्री होने से अस्वीकार करती हूँ । मैं उनकी पुत्री होकर भी उनसे कितनी दूर हूँ ! ओ लौरेन्जो ! यदि तुम अपनी प्रतिज्ञा का पालन करोगे तो मैं तुम्हारी प्रिय पत्नी बनकर, ईसाई हो जाऊँगी और इस भगड़े का ही अंत कर दूँगी ।

[प्रस्थान]

दृश्य ४

[वही : पथ]

[ग्रेशियानो, लौरेन्जो, सैलैरिनो और सैलैनियो का प्रवेश]

लौरेन्जो : नहीं, हम चुपचाप खाने के वक्त खिसक चलेंगे । मेरे घर चलकर चेहरे पर नकाब चढ़ा लो^१ और घंटे भर में लौट आओ ।

ग्रेशियानो : हमने तो अच्छी तैयारी भी नहीं की है ।

सैलैरिनो : हमने तो अभी मशालचियों का भी इंतज़ाम नहीं किया है ।

सैलैनियो : यह सब बेकार ही है अगर हमने इसका ठीक से इंतज़ाम नहीं किया । बेहतर है हम इस खेल को करें ही नहीं ।

लौरेन्जो : अभी तो चार बजे हैं । हमारे दो घंटे पड़े हैं, हम तैयारी

१. चेहरे पर नकाब डालने का तब फ़ैशन था ।

कर सकते हैं ।

[लॉन्सलौट का एक पत्र के साथ प्रवेश]

अरे तुम हो लॉन्सलौट ! कहो क्या खबर है ?

लॉन्सलौट : आप अगर मोहर तोड़कर यह पत्र पढ़ने का कष्ट करें तो मैं आपको सब बात समझा दूँगा ।

लौरेंजो : इस लिखावट को तो मैं खूब पहचानता हूँ । कितनी सुंदर है और फिर जिस हाथ ने इसे लिखा है वह तो इस सफ़ेद कागज़ से भी ज़्यादा गोरा और खूबसूरत है ।

ग्रेशियानो : तब तो यह अवश्य ही तुम्हारी प्रिया का पत्र है ।

लॉन्सलौट : मुझे जाने की आज्ञा दी जाय ।

लौरेंजो : अब तुम किधर जा रहे हो ?

लॉन्सलौट : भगवान की सौगंध ! मैं तो अपने पुराने स्वामी शाइलॉक को निमंत्रण देने जा रहा हूँ । आज रात उसे भी मेरे नये स्वामी बैसैनियो के साथ भोजन पर आमंत्रित किया गया है ।

लौरेंजो : (उसे धन देकर) यह देखो, यह लो । सुंदरी जैसिका से कहना कि मैं उसे निराश नहीं करूँगा । लेकिन देखो, एकांत में कहना ।

बस ! अब तुम जा सकते हो ।

[लॉन्सलौट का प्रस्थान]

मित्रो ! आज रात नाटक^१ करना है ? मैंने मशालची का प्रबंध कर लिया है ।

सैलैरिनो : बहुत अच्छा । माता मेरी की सौगंध है, मैं ज़रा भी वक्त बरबाद किये बिना सब इंतज़ाम कर लूँगा ।

१. चेहरों पर नकाब डालकर एक प्रकार का खेल उस समय किया जाता था । यह नाटक का एक पुराना रूप था ।

सैलैनियो : यही मेरा भी हाल समझो ।

लौरेन्जो : तो फिर अब से एक घंटे बाद, हम लोग ग्रेशियानो के निवासस्थान पर मिलेंगे ।

सैलैरिनो : वाह ! क्या कहा है । बिल्कुल ठीक है ।

[सैलैरिनो और सैलैनियो का प्रस्थान]

ग्रेशियानो : क्या वह पत्र तुम्हारी प्रिया सुंदरी जैसिका का ही नहीं है ?

लौरेन्जो : मैं तुमसे कुछ नहीं छिपाऊँगा, सब बता दूँगा । उसने लिखा है कि मैं उसे उसके पिता के घर से कैसे निकालूँ, वह अपने साथ घर से कितने हीरे-जवाहिरात और सोना निकाल लायेगी और किस प्रकार वह एक सेवक का रूप धारण करके घर से निकलेगी । अगर कभी भी शाइलॉक स्वर्ग जा सकता है तो केवल अपनी इसी दयालु पुत्री के कारण । और यदि इस सुंदरी पर कोई आपत्ति आ सकती है तो वह निश्चय ही इस विधर्मी यहूदी पिता के कारण । चलो अब चलें । चलते-चलते तुम जैसिका का पत्र पढ़ लेना । नाटक में वस्त्र बदलने पर जैसिका ही मेरा मशालची बनेगी ।

[प्रस्थान]

दृश्य ५

[वही : शाइलॉक के घर के सामने]

[शाइलॉक और लॉन्सलौट का प्रवेश]

शाइलॉक : तुम स्वयं अपने पुराने स्वामी शाइलॉक और नये स्वामी बैसनियो का अंतर देख लोगे । देख लेना तुम्हें कोई फ़ायदा नहीं होगा । अरी जैसिका !! हाँ तो ! वहाँ तो तुम्हें ऐसी चर्राई भी नहीं मिलेगी जैसे यहाँ ठूँस-ठूँसकर खाया करते थे । जैसिका ! सुना नहीं !! और वहाँ क्या तुम काहिली कर पाओगे ? यहाँ जैसे नई-नई वदियाँ घिस-घिस फाड़ते थे वहाँ क्या यह सब कर सकोगे ? जैसिका ! सुन नहीं रही है क्या ?

लॉन्सलौट : जैसिका !!

शाइलॉक : तुम्हें पुकारने को किसने कहा था ? मैंने तो तुमसे नहीं कहा था न ?

लॉन्सलौट : हुजूर कहा करते थे कि आपकी प्रगट आज्ञा के बिना मैं कुछ नहीं कर सकता था ।

[जैसिका का प्रवेश]

जैसिका : पिता ! क्या आपने मुझे बुलाया था ? क्यों क्या बात है ?

शाइलॉक : मुझे शाम को भोजन पर निमंत्रित किया गया है जैसिका ! और क्योंकि मैं बाहर जाऊँगा, तुम यह चाबियाँ रखो घर की । लेकिन मैं वहाँ क्यों जाऊँ ? कोई मुझे प्यार के कारण थोड़े ही बुलाया गया है ? वे तो मेरी खुशामद कर रहे हैं ! चलो कोई बात नहीं । मैं अपनी नफ़रत के सहारे ही वहाँ जाऊँगा और उस कंजूस ईसाई बैसनियो के खूब खाऊँगा । मेरी प्यारी

बेटी जैसिका, घर की अच्छी देखभाल करना। मुझे वहाँ जाने की कोई खुशी थोड़े ही है ! रात मैंने सुपने में रूपयों से भरे थैले देखे थे, और तभी मुझे डर लग रहा है कि मुझ पर कोई आफ़त न आ जाये !

लॉन्सलौट : श्रीमान् ! अवश्य आइये। मेरे स्वामी बैसैनियो पूरी आशा कर रहे हैं कि आप अवश्य आवेंगे।^१

शाइलॉक : मैं भी यही कर रहा हूँ।

लॉन्सलौट : मैं समझता हूँ, उन्होंने एक नाटक का भी प्रबंध किया है, लेकिन मुझे पक्की तरह से नहीं मालूम। लेकिन यदि आपको कोई मनोरंजन मिले तो इसका कारण क्या हो सकता है ? यही कि बुधवार को दुपहर में जो ईस्टर त्यौहार वाला सोमवार पड़ा था न, उसकी सुबह, हाँ सुबह छः बजे को चार साल पहले मेरी नाक में से खून निकला था न, वही हो सकता है।^२

शाइलॉक : तो आज नाटक का भी प्रबंध है वहाँ रात को ? सुनो जैसिका, मेरे दरवाजों में ताले लगा लेना होशियारी से। जब कभी तुम ढोल की आवाज़ सुनो, या शहनाई की तीखी आवाज़ कान में पड़े तो खिड़की में से भाँकना मत। इन मूर्ख ईसाइयों को देखने की कोई ज़रूरत नहीं, जब वे अपने मुखों को रँगकर, उन पर तरह-तरह के चेहरे लगाकर आते हैं। मेरा घर तो शांति के लिये प्रसिद्ध है। सब दरवाजे और खिड़कियाँ अच्छी

१. यहाँ Reproach शब्द का प्रयोग किया गया है। जिससे लॉन्सलौट कहता है—स्वामी आपके आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। परन्तु Reproach का दूसरा अर्थ है—डॉटना, तिरस्कार करना। शाइलॉक रिप्रोच के दूसरे अर्थ की ओर इंगित करता है। हिन्दी में इसका अनुवाद हो ही नहीं सकता।

२. एक अनर्गल वार्तालाप। यह शेक्सपियर का निष्कृतमत हास्य है।

तरह बंद रखना ताकि इन बेकार के उत्सवों की आवाजें भीतर नहीं आयें। सचमुच जेकब^१ के पवित्र दण्ड की शपथ खाकर कहता हूँ, वहाँ जाकर रात में उन लोगों के साथ खाने की मेरी तनिक-सी भी इच्छा नहीं है, पर फिर भी मुझे जाना पड़ रहा है। अच्छा (लॉन्सलौट से) सुनो, तुम चलो ! कह देना मैं आता हूँ।

लॉन्सलौट : मैं आपसे पहले ही पहुँचना हूँ। श्रीमती (जैसिका से) खिड़की में जरूर भाँकना। एक यहूदिन के देखने लायक एक ईसाई भी उनमें होगा।

[प्रस्थान]

शाइलॉक : वह मूर्ख क्या कहता था ?

जैसिका : वह तो 'विदा श्रीमती' कह कर गया है।

शाइलॉक : यह मूर्ख है तो अच्छे स्वभाव का, लेकिन खाता बहुत है, मुनाफ़े के मामले में गोल, और इस क्रूर सोता है दिन में कि क्या कोई बिल्ली सोयेगी ? मेरे घर में ऐसे काहिलों का क्या काम है ? चलो अच्छा है, बला टली। यह बहुत ठीक रहा कि यह ऐसे घर का माल बरबाद करने पहुँचा, जहाँ की बरबादी ही मुझे सबसे ज़्यादा पसंद है। अच्छा जैसिका ! भीतर चलो। यह नौकर अपने मालिक को नुकसान देगा। और उधार पाया धन बैसैनियो का खर्च ही हो तो क्या ही अच्छा। सुनो बेटो, मैं जल्दी ही आ जाऊँगा। जो मैंने कहा है, वैसा ही करना। सब दरवाज़े बंद कर लेना। सुनी है न कहावत, अच्छे मूँदे, अच्छे सोये ? बुद्धिमान लोग इसे कभी नहीं भूलते।

[प्रस्थान]

१. यहूदियों के न्यायी पूर्वज।

जेसिका : विदा ! यदि मेरा भाग्य मेरे विरुद्ध नहीं है, तो मैं एक पिता और तुम एक पुत्री को खो दोगे !

[प्रस्थान]

दृश्य ६

[प्रेशियानो और सैलैरिनो का प्रवेश । मुखों पर चेहरे चढ़े हैं ।]

प्रेशियानो : यही तो वह साया है, घर का, जहाँ लौरेंजो ने हमसे ठहरने को कहा था !

सैलैरिनो : लेकिन उसके आने का तो समय निकल चुका !

प्रेशियानो : सचमुच बड़े अचरज की बात है ! प्रेमी तो समय से पहले पहुँचते हैं । और वह है कि विलंब कर रहा है !

सैलैरिनो : वीनस के कबूतर तो नये प्रेम पर अपनी मुद्रा लगाने को दस गुनी तेजी से उड़ते हैं । वे यह नहीं देखते कि एक वह प्रेम पूर्ण सफल हो जो कि अपनी पूर्ण स्थापना कर चुका हो !^१

प्रेशियानो : सच कहते हो ! जिस भूख की तेजी से आदमी खाने बैठता है, उठते वक्त उसमें वह तेजी कहाँ रहती है जब पेट भर चुका होता है ? कहाँ है वह घोड़ा, जो लौटते वक्त भी उसी तेजी से आता हो जिससे पहली बार उड़ा चला जाता है ? वस्तु के उपभोग का आनंद वह तीव्रता कहाँ रखता है जो उसकी प्राप्ति के संघर्ष में होता है ! यात्रा पर निकलने वाला जहाज कितना सुंदर होता है, झंडों से सजा, बिल्कुल उसी प्रसिद्ध कहानी के पुत्र-सा जो जब कमाई करने निकला था तो अत्यंत हर्षित था ! और जब वही जहाज लौटता है तब पाल फट जाते

१. पुराने प्रेम की तुलना में नया प्रेम आकर्षक होता है। वीनस प्रेम की देवी है। उसके कबूतर प्रेम पर मुहर लगाते हैं।

हैं ! लकड़ियाँ चर्चा जाती हैं । हवा के हाथों से भकभोरा हुआ उसी पुत्र का-सा जो विदेशों में जाकर दुश्चरित्रा स्त्रियों में फँसकर सब कुछ लुटा कर लौटता है !^१

सैलैरिनो : यह लो लौरैन्जो आ गया ! इस विषय पर हम फिर बातें करेंगे ।

[लौरैन्जो का प्रवेश]

लौरैन्जो : प्रिय मित्रो ! सच तुम्हें इतनी प्रतीक्षा कराने का मुझे बड़ा खेद है । लेकिन विश्वास मानो, मुझे बहुत ही आवश्यक कार्य ने रोक लिया था । जब तुम्हारा समय आयेगा कि तुम अपनी प्रिया को लेकर कहीं भागोगे, तब देख लेना कि जितनी देर तुमने मेरे लिये प्रतीक्षा की है, मैं इससे कहीं अधिक समय तक रुका रहूँगा । आओ चलो । यही शाइलॉक का घर है । मेरे होने वाले ससुर का ! अरे ! भीतर कौन है ?

[जैसिका खिड़की पर लड़के की वेशभूषा में दिखाई पड़ती है ।]

जैसिका : कौन है ? मैंने तुम्हारी आवाज़ तो पहँचान ली है, लेकिन मुझे विश्वास दिलाने के लिये बताओ कि तुम हो कौन ?

लौरैन्जो : मैं लौरैन्जो हूँ, तुम्हारा सच्चा प्रेमी !

जैसिका : लौरैन्जो ! निश्चय ही तुम हो ! मेरे प्रिय हो ! आह ! कितना प्रेम करती हूँ तुम्हें मैं । और तुम्हारे सिवाय जान भी कौन सकता है कि मैं तुम्हें प्यार करती हूँ !

लौरैन्जो : ईश्वर जानता है, तुम्हारा हृदय जानता है कि मैं तुम्हें कितना चाहता हूँ ।

१. पुत्र की कथा इंजील में आती है कि एक लड़का कमाने जाता है और अंत में सब खोकर लौटता है । पिता उसका फिर भा स्वागत करता है । इंजील में उसे भटकी हुई आत्मा का प्रतीक माना गया है ।

जैसिका : यह एक छोटी पिटारी है, जो मैं ऊपर से फेंकती हूँ। इसे लपकना। छूट न जाये। यह इतनी तकलीफ़ उठाने से कहीं ज्यादा कीमत रखती है। यही सौभाग्य है कि यह रात का समय है और तुम मुझे देख नहीं सकते क्योंकि लड़के की वेश-भूषा में होने के कारण मैं लज्जा से मरी जा रही हूँ। किंतु प्रेम अच्छा है और प्रेमी उन मूर्खताओं को नहीं देख सकते जो वे स्वयं करते हैं। यदि वे देख पाते तो कामदेवता स्वयं ही यह देखकर लाज से गड़ जाता कि मैं पुरुष हो गई हूँ।

लौरेंजो : उतरो ! तुम्हें मेरा मशालची बनना है।

जैसिका : हाय ! क्या मैं अपनी लज्जा को प्रकाशित करूंगी ? सच ! वह बहुत भीनी है। कहीं पहुँचान न ली जाऊँ ! प्रियतम ! मुझे तो छिपा ही रहने दो।

लौरेंजो : तुम तो छिप ही गई हो ! तुम्हें पहुँचान ही कौन सकता है ? तुरंत उतर आओ ! क्योंकि अब रात तेज़ी से सरक रही है और फिर वे सब बैसैनियो की दावत में हमारी प्रतीक्षा भी कर रहे होंगे !

जैसिका : ठहरो ! मैं दरवाज़ों को खूब बंद कर दूँ और कुछ और धन संग ले लूँ बस फिर नीचे आती हूँ।

[प्रस्थान—ऊपर ही।]

प्रेशियानो : सचमुच ! इस स्त्री में तो कोई यहूदीपन नहीं है, यह तो पूरी ईसाइन है।^१

१. शेक्सपियर के पात्र ईसाई है, यहूदी होना उनके लिये कुछ बहुत बुरी बात है। जो उनके लिये अच्छा है वह ईसाई है। जैसे हिंदू किसी की पवित्रता देखकर कहते हैं : अजी वह तो पूरा ब्राह्मण है ! यह भी ऐसी ही अभिव्यक्ति है, क्योंकि जैसिका उनके लिये विधर्मी है।

लौरेन्जो : यदि मैं इससे अत्यंत प्रेम न करता होऊँ तो तुम मुझे बुरा कहना । वह चतुर है, कुशल है और मुझे विश्वास है कि मेरी धारणा गलत नहीं है । अत्यंत सुंदरी है, मेरी आंखें मुझे धोखा नहीं दे सकतीं । उसके गौरव-भरे आचरण ने प्रमाणित किया है कि वह मुझसे अत्यंत प्रेम करती है । और ऐसी चतुर, सुंदर और नेक स्त्री से प्रेम मैं क्यों नहीं करूँगा भला ?

[जैसिका का प्रवेश—रंग-मंच की भूमि पर]

अच्छा ! तुम आ गई । चलो मित्रो ! चलें । हमारे अन्य मित्र जो नाटक में भाग ले रहे हैं, हमारी प्रतीक्षा कर रहे होंगे ।

[जैसिका और सैलैरिनो का प्रस्थान । एन्टोनियो का प्रवेश]

एन्टोनियो : कौन है ?

ग्रेशियानो : क्या आप श्रीमान एन्टोनियो हैं ?

एन्टोनियो : धिक्कार है तुम्हें ग्रेशियानो ! वाकी लोग कहाँ हैं जो नाटक में भाग ले रहे हैं ? नौ वज गये, सारे मेहमान इंतजार कर रहे हैं । आज रात कोई नाटक नहीं हो सकेगा । हवा का रुख बदल गया है और अनुकूल वायु के बहाव के कारण बैसैनियो को अभी-अभी बैल्मोन्ट को और जहाज में यात्रा करनी पड़ेगी । मैंने तुम्हें ढूँढ़ने को कई लोग दौड़ा रखे हैं ।

ग्रेशियानो : यह तो बड़ी खुशी की बात है ! जहाज पर आज रात ही जाऊँ, इससे बढ़कर और क्या हो सकता है ?

[प्रस्थान]

दृश्य ७

[बेल्मोन्ट : पोशिया के घर का एक कमरा । तुरहियों की आवाज ।

पोशिया का मोरक्को के राजकुमार तथा अन्य सेवकों के साथ प्रवेश]

पोशिया : पर्दे सरकाओ और श्रीमान् राजकुमार को वे डिब्बे दिखाओ ।
आइये श्रीमान् ! आप डिब्बा चुनिये ।

मोरक्को का राजकुमार : पहला सोने का है । क्या लिखा है इस पर ?
'जो मुझे चुनता है, वह वही पाता है जिसे बहुत-से लोग चाहते हैं ।' और चांदी वाले पर लिखा है—'जो मुझे चुनता है, वह वही पाता है, जिसके कि वह योग्य होता है ।' और यह निकुष्ट धातु रांग, इस पर यह क्या भद्दी-सी बान लिखी है—'जो मुझे चुनता है, वह उस सबको दाँव पर लगाता है जो उसके पास है ।' (पोशिया से) किंतु मुझे यह निश्चय कैसे हो कि मैंने ठीक ही डिब्बा चुना है !

पोशिया : श्रीमान् राजकुमार ! जो ठीक डिब्बा है, उसमें मेरा चित्र रखा है, यदि आप उमी को चुन लेंगे, तो तुरंत मेरा विवाह आपसे हो जायेंगा ।

मोरक्को : देवताओ ! मेरी मदद करो ! ठहरो ! मैं एक बार फिर इस लिखावट को पढ़ता हूँ ! क्या कहती है यह लिखावट रांगे के डिब्बे की ? 'जो मुझे चुनता है, वह उस सबको दाँव पर लगाता है, जो उसके पास है ।' देना होगा ! लगाना होगा ! लेकिन किसलिये ! रांगे के लिये ! रांगे के लिये इतना खतरा मोल लेना होगा ! यह डिब्बा तो मुझे डराता है । जो मनुष्य कष्ट उठाते हैं, वह केवल कुछ सुंदर वस्तु की प्राप्ति के लिये । उच्च विचारों के व्यक्ति भूँठी चकमक पर मोहित नहीं होते ! तो फिर मैं ही इस निकुष्ट धातु रांग के प्रति क्यों आकर्षित

होजूँ ? और यह श्वेत भव्य चाँदी का डिब्बा क्या कहता है ? लिखा है—‘जो मुझे चुनता है, वह वही पाता है जिसके कि वह योग्य होता है ।’ ठहर जाओ मोरक्को के राजकुमार ! अब निष्पक्ष दृष्टि से तनिक अपने ही विषय में चिंतन करो । यदि मैं अपने बारे में सोचूँ, तो यही कहूँगा कि मैं तो बहुत पाने के योग्य हूँ । लेकिन कौन जाने फिर भी मैं सुंदरी पोर्शिया को प्राप्त करने के योग्य हूँ भी या नहीं ? किंतु मैं स्वयं अपनी योग्यता के विषय में इतना शंकालु क्यों रहूँ ? इसका अर्थ तो यही है कि मैं अपने को हेय समझता हूँ । मेरी योग्यतानुसार प्राप्ति की बात है ! तब तो मैं पोर्शिया को पाने के योग्य हूँ । अपने उच्चकुल, उच्चपद, धन और गौरव से मैं उसके लिये पूर्णतः समर्थ हूँ । और सबसे बड़ी योग्यता का कारण तो यह है कि मैं उससे प्रेम करता हूँ । तो क्या इसी डिब्बे को चुन लूँ ? या आगे बढ़ूँ ? लेकिन सोने वाले डिब्बे को एक बार फिर पढ़ कर तो देखूँ ! कहता है—‘जो मुझे चुनता है वह वही पाता है, जिसे बहुत-से लोग चाहते हैं ।’ सच तो यह है कि सारा संसार पोर्शिया को चाहता है । संसार के हर कोने से लोग उसके लिये आ रहे हैं । आ रहे हैं कि वे इस पवित्र देवी का चुंबन कर सकें ! यह मानों एक जीवित संत है ! ईरान के भीषण मरुस्थल और विशाल अरब के बीहड़ सुनसान विस्तार इसी पोर्शिया के दर्शनों की लालसा से दुर्गम नहीं रहे, साधारण राजमार्ग की भाँति बन गये हैं ! क्योंकि देश-विदेशों से राजकुमार चले आ रहे हैं । अथाह महार्सिधुओं का विस्तार, वह जलमय साम्राज्य जिसका उठती लहरों का-सा महत्वाकांक्षा-भरा शीश आकाश पर झूकता है, इन विदेशियों को तनिक भी नहीं रोक पाता । वे

तो पोर्शिया को देखने के लिये उसे ऐसे लाँघकर आ जाते हैं जैसे वह जल की कोई क्षीरमय धारा हो ! इन्हीं तीन डिब्बों में से एक में इस सुंदरी का दिव्य चित्र है। क्या कभी राँगे के डिब्बे में भी वह हो सकता है। ऐसा सोचना भी अत्यंत कुरूप और जघन्य है। यह तो उसके शव को भी धारण कर लेगा, यह भी सोचना एक पाप ही है ! यह तो इस योग्य भी नहीं। तो क्या वह चित्र चाँदी के डिब्बे में होगा ? वह चाँदी, जिससे सोने का मूल्य दस गुना अधिक है ! यह भी निकृष्ट विचार है। पोर्शिया के चित्र जैसा मूल्यवान रत्न कभी भी सोने से नीच स्तर की धातु में नहीं रखा जा सकता। इस पर एक सोने का अंगरेज़ी सिक्का है, जिस पर एक फ़रिश्ते की तस्वीर बनी है, और वह भी बाहर की तरफ़ बनी है, और यहाँ एक जीवित देवदूत—पोर्शिया, इसके भीतर है, इसी सोने के डिब्बे में, सबकी दृष्टि से ओझल ! मुझे कृपया चाबी दें। मैं यह सोने का डिब्बा चुनता हूँ, जो भी भाग्य में होगा देखा जायेगा।

पोर्शिया : श्रीमन्त राजकुमार ! चाबी यह रही। यदि आपको मेरा चित्र इस डिब्बे में मिलेगा तो मैं आपकी पत्नी बन जाऊँगी।

[राजकुमार सोने का डिब्बा खोलता है।]

मोरक्को० : उफ़ कितना भयानक ! यह मैं क्या देख रहा हूँ। इसमें तो एक हड्डी का कपाल रखा है और उसके खोंखल में एक कागज़ रखा है। क्या लिखा है इस पर ! (पढ़ता है।)

हर चीज़ चमकती है जो, होती नहीं सोना,
तुमने नहीं सुनी है क्या ये बात कहीं पर ?
बाहर की इस चमक को यों ही देखकर कितने,
बरबाद हैं नहीं हुए अनजान यहीं पर ?

बाहर सजा जो कीमती लगता है मकबरा
भीतर सिवा कीड़ों के नहीं और है उसमें,
जितने हो वीर यदि कहीं होते चतुर वैसे,
कुछ और ही होता तुम्हारे भाग्य के घर में !
अंदाज़ गलत हो गया साबित है तुम्हारा,
आगे बढ़ो, बाकी न रहा, काम तुम्हारा !
ओ ताप बिदा ! शीत की ठिठुरन है तुम्हारी !
दुर्भाग्य है, श्रम भी गया, यह हार तुम्हारी !

बिदा ! पोशिया ! अब समस्त सम्मानों से पूर्ण बिदा लेने
का धैर्य भी तो इस हृदय में नहीं रहा। मुझ जैसे पराजित प्रेमी
को तो तुरंत चला जाना चाहिये ;

[सेवकों के साथ प्रस्थान । तुरही-निनाब]

पोशिया : कितनी आसानी से छूट गई हूँ । पर्दे गिरा दो । इस रंग^१
के प्रेमी मुझे इसी भाँति चुनें ।

दृश्य ८

[वेनिस-पथ]

[सैलैरिनो और सैलैनियो का प्रवेश]

सैलैरिनो : क्यों भई ! मैंने बैसैनियो को जहाज़ पर देखा है । उसके
साथ ही ग्रेशियानो भी गया है । और मुझे विश्वास है कि उसमें
लौरेन्जो नहीं था ।

सैलैनियो : लेकिन उस नीच यहूदी ने तो चिल्ला-चिल्लाकर ड्यूक
से शिकायत की और वे भी अब उसके साथ बैसैनियो के जहाज़ की

१. काले रंग के प्रति उदासीनता का भाव ।

तलाशी लेने गये हैं।

सैलैरिनो : लेकिन वे तो देर में पहुँचे, जहाज़ तब तक जा चुका था।

लेकिन ड्यूक को पता चला कि लौरेन्जो और उसकी प्रिया जैसिका अन्यत्र ही एक विहार-नौका में देखे गये थे। और फिर एन्टोनियो ने ड्यूक से यह दृढ़ता से कहा कि वे बेंसैनियो के साथ उसके जहाज़ में नहीं थे।

सैलैनियो : मैंने कभी ऐसा उलझा हुआ आवेश नहीं देखा, इतना विचित्र, इतना भयानक और फिर भी ऐसा डाँवाडोल तथा परिवर्तनशील ! सड़कों पर वह कुत्ता यहूदी चिल्लाता था : 'मेरी बेटी ! हाय मेरे रुपये ! हाय मेरी बेटी ! एक ईसाई के साथ भाग गई ! हाय मेरा रुपया ईसाई के हाथ जा लगा ! न्याय दो ! कानून ! बचाओ मुझे ! मेरे रुपये और मेरी बेटी ! मुहर लगा एक थैला था, और मुहर लगे दो सिक्कों से भरे थैले थे, और वह सब मेरी ही बेटी चुरा ले गई ! मेरे रत्न ! दो हीरे ! कितने कीमती थे वे ! मेरी बेटी चुरा ले गई ! न्याय दो ! लड़की को पकड़ो ! उसी के पास मेरे हीरे हैं, मेरे सिक्के हैं !'

सैलैरिनो : क्यों देखो न ! वेनिस के सारे लड़के उसके पीछे चिल्लाते फिरते हैं :

मेरे हीरे, मेरी बेटी, मेरे सिक्के !

सैलैनियो : उस अच्छे आदमी, हाँ मैं अच्छा ही कहता हूँ, एन्टोनियो को इस यहूदी का कर्ज नियत समय पर चुका देना चाहिये बर्ना वह आफ़त में पड़ जायेगा।

सैलैरिनो : कुमारी मेरी की सौगंध ।' तुमने खूब याद दिलाया।

१. कुमारी मेरी—ईसा मसीह, ईसाइयों के पैगम्बर, की माता, जिसने कुमारावस्था में ईश्वर के पुत्र को जन्म दिया था।

कल मेरी एक फ्रांसीसी से बातें हुई थीं। उसने बताया कि वेनिस का जहाज़, जो बहुत ही कीमती सामानों से लदा हुआ था, वह इंग्लैंड और फ्रांस के बीच के समुद्र में नष्ट हो गया। मुझे फ़ौरन एन्टोनियो का खयाल आ गया और मैंने मन ही मन परमात्मा से प्रार्थना की कि कहीं वह जहाज़ एन्टोनियो का न हो।

सैलैनियो : यही ठीक रहेगा कि तुम जो सुनो सो एन्टोनियो को बता दो, लेकिन ऐसे अचानक सूचना न देना कि वह दुख का धक्का नहीं भेल सके।

सैलैरिनो : सच कहता हूँ। एन्टोनियो से बढ़कर दयालु हृदय मनुष्य मुझे तो नहीं मिला। मैंने उसे बैसैनियो से बिछुड़ते देखा था। बैसैनियो ने उससे कहा कि वह जल्दी ही लौटेंगा। लेकिन एन्टोनियो ने कहा : 'नहीं, मेरे लिये अपने काम का हर्ज मत करना बैसैनियो ! पूरा काम करके आना। कहीं ऐसा न हो कि यहूदी से मेरी लिखा-पढ़ी की याद करके तुम अपने प्रेम में व्याघात डालो। प्रसन्न रहो, और वहाँ प्रेम की सफलता प्राप्त करने योग्य बातों में ही जी लगाओ।' और यह कहते हुए एन्टोनियो की आँखें आँसुओं से भर गई। उसने मुँह फेर लिया और अत्यंत स्नेह से उससे हाथ मिलाया। इस तरह उनका वियोग हुआ।

सैलैनियो : ऐसा लगता है कि केवल बैसैनियो के प्रेम के लिये ही एन्टोनियो जीवित रहता है। मैं कहता हूँ, मेरे साथ चलो। उसे ढूँढ़ें और उसके गमगीन दिल को हम राहत पहुँचाने के लिये कोई तरकीब करें।

सैलैरिनो : हाँ चलो। फ़ौरन चलो।

[प्रस्थान]

दृश्य ६

[बेल्मोन्ट : पोशिया के घर का एक कमरा]

[नैरिसा का एक सेवक के साथ प्रवेश]

नैरिसा : जल्दी करो जल्दी । पर्दा हटा दो । अरागोन के राजकुमार शपथ ग्रहण कर चुके हैं और अब शीघ्र ही चुनाव करने आने वाले हैं ।

[तुरही-निनाद । अरागोन के राजकुमार,
पोशिया तथा अन्य सेवकों का प्रवेश]

पोशिया : वह देखिये, वे रहे डिब्बे, कुलीन राजकुमार ! यदि आप वह डिब्बा चुन लेंगे, जिसमें मेरा चित्र है, तुरंत ही हमारा विवाह हो जायेगा, किंतु यदि आप असफल रहे तो श्रीमान् को चुपचाप लौट जाना पड़ेगा तुरंत ।

अरागोन० : मैंने जिन तीन बातों की कसम खाई है, मैं उन तीनों का पालन करूँगा । पहली यह कि मैंने कौन-सा डिब्बा चुना यह मैं किसी को नहीं बताऊँगा, दूसरी यह कि यदि मैं असफल रहा तो किसी भी स्त्री से विवाह नहीं करूँगा और अंतिम यह कि यदि मेरे भाग्य ने मेरा साथ नहीं दिया तो तुरंत यहाँ से चला जाऊँगा ।

पोशिया : मुझ जैसी व्यर्थ वस्तु के लिये जो भी यहाँ आते हैं, वे यही प्रतिज्ञा करने को बाध्य होते हैं ।

अरागोन० : और मैंने भी अपने को इसी के लिये प्रस्तुत किया है । मेरे भाग्य ! मेरे हृदय की आशा पूर्ण कर ! सोना, चाँदी और राँगा ! 'जो मुझे चुनता है, उसे अपना सब कुछ दाँव पर लगाना पड़ता है।' तो जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, ओ राँगे ! तुम्हें तो मेरे चुनाव के योग्य होने के लिये पहले सुंदर बनना पड़ेगा ।

और सोने का डिब्बा क्या कहता है ? अरे ! देखूँ ! 'जो मुझे चुनता है, उसे वही मिलता है, जो सब लोग चाहते हैं।' जो सब-लोग चाहते हैं ! सब लोग का मतलब तो हुआ कि मूर्ख भीड़ भी हो सकती है ! और भीड़ असली मतलब को कब समझती है, वह तो बाहरी चमक पर लट्टू हुआ करती है । उसके अलावा वह और कुछ थोड़े ही समझती है ! जैसे अबाबील बाहरी दीवार पर घोंसला बनाती है, जहाँ उसे आँधी-पानी सब सहना पड़ता है, वैसी ही उसकी भी बुद्धि होती है । जो सब लोग चाहते हैं, मैं उसे नहीं चुनूँगा, क्योंकि मैं साधारण आदमियों के साथ ही नहीं कूद पड़ूँ और बर्बर भीड़ में गिना जाऊँ ऐसा मुझे बिल्कुल पसंद नहीं । देखूँ ! चाँदी के डिब्बे पर क्या लिखा है ? शायद इसी में वह खजाना हो ! 'जो मुझे चुनता है, उसे वही मिलता है, जिसके कि वह योग्य होता है।' खूब कहा ! सच-मुच ऐसा कौन है जो भाग्य को धोखा देकर सम्मान प्राप्त कर सके और भीतर गुण भी न हों ? अपने ही गुण से सम्मान प्राप्त हो सकता है, यही अंतिम सत्य मानना उचित है । आह ! कितना अच्छा होता यदि संपत्ति, पद और शक्ति केवल योग्यता के आधार पर प्राप्त होतीं, न कि घूसखोरी और ऐसे ही बुरे रास्तों से ! तब न जाने कितने ही सम्मान पाते जो आज असम्मानित हैं ! और जो आज्ञा दे रहे हैं, उनमें से जाने कितने आज्ञा का पालन करने को बाध्य होते ! न जाने कितने ऊपर उठ जाते और कितने गिर जाते ! और मेरी पसंद ! मुझे चुनाव जल्दी करना चाहिये ! लिखा है : 'जो मुझे चुनता है वह वही प्राप्त करता है, जिसके कि वह योग्य होता है।' मैं वही प्राप्त करूँगा जिसके कि मैं योग्य हूँ । मुझे इसकी चाबी दीजिये । और

तुरंत मेरे भाग्य को खोलिये ।

[चाँदी का डिब्बा खोलता है ।]

पोर्शिया : बहुत देर सोचकर भी यह नतीजा निकला ।

अररागोन० : यह क्या है ? एक मूर्ख चुँदे विदूषक का चित्र ! इस पर कुछ लिखा भी है । पढ़ूँ तो सही । यह चित्र ! पोर्शिया के चित्र से कितना भिन्न ! मेरी आशाओं और योग्यताओं के कितने विपरीत ! 'जो मुझे चुनता है, उसे वही मिलता है जिसके कि वह योग्य होता है ।' तो क्या मैं इस मूर्ख के शीश-चित्र से अधिक कुछ भी प्राप्त करने की योग्यता नहीं रखता ? क्या यही मेरा इनाम है ? क्या मैं इससे अधिक कुछ भी प्राप्त करने की योग्यता नहीं रखता ?

पोर्शिया : अपराध करना और न्याय करना यह दो भिन्न कार्य हैं ! और दोनों विपरीत प्रकृति के हैं ।

अररागोन० : देखूँ क्या लिखा है ।

[पढ़ता है ।]

चाँदी है सात बार तपी आग में डालकर, तप तप मिला है रूप इसे दीप्त यह उज्ज्वल, जिसका नहीं निर्णय कभी होता है गलत देख अनुभव उसे तपा चुका है कर चुका निर्मल, कुछ लोग हैं जो बस सुखों की चाह में पागल ऊपर की चकमकों में सदा भागते व्याकुल उनकी खुशी उस चाहना की भाँति है चंचल कुछ भी नहीं है सार वहाँ खेल है पल पल । कुछ और हैं जो बन बड़े फिरते हैं बुद्धिमान भीतर मगर हैं मूर्ख ही, ऊपर से सुघर हैं—

चाँदी में धरे मूर्ख के इस चित्र के समान दिखते हैं और कुछ मगर, भीतर वे और हैं। दौलत से छिपाये हुए फिरते हैं मूर्खता पैसे की आड़ में चतुर बन कर हैं घूमते, उनकी किसी से भी भले शादी हो जहाँ में रहते हैं मूर्ख ही सदा, कैसे भी भूमते ! मौका निकल गया है, चलें आप, देर क्यों ? यह चित्र सवा सेर है, हैं आप शेर क्यों ?

अब अगर मैं यहाँ रुकता हूँ तो और भी अधिक मूर्ख प्रमाणित होऊँगा। कितना मूर्ख था मैं कि पोर्शिया को चुनने आया और कितना अधिक मूर्ख हूँ कि मुझे कुछ भी नहीं मिला। बिदा ! सुंदरी ! बिदा ! मैं अपनी प्रतिज्ञा का पक्का बना रहूँगा और अपने दुर्भाग्य को धैर्य से सहन करूँगा !

[अरागोन का राजकुमार तथा सेवक प्रस्थान करते हैं।]

पोर्शिया : एक और पतंगा मोमबत्ती से भुलस गया है। आह ! यह मूर्ख जो इतने चतुर बनते हैं, चुनाव के पहले कितना समय लेते हैं और सदैव ही उनकी मूर्खता गलत चुनाव करने की ओर ही उन्हें धकेल देती है।

नैरिसा : पुरानी कहावत कितनी सच्ची है कि शादी और फाँसी पूरी तरह से किस्मत के हाथ हैं।

पोर्शिया : चलो, पर्दा गिरवा दो नैरिसा !

[एक सेवक का प्रवेश]

सेवक : मालकिन कहाँ हैं ?

पोर्शिया : क्यों मैं यहाँ हूँ ! क्या बात है ?

सेवक : मालकिन ! एक जवान वेनिसवासी अभी आया है। वह कहता

है कि उसके स्वामी अभी आने वाले हैं। वह अपने मालिक की तरफ से बड़ी कीमती सौगात लाया है। उन्होंने नमस्ते कहलवाया है। ऐसा सुंदर प्रेम का दूत तो मैंने नहीं देखा। सुखद ग्रीष्म ऋतु^१ की अगवानी करने वाले मधुर वसंत का अत्यंत मधुर दिवस भी अपने स्वामी के आने की सूचना देने वाले इस सेवक की भाँति सुंदर नहीं होता।

पोशिया : बस-बस ! इतनी प्रशंसा क्यों उँडले दे रहा है। कहीं इतनी तारीफ़ करने के बाद यह मत कहना कि नया अतिथि तेरा ही रिश्तेदार भी है। चलो नैरिसा ! मैं उस प्रेमदूत को देखने को आतुर हो उठी हूँ कि इतने माधुर्य्य और सौंदर्य्य का प्रतीक बन कर आया है।

नैरिसा : हे कामदेव ! ऐसा कर कि यह बँसैनियो ही हो।

[प्रस्थान]

१. यूरोप में ग्रीष्म ऋतु सुहानी मानी जाती है, क्योंकि वहाँ जाड़ों में कुहरा, बर्फ़ आदि रहते हैं।

तीसरा अंक

दृश्य १

[वेनिस-पथ]

[संलैनियो और सैलैरिनो का प्रवेश]

सैलैनियो : सट्टे की दूकान की क्या खबर है ?

सैलैरिनो : अभी तो यही बात पक्की मानी जा रही है कि ऐन्टोनियो का माल लदा जहाज़ इंगलिश चैनल की लहरों में डूब गया । शायद उस स्थान को गुडविन सेंड्स कहते हैं । वह एक बहुत ही खतरनाक रेतीला तीर है जहाँ बहुत बड़े-बड़े और मजबूत जहाज़ भी डूब गये हैं । अगर अफवाह को इस बार सत्य माना जाये तब न ? अक्सर ही इन अफवाहों से कितनी गलतफहमियाँ पैदा हो जाती हैं ।

सैलैनियो : मैं कितना नहीं चाहता कि यह ऐन्टोनियो के जहाज़ के नाश की खबर भी वैसी ही भूँठ निकले जैसे वह बुढ़िया वाली भूँठ है कि वह अदरक मिली केक खाती रही और अपने पड़ोसियों को यह खयाल देती रही कि अपने तीसरे पति की मौत पर रो रही थी । लेकिन सारी बड़ी बातों को छोड़कर, बिना इधर-उधर भटके सचाई तो यह है कि ऐन्टोनियो बहुत ही उदात्त और उदार है । काश, मैं उसकी प्रशंसा के लिये नये ही शब्द ढूँढ पाता !

सैलैरिनो : अपनी बात तो पूरा करो । मैं अंतिम वाक्य सुनने के लिये आतुर हो रहा हूँ ।

सैलैनियो : क्या कहते हो ? सारांश यही है कि ऐन्टोनियो का एक जहाज़ डूब गया है ।

सैलैरिनो : एक तो पहले ही वह नुकसान उठा चुका है और यह और ! हे भगवान ! ऐसा न कर !

सैलैनियो : भगवान तुम्हारी बात पर तथास्तु कहें । कहीं शैतान (शाइलॉक) न आ टपके यहाँ अड़ंगा डालने को । लो वह आ रहा है ।

[शाइलॉक का प्रवेश]

अरे शाइलॉक ! सट्टे की दूकान की ताज़ा खबर क्या है ?

शाइलॉक : तुम स्वयं ही जानते हो और फिर तुमसे बढ़कर इस मामले में कौन जानता है सैलैरिनो ! कि मेरी लड़की जैसिका भाग गई है ।

सैलैरिनो : यह तो सच है । जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं तो उस दर्जी को भी जानता हूँ जिसके बनाये कपड़े पहनकर वह भागी है ।

सैलैनियो : पर शाइलॉक ! तुम नहीं जानते कि तुम्हारी लड़की बिल्कुल जवान हो गई है और जवान होने पर लड़कियाँ हमेशा माँ-बाप को छोड़ जाया करती हैं ।

शाइलॉक : अरे मुझे छोड़कर क्या गई अपना सत्यानाश कर गई ।

सैलैरिनो : हाँ, अगर शैतान इंसाफ़ करेगा तब तो वह यही कहेगा कि उसका नाश हो गया ।

शाइलॉक : मैं इस बात को कभी स्वीकार नहीं कर सकता कि मेरी ही बच्ची मुझसे ही बगावत करे ! मेरे ही खिलाफ़ !

सैलैरिनो : तुम्हारी देह में और जैसिका की देह में अब उतना ही भेद है जितना कोयले और हाथी दाँत में । तुम्हारे और उसके रक्त में वही भेद है जो सफ़ेद और लाल शराब में । पर क्या तुमने समुद्र में ऐन्टोनियो के जहाज़ के डूब जाने की भी कोई

खबर सुनी है ?

गाइलॉक : यह दूसरी बुरी खबर है, क्योंकि इससे ऐन्टोनियो मुझे बड़ा नुकसान पहुँचायेगा, वह तो यारों को उधार दे-देकर ही नंगा हो गया है। वह तो इतना बरबाद हो गया है कि उसमें तो सट्टे की दुकान तक आने की हिम्मत ही नहीं रही है। वहीं वह एक वक्त कितना सजा-धजा, उम्दा-उम्दा कपड़े पहनकर आया करता था, पर उसके पास अब क्या धरा है ? लेकिन मुझे चुका दे बस यही ध्यान रखे। मुझे तो वह अभिशप्त ऋणदाता कहता था। अपने प्रतिज्ञा-पत्र का स्मरण रखे। ईसाई होने के नाते वह तो बिना ब्याज के रुपये उधार दिया करता था। उसे अपने प्रतिज्ञा-पत्र की याद रखनी चाहिये।

बैलैरिनो : अच्छा, मान लो ऐन्टोनियो समय पर तुम्हारा धन न दे सका, तो मुझे विश्वास है कि तुम उसका माँस नहीं काटोगे। उसके माँस का तुम करोगे भी क्या ?

गाइलॉक : मैं उस गोश्त को मछलियाँ पकड़ने के लिये इस्तेमाल करूँगा। अगर और कोई फ़ायदा मुझे नहीं होगा तो कम से कम मेरी वह प्रतिहिंसा तो तृप्त होगी, जो उसके प्रति मेरे मन में पलती आ रही है। उसने अन्य व्यापारियों में मेरे मान को घटाया है और बिना ब्याज के रुपया उधार दे-देकर उसने मुझे बड़ी भारी हानि भी पहुँचाई है। वह तो मेरी हानि पर आनंद मनाता रहा है और मेरे लाभ को तो उसने सदा मज़ाक उड़ाया है। उसने मेरी सफलताओं का विरोध किया है, नीचा गिराया है और वह तो हम यहूदियों को निकृष्ट समझता है। वह मेरे हर व्यापारी मामले में टाँग अड़ाता है, और न सिर्फ़ उसने मेरे दोस्तों को मुझसे दूर कर दिया है, उसने मेरे शत्रुओं को मेरे

विरुद्ध भड़काया भी है। और यह सब किसलिये ? सिर्फ इसलिये कि मैं एक यहूदी हूँ। लेकिन एक यहूदी में और आदमियों से फर्क ही क्या है ? क्या यहूदी के औरों की तरह आँख, हाथ, इंद्रिय, चेतना और इच्छाएँ नहीं होतीं ? क्या वह भी वही खाना नहीं खाता ? क्या वह भी उन्हीं शस्त्रों से घायल नहीं होता ? क्या वह भी उन्हीं रोगों से पीड़ित नहीं होता ? क्या वह भी उन्हीं दवाओं से ठीक नहीं हो जाता ? क्या ईसाइयों की भाँति ही यहूदियों को गर्मी में गर्मी और जाड़ों में सर्दी नहीं लगती ? क्या तुम हममें शस्त्र भोंकते हो तो हमारा लहू नहीं बहता ? क्या तुम्हारे गुलगुली मचाने पर हमें हँसी नहीं आती ? क्या तुम्हारे विष देने पर हम भी ईसाइयों की भाँति ही नहीं मर जाते ? तुम हमें हानि पहुँचाते हो तो क्या हममें प्रतिहिंसा भी नहीं जागनी चाहिये ? यदि हम तुमसे इन सब बातों में मिलते हैं, तो हम अपनी हानि करने वालों से प्रतिशोध लेने में भी तुम्हारे समान ही रहेंगे। यदि यहूदी किसी ईसाई की हानि करता है तो क्या वह बदला नहीं लेता ? लेता है, लेता है ! अगर ईसाई एक यहूदी को नुकसान पहुँचाता है, क्या उसे भी एक ईसाई की भाँति प्रतिशोध नहीं लेना चाहिये ? बदला लेने में मैं तो तुम ईसाइयों के उदाहरण का ही अनुसरण करूँगा। सारे शाप मुझे ग्रस लें यदि मैं ईसाई से प्रतिशोध लेने में कोई कमी दिखाऊँ। मैं भी उन्हीं की भाँति उत्कट घृणा दिखलाऊँगा।

[एक सेवक का प्रवेश]

सेवक : श्रीमान् ! स्वामी एन्टोनियो अब घर पर हैं और आप दोनों से कुछ बातें करना चाहते हैं।

सेलैरिनो : हम तो उन्हें हर जगह ढूँढते फिर रहे हैं।

[ट्यूबॉल का प्रवेश]

सैलैनियो : यह लीजिये । इसकी ही जाति का एक और व्यक्ति आ गया । इन दोनों यहूदियों से बदमाश तीसरा ढूँढ़े से भी नहीं मिलेगा, बशर्त्ते कि शैतान ही खुद अब यहूदी नहीं बन जाये ।

[सैलैनियो, सैलैरिनो और सेवक का प्रस्थान]

शाइलॉक : कहो ट्यूबॉल ! क्या खबर लाये हो जिनोआ से ? क्या मेरी पुत्री वहाँ मिली ?

ट्यूबॉल : मैंने तो जहाँ-जहाँ उसकी खबर सुनी, वहाँ-वहीं गया, पर वह मुझे तो कहीं भी नहीं मिली ।

शाइलॉक : कितना दुर्भाग्य है, क्योंकि वह एक ऐसा कीमती हीरा भी अपने साथ ले गई है जिसे मैंने जर्मनी में फ्रैंकफोर्ट के मेले में २००० ड्यूकैट देकर खरीदा था । कभी भी यहूदी जाति पर अब का-सा अभिशाप नहीं पड़ा । कम से कम मैंने तो अनुभव नहीं किया । २००० सिक्के चले गये, सिर्फ इसलिये कि जैसिका अन्य रत्नों के साथ उस हीरे को भी ले गई ! बहुत कुछ ले गई वह तो ! काश, वह सारे गहने और जवाहिरात पहने हुए आकर मेरे चरणों पर गिर कर मर जाती ! मेरे सारे सिक्के लिये काश वह ताबूत में बंद मेरे पास पड़ी होती । कम से कम इस तरह मेरे सिक्के और मेरे जवाहिरात तो मेरे पास लौट आयेंगे ! लेकिन अभी तक इन भागने वालों का कुछ भी पता नहीं लगा है और उन्हें ढूँढ़ने में ही मेरी बहुत हानि हुई है । बजाय इसके कि इससे मुझे लाभ होता, नुकसान पर नुकसान हो रहा है । चोर ले गया इतना माल ! और अब चोर की ढुँढाई में फिर गया इतना माल ! न कोई तृप्ति, न प्रतिशोध, कोई दुर्भाग्य नहीं जो मेरे कंधों पर नहीं उतरता, कोई आह

नहीं, सिर्फ़ मेरी सांसें और आँसू भी कहीं हैं तो बस मेरी आँखों में।
 ट्यूबॉल : नहीं, तुम्हीं एक अकेले अभागे नहीं हो। मैंने जिनोग्रा में
 सुना था कि ऐन्टोनियो...

शाइलॉक : क्या ? क्या सुना था ? कहो न ? मुसीबत पड़ी है ?
 दुर्भाग्य छाया है ?

ट्यूबॉल : उसका त्रिपोलिस से आने वाला एक जहाज़ डूब गया।

शाइलॉक : हे भगवान ! हे दयालु ! क्या यह सच है ? क्या यह
 ठीक है ?

ट्यूबॉल : उस डूबे जहाज़ के कुछ बचे हुए खलासियों से मैंने बातें
 की थीं।

शाइलॉक : मेरे प्यारे ट्यूबॉल, मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूँ। बड़ी प्यारी
 ख़बर है ? तुम्हें वे लोग जिनोग्रा में मिले थे ?

ट्यूबॉल : हाँ, जिनोग्रा में ही मैंने तुम्हारी लड़की के बारे में सुना था
 कि वह वहाँ एक रात रुकी थी और उसने उसी रात में अस्सी
 ड्यूकैट खर्च कर डाले थे।

शाइलॉक : कितनी निर्ममता से चोट कर रहे हो मुझ पर ! वह धन
 तो मैं सदा के लिये खो चुका। हे भगवान ! एक बँठक में ही
 अस्सी सिक्के लुटा दिये। अस्सी सिक्के !

ट्यूबॉल : जिनोग्रा से मेरे साथ कुछ ऐसे लोग भी आये हैं वेनिस
 तक, जिन्होंने ऐन्टोनियो को कर्ज़ दे रखा है। उन सबका निश्चय
 है कि बहुत शीघ्र ही अब ऐन्टोनियो दिवालिया हो जायेगा।

शाइलॉक : वाह-वाह ! क्या उम्दा ख़बर है। अब मैं उससे अपना
 बदला लूँगा। मैं उसका दिल निकालूँगा। यह सुनकर तो मैं
 सचमुच बहुत खुश हुआ हूँ।

ट्यूबॉल : एक सौदागर ने मुझे एक अँगूठी दिखाई थी जो तुम्हारी

लड़की की थी, जिसे देकर जैसिका ने एक बंदर खरीदा था ।

शाइलॉक : सत्यानाश जाये उसका । ट्यूबॉल ! तुम्हारे शब्द मुझे काटे दे रहे हैं । वह अंगूठी जिस पर वह नीला नग जड़ा था, वह मेरे विवाह के पहले मेरी पत्नी ने मुझे उपहार दिया था । मैं एक बंदर क्या पूरे बंदरों के जंगल के बदले में भी उस अंगूठी को न देता ।

ट्यूबॉल : लेकिन ऐन्टोनियो का तो टाट पलट गया, इसे पक्की बात मानो !

शाइलॉक : जो तुम कहते हो वह बिल्कुल ठीक है । मेरे लिये एक अफसर ढूँढ़ो और दो हफ्ते के लिये उसे मेरे काम के लिये तय कर लो । अगर वह रुपया नहीं चुकाता तो मैं तो उसका हृदय निकालूँगा । एक बार वह वेनिस से निकल जाये तो खूब पैसा पैदा कर सकता हूँ । चलो ट्यूबॉल ! मुझसे पवित्र मंदिर में मिलना, बस वहीं मिलेंगे भूल न जाना ।

[प्रस्थान]

दृश्य २

[बेल्मोन्ट : पोर्शिया के घर का एक कमरा]

[बंसैनियो, पोर्शिया, ग्रेशियानो, नैरिसा और सेवकों का प्रवेश]

पोर्शिया : मैं कहती हूँ, आप तनिक रुकिये न । एक-दो दिन ठहरिये, बाद में डिब्बा चुन लीजिये । क्योंकि अगर शलत चुन लिया तो फिर आप यहाँ रुक थोड़े ही पायेंगे ! इसीलिये ज़रा रुकिये । मुझे न जाने क्यों, लगता है, प्रेम की बात नहीं है, कि आप मुझसे नहीं बिछुड़ेंगे । और आप स्वयं जानते हैं कि ऐसी सलाह से आप यह मतलब नहीं लगायेंगे

कि मैं आपको नहीं चाहती। लेकिन कहीं आप मुझे गलत न समझ जायें। और फिर स्त्री सोचती ही रह जाती है, कह भी तो नहीं पाती। महीने-दो महीने ठहरिये, फिर उस खतरें में हाथ डालिये। मैं ही आपको तरकीब सिखाऊँगी कि आप ठीक डिब्बा कैसे चुनें, पर क्या करूँ यह तो विश्वासघात होगा और यह मैं कभी नहीं करूँगी। हो सकता है, आप मुझे नहीं पा सकें। लेकिन इस खयाल के आते ही मेरी इच्छा होती है कि मैं वह भी कर डालूँ जिसकी कि मुझे आज्ञा नहीं है। अपनी प्रतिज्ञा तोड़ दूँ! बला आये आपकी इन आँखों पर जिन्होंने मुझ पर जादू कर दिया है और मेरे दिल के दो हिस्से कर दिये हैं— एक में आपके प्रति प्रेम है और दूसरे में मेरे स्वर्गीय पिता के प्रति मेरा कर्तव्य! पर जिसे मैं अपना कहती हूँ वह भी तो आपका ही है। मैं तो बिल्कुल आप ही की हो गई। अभिशप्त हैं यह दिन कि स्वामी और उसकी संपत्ति के बीच एक भीत खड़ी है। प्रेम के क्षेत्र में मैं आपकी हूँ। किंतु आपकी स्त्री तो नहीं हूँ। कहीं आपने गलत चुनाव करके मुझे नहीं प्राप्त किया तो भाग्य ही उजड़ गया समझिये! अरे, मैं कितना क्या कुछ नहीं बक गई? पर केवल इसी लिये कि आपको जल्दी चुनाव के इस जंजाल से रोक सकूँ!

सैनियो : पहले मुझे चुनाव करने दो क्योंकि अनिश्चय की परिस्थिति में अधिक दिन तक रुका रहना मेरे लिये संभव नहीं है। इससे तो मेरी यातना बड़ी तीव्र होगी, और मैं लटका ही रहूँगा।

रोशिया : लटके तो देशद्रोही रहते हैं। आओ उस धोखे को स्वीकार करो जो कि तुम्हारे प्रेम से मिला हुआ है।

सैनियो : कोई धोखा भी है, यह न सोचो। मैं तो संदेह के उन भावों

का शिकार हूँ, जो मुझे यह डर दिखाते हैं कि कहीं तुम्हारा प्रेम प्राप्त करने में मैं असफल न रह जाऊँ। मेरे प्रेम में धोखा कहाँ? बर्फ़ और आग क्या मित्रों की भाँति साथ-साथ रह सकती हैं?

पोर्शिया : लेकिन मैं विश्वास नहीं करती। पुरुषों का क्या? अपनी मुसीबत टालने को वे न जाने किस मौके पर क्या कह जाते हैं!

बैसैनियो : यदि तुम जीवन-दान देने का आश्वासन दो; तो मैं असली बात बता सकता हूँ।

पोर्शिया : कहो और जियो!

बैसैनियो : कहूँ और प्रेम करूँ—यही मेरी असली बात का सारा सारांश है। यह कैसी आनंददायिनी यातना है कि मुझे सताने वाला ही मुझसे कहता है कि मैं अपनी वेदना से मुक्त हो जाऊँ? मुझे डिब्बों के पास ले चलो। मैं अपने भाग्य का निर्णय करना चाहता हूँ।

[डिब्बे के सामने से पर्दा खिंचता है।]

पोर्शिया : अच्छी बात है चलो। मैं इनमें से एक में बंद हूँ। यदि तुम मुझसे प्रेम करते हो तो अवश्य मुझे ढूँढ़ निकालोगे। नैरिसा, और सब लोग एक तरफ़ हो जाओ! चुनाव के समय मधुर संगीत होने दो, ताकि यदि ये असफल भी हो गये तो उस हंस के समान संगीत-माधुरी में तन्मय लौट सकें जो कि मरते समय गाता है।^१ और इस तुलना को पूर्ण करने के लिये मेरे नयनों से गिरते अश्रु धारा का काम देंगे। किंतु यदि ये सफल होते हैं तो संगीत ही तूर्य्यनाद हो जायेगा, जैसे कि सिंहासनारोहण करते समय नये राजा के लिये होता है। और यह संगीत उतना ही मधुर होगा, जितना कि सुखनिंदिया से दूल्हे को विवाह के दिन

१. कवि-सत्य—यूरोप में प्रचलित।

के लिये जगानेवाला संगीत होता है। बैसैनियो महावीर हरक्यूलिस की भाँति बढ़ते हैं, किंतु हरक्यूलिस तो केवल योद्धा था, उसमें इनका-सा प्रेम कहाँ था। ठीक वैसे ही जैसे ट्रॉय के राजा लाओमिडॉन की पुत्री हिप्सिओन को उस समय हरक्यूलिस छुड़ाने गया था जब कि ट्रॉय की रोती हुई प्रजा राजकुमारी को समुद्री दैत्य की बलि चढ़ाने जा रही थी। मैं खड़ी हूँ यहाँ उसी हिप्सिओन की भाँति, और यह नैरिसा, यह मेरी सेविकाएँ खड़ी हैं उन ट्रॉय नगरवासिनी स्त्रियों की भाँति जो उस महान् साहसपूर्ण कार्य को अश्रुपूर्ण नयनों से देख रही थीं।

बढ़ो! मेरे हरक्यूलिस! तुम्हारी सफलता पर मेरा जीवन, मेरे जीवन का आनंद निर्भर है। यदि तुम असफल होते हो तो वही मेरे लिये मृत्यु है। मैं इस संघर्ष को तुमसे भी अधिक लगाव से देखूँगी, क्योंकि तुम भी इससे इतने प्रभावित नहीं होओगे।

[बैसैनियो जब डिब्बों का निरीक्षण करता हुआ अपने आप बोलता है, तब संगीत सुनाई देता है।]

[गीत]

क्षणभंगुर अस्थायी चंचल—

प्रेम कहाँ रहता है छिपता ?

मन में, या विचार में बोलो,

कब जन्मा वह कैसे पलता ?

बोलो, बोलो !

नयनों में वह जन्म नया धर

रहता तब तक जीवित निर्भर

जब तक लक्ष्य उसे है दिखता,
 सच्चा प्रेम नहीं यह करता !
 ऐसे छलमय चपल प्रेम को
 दूर हटाओ, दूर हटाओ,
 मैं घंटे अब करूँ निनादित
 चलो बिदा दो उसको आओ !

सब : चलो बिदा दो, उसको आओ !

बैसैनियो : इसी प्रकार वस्तु के वाह्य रूप और आंतरिक रूप एक दूसरे से सुदूर हो सकते हैं। संसार केवल वाह्यरूप से ही प्रतारित होता रहता है। न्यायालय में, जब तर्क नहीं रहता, तब भी वकील के शब्दाडंबर से कुरूप अन्याय छिपा रह जाता है। धर्म के क्षेत्र में कोई भी अनर्गलता क्यों न हो, शास्त्र का प्रमाण देकर सब कुछ को स्वीकार कर लिया जाता है ! कौन-सी कुरीति या बुराई नहीं है जो अपने को किसी अच्छाई के जाल से नहीं ढँकी रहती ? कितने ऐसे कायर, जिनके हृदय धसकती बालू से भी कच्चे होते हैं, देखने में परमवीर हरक्यूलिस की-सी दाढ़ी नहीं रखते, योद्धाग्रह मंगल देवता की भाँति कठोर दृष्टि से नहीं देखते ? किंतु न उसमें साहस होता है, न शक्ति ही। सौंदर्य को ही लें ! कितना ही तो उस शृंगार और प्रसाधन के कारण आकर्षक होता है, चाहे वह सामग्री हाट से कितने ही ऊँचे मोल पर क्यों न खरीदी गई हो। किंतु यह वाह्य शृंगार तो ठोस नहीं होते ! यह तो कृत्रिम सौंदर्य होता है। मिथ्यारूपी के सुनहले साँपों-से लहराते घुँघराले केशों के साथ क्या यह सत्य नहीं होता कि वे किसी मृत स्त्री के ही होते हैं, जिन्हें वह अपने ऊपर लगा लेती है? आभूषण तो एक भयानक समुद्र

के प्रतारण-भरे तीर होते हैं। वह तो उस सुंदर अवगुंठन की भाँति होते हैं जो एक कृष्णवर्ण भारतीय सुंदरी के मुख को ढँके रहते हैं। यह चतुर जाल तो बुद्धिमानों को भी ठग लेते हैं। यह सत्य होते नहीं, सत्य-से लगते अवश्य हैं। इसलिये ओ चमकदार सोने ! अतीत के राजा माइडास के भोजन !^१ मुझे तुझसे कोई काम नहीं। ओ चाँदी ! मनुष्य और मनुष्य के बीच ओ माध्यम के दीन साधन ! मैं तो इस दरिद्र राँगे को चुनूँगा क्योंकि यह कोई भूँठा-सा वादा नहीं करता। इसकी सुस्ती मुझे बुलाती है, न कि सोने और चाँदी की चमक मुझे लुभा सकेगी। मैं इसी को चुनता हूँ, और मुझे लगता है कि यही मुझे सफलता दिलायेगा।

पोर्शिया : (स्वगत) कितनी शीघ्र ही वे संदेहात्मक विचार, आतुर निराशा, काँपता भय, हरी आँखों वाली ईर्ष्या जैसे भाव-विलीन हो गये। आह रे प्रेम ! अपने आनंद पर संयम कर, अपने हर्ष को क्रमशः मेरे मानस पर प्रस्रवित कर। कहीं उसकी अति न हो जाये। विभोर सुख सीमित रह; कहीं मर्यादा का अतिक्रमण न हो जाये।

बैसैनियो : क्या है इसमें ?

[डिब्बा खोल कर]

सुंदरी पोर्शिया का चित्र ! किस दिव्य चित्रकार ने यह अद्भुत सौंदर्य अंकित किया है। क्या यह नयन हिल रहे हैं या मेरे ही हिलते नयनों को यह चल दिखाई दे रहे हैं। यह अधखुले अधर, ऐसा लगता है जैसे इनमें से मधुश्वास निकल रहा

१. माइडास के स्पर्श से हर वस्तु सोना बन जाती थी। जब उसने गर्म खाना मुँह में रखा तो वह सोना बन गया और इस प्रकार मुख जल गया।

है। यही श्वास दो अभिन्न मित्रों को इतनी दूर भो कर सका है। इसी के केश-पाश के चित्रण में मानों एक जाला^१ बुन दिया है चित्रकार ने, कि इस सुवर्ण की-सी झिलमिल में मनुष्यों के हृदय फँस जायें। इतनी शीघ्र कि पतंगे भी नहीं फँसते होंगे। नयनों का वह अंकन भी कैसे करता। एक को बनाते-बनाते ही वह अपने दोनों को भूल चुका होगा। किंतु फिर भी तो यह छाया क्या मूल सौंदर्य की तुलना में रखी जा सकती है? और मेरे शब्द तो इस छाया का भी सौंदर्य पूरी तरह से प्रगट करने में असमर्थ हो रहे हैं। यह क्या लिखा है, मेरे भाग्य की व्याख्या है, या सारांशपढ़ूँ इसे.....

[पढ़ता हूँ ।]

तुम जो कि नहीं भूलते हो देखकर झिलमिल किस्मत के हो बुलंद तुम चुनते हो ठीक ठौर, मिलती है भाग्य से तुम्हें जो चीज यहाँ पर इसमें ही रहो खुश, न कहीं ढूँढना कुछ और, इससे अगर प्रसन्न हो, मन में हो समझते, आनंद प्राप्त कर लिया, बाधा नहीं सहनी, तो देख लो मुड़कर खड़ी जो सुंदरी है पास उसका करो तुम प्रेम से चुंबन समझ अपनी।

क्या बात लिखी है! प्रिये पोशिया! आज्ञा दो कि मैं तुम्हारा चुंबन कर सकूँ। (चुंबन करके) मैं तो लिखित के अनुसार तुम्हारा चुंबन करने आया हूँ और बदले में एक और प्राप्त करने का भी अधिकारी हूँ। मैं तो अपने को एक प्रतियोगिता

१. शेक्सपियर ने मकड़ी का जाला लिखा है, जो अच्छा नहीं लगता।

का पात्र समझ रहा था, जिसमें विजेता को पुरस्कार मिलना था। ऐसा व्यक्ति जब भीड़ को जय-जयकार करते देखता है तब वह समझता है कि वह विजयी हुआ है, किंतु आशा और आशंका में डाँवाडोल वह निर्णय नहीं कर पाता कि वह कोलाहल उसके लिये हो रहा होता है या उसके प्रतिद्वन्द्वी के लिये। ओ सुंदरी ! यही हाल मेरा है, क्योंकि जब तक तुम अपनी अधरों के चुंबन से हस्ताक्षर नहीं करोगी, मुद्रा नहीं लगा दोगी, तब तक अपनी विजय के बारे में मुझमें संदेह ही बना रहेगा।

पोशिया : मेरे स्वामी बैसैनियो ! आप देखते हैं, मैं आपके सामने खड़ी हूँ। जहाँ तक मेरा प्रश्न है, मैं जो कुछ हूँ उसी में संतुष्ट हूँ और कुछ भी अधिक नहीं होना चाहती। किंतु आपके लिये मैं साठ गुना, हजार गुना अधिक सुंदर हो जाना चाहती हूँ, दस हजार गुना धनी हो जाना चाहती हूँ। मैं तो रूप, गुण, धन, और मित्रों, सब कुछ में सर्वश्रेष्ठ हो जाना चाहती हूँ ताकि आपकी दृष्टि में मेरा मूल्य कहीं अधिक बढ़ जाये। किंतु मैं क्या हूँ ? एक अशिक्षित, अयोग्य, और अनुभवहीन बालिका से अधिक तो कुछ भी नहीं। किंतु भाग्य से मैं अभी तरुणी हूँ और सीख सकती हूँ क्योंकि स्वभाव और शिक्षा से मैं सुस्त नहीं हूँ कि मैं सीख ही नहीं सकूँ और आपको मैंने स्वामी रूप में प्राप्त किया है इससे बढ़कर मेरे लिये क्या है ? मुझे पथ-प्रदर्शन करने को आप जैसे गुरु प्राप्त हुए हैं ! अब मैं और जो कुछ मेरे पास है, आप ही उस सबके स्वामी हैं। अभी तक मैं ही इस विशाल भवन की स्वामिनी थी, इन सेवकों की रानी थी, रानी थी अपनी भी, किंतु अब यह भवन, यह सेवक और स्वयं मैं भी आपके हैं प्रभु ! यह अंगूठी आपको देते हुए मैं सब कुछ आपको

देती हूँ । यदि आप इसे खो देंगे या किसी अन्य को दे देंगे तो यह स्पष्ट प्रगट कर देगा कि आप मुझसे और प्रेम नहीं करते और तब मैं आपको इसके लिये तिरस्कार करूँगी ।

बैसैनियो : श्रीमती ! मैं अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिये उपयुक्त शब्द नहीं पा रहा हूँ । आवेग ने मुझे ग्रस लिया है और शब्दों के अभाव ने मुझे और मेरी सारी शक्तियों को संकट में डाल दिया, ऐसे ही जैसे आनंद की सीमा का उपप्लवन हो जाने पर उस समय जैसी लोगों की अवस्था हो जाती है जब वे अपने प्रिय शासक का मधुर भाषण सुनने पर आनंद से उद्वेलित मर्मर करते हैं और तब अनेक स्वरों में उठने वाला वह गुण-गान ध्वनियों के गुंथ जाने से स्पष्ट सुनाई नहीं देता, केवल जय-जयकार-सा प्रगट होता है । यदि यह अँगूठी मेरे पास नहीं रहेगी तो मेरा जीवन भी पास नहीं रहेगा । अरे, स्पष्ट समझ लो कि तब बैसैनियो मर जायेगा ।

वेरिसा : श्रीमती और स्वामी बैसैनियो ! हम जो इतने दिनों से अपनी मनोकामना के पूर्ण होने की प्रतीक्षा कर रहे थे, आप दोनों को हार्दिक बधाई देते हैं । आप दोनों सदैव सुखी रहें ।

रोशियानो : श्रीमान् बैसैनियो और श्रीमती ! मैं आपके मनोवांछित सुखों की कामना करता हूँ, क्योंकि मुझे निश्चय है आप भी मेरे लिये वही कामना करेंगे । जब आपका विवाह हो, मैं प्रार्थना करता हूँ कि मुझे भी तभी विवाह करने को आज्ञा दी जाये ।

बैसैनियो : अवश्य ! यदि तुम पत्नी खोज सको !

रोशियानो : मैं आपको धन्यवाद देता हूँ, वह तो आपकी कृपा से मुझे मिल ही गई । श्रीमान् ! सौंदर्य की परख में आपके ज्ञान जितने कुशल हैं उतने ही मेरे भी । आपने स्वामिनी से प्रेम किया, मैंने

सेविका से और प्रेम के विषय में मैं भी विलंब नहीं चाहता । जिस प्रकार आपके प्रेम की सफलता असली डिब्बे के चुनाव पर निर्भर थी, उसी प्रकार मेरे प्रेम की सफलता आपके द्वारा ठीक डिब्बे के चुनाव किये जाने पर निर्भर थी । मैंने उससे घोर याचना की और इतनी कि मैं थक गया, अंत में उसने मुझसे प्रतिज्ञा की—यदि प्रतिज्ञा का विश्वास किया जा सके—कि वह मुझसे तभी विवाह करेगी जब आप उसकी स्वामिनी से विवाह कर सकेंगे ।

पोर्शिया : नैरिसा ! क्या यह सत्य है ?

नैरिसा : हाँ श्रीमती । है तो सत्य ! अब यदि आप प्रसन्न हों ।

बंसैनियो : क्या तुम सचमुच इस विषय में गंभीर हो ?

प्रेशियानो : हाँ श्रीमान् ।

बंसैनियो : हमारी शादी की दावत तुम्हारी शादी की वजह से कहीं ज्यादा इज्जत हासिल करेगी ।

प्रेशियानो : कौन आ रहा है ? लौरेन्जो और उसकी विधर्मी स्त्री ? और कौन ? मेरा वेनिसवासी पुराना मित्र सैलेरियो ?

[लौरेन्जो, जंसिका और सैलेरियो का प्रवेश]

बंसैनियो : स्वागत लौरेन्जो और सैलेरियो ! आओ ! यदि इस घर का सद्यः प्रभुत्व मुझे अधिकार देता है तो मैं तुम्हारा यहाँ स्वागत करता हूँ और मेरा यह कार्य्य पूर्णतः न्याय्य है । सुंदरी प्रिये पोर्शिया ! आज्ञा दो कि मैं अपने प्रिय मित्रो और स्वदेश-बंधुओं का इस घर में स्वागत करूँ ।

पोर्शिया : उनका स्वागत है स्वामी ! वे हमारे अतिथि हैं ।

लौरेन्जो : मैं श्रीमान् को धन्यवाद देता हूँ । जहाँ तक मेरा प्रश्न है श्रीमान् ! मेरा इरादा यहाँ आपसे मिलने का नहीं था । मुझे

तो योंही सैलैरियो से मिलना था। उसने मुझे ऐसे जोर देकर बुलाया था कि मेरे लिये अस्वीकार करना असंभव हो गया। और मैं उसके साथ ही आ गया।

सैलैरियो : यह ठीक है श्रीमान् ! और इसकी वजह भी थी। श्रीमन्त ऐन्टोनियो ने आपको अपनी शुभ कामनाएँ भेजी हैं।

[बैसैनियो को एक पत्र देता है।]

बैसैनियो : इससे पहले कि मैं उनका पत्र खोलूँ, मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप पहले मुझे मेरे मित्र के बारे में बतायें कि वे सकुशल तो हैं ?

सैलैरियो : नहीं श्रीमान्, वे बीमार नहीं हैं, दिमागी परेशानी की तो मैं क्या कह सकता हूँ? उन्हें शांति और सांत्वना की आवश्यकता है। उनके पत्र से ही आपको उनकी हालत का अंदाजा हो जायेगा।

[बैसैनियो पत्र पढ़ता है।]

ग्रेशियानो : नैरिसा ! आगंतुक का स्वागत करो और उन्हें अपनी ओर से शुभ वचनों का प्रदान करो। सैलैरियो, आओ, मुझसे हाथ मिलाओ। वेनिस से क्या खबर लाये हो? दयालु श्रेष्ठ-राजकुमार ऐन्टोनियो कैसे हैं? मुझे निश्चय है कि वे हमारी सफलता का संवाद सुनकर अत्यंत प्रसन्न होंगे। हम लोग जेसन की भाँति हैं और हमने सुनहली ऊन प्राप्त कर ली है।^१

सैलैरियो : काश, तुम वह सुनहली ऊन हासिल कर पाते जो ऐन्टोनियो ने खो दी है।^२

१. एक प्राप्त कथा का संदर्भ है। यहाँ सुनहली ऊन से पोर्शिया और नैरिसा से तात्पर्य है।

२. यहाँ धन से तात्पर्य है।

पोशिया : इन कागजों में अवश्य कोई बुरी ख़बर है क्योंकि बैसैनियो के चेहरे का रंग उड़ा जा रहा है। क्या कोई प्रिय मित्र स्वर्ग-वासो हुआ, अन्यथा किसी भी दृढ़ पुरुष का धैर्य इतना विचलित करने की सामर्थ्य किसमें है? क्या ख़बर बुरी से बदतर होती जा रही है कि आप इतने पीले पड़ते चले जा रहे हैं? क्षमा करें। बैसैनियो! मैं आपकी अर्द्धांगिनी हूँ, मुझे इस पत्र के संवाद का ज्ञान प्राप्त करने की आज्ञा दीजिये।

बैसैनियो : प्रिये पोशिया! इन कागजों पर कुछ बहुत ही अशुभ अक्षर लिखे हैं। प्रिये, तुम तो ख़ूब जानती हो कि जब मैंने पहली बार तुमसे अपना प्रेम प्रगट किया था तब बिल्कुल स्पष्ट रूप से कह दिया था कि अपने कुलीन जन्म के अतिरिक्त मेरे पास कोई धन नहीं था। जो मैंने कहा था वह बिल्कुल सच था। जब मैंने कहा था मेरे पास कोई संपत्ति नहीं थी, तब मुझे कहना चाहिये था कि मेरी परिस्थिति बहुत ही शोचनीय थी। सचाई तो यह है कि मैंने अपने एक अत्यंत प्रिय मित्र से धन उधार लिया था और मुझे उस समय धन देने के लिये उसे अपने एक घोर शत्रु से उधार लेना पड़ा था। प्रिये! उसी मित्र का यह पत्र है। यह कागज नहीं उसका शरीर है और इस पर अक्षर नहीं लिखे हैं यह उसके शरीर पर हुए वे घाव हैं जिनसे जीवन-दायी रक्त बहा जा रहा है। किंतु सैलेरियो! क्या यह सत्य है कि उनके सारे संपत्ति से लदे जहाज़ विनष्ट हो गये हैं? त्रिपोलिस, मैक्सिको, इंगलैंड, लिस्बन, बार्बरी, भारत इत्यादि विभिन्न स्थानों को गये हुए उनके अनेक जहाज़ों में से क्या एक भी वेनिस नहीं लौटा? क्या भीषण समुद्री चट्टानों से एक भी नहीं बच सका? क्या उन सबका ही लहरों में सर्वनाश हो गया?

सेलैरियो : एक भी नहीं बचा श्रीमन्त बैसैनियो! किंतु सबसे अधिक कष्टकर बात तो यह है कि शाइलॉक उस धन को लेने को भी तैयार नहीं है जो मौजूद है, और ऐन्टोनियो देने को तैयार हैं। मैंने कभी इस यहूदी की भाँति मनुष्य-शरीर में छिपे हिंस्र पशु को नहीं देखा जो कि अपने ही जैसे दूसरे मनुष्य का सर्वनाश करने पर तुल गया हो। वह ड्यूक पर जोर दे रहा है, रात-दिन लगा है कि ऐन्टोनियो के विरुद्ध वे कोई कड़ा कदम उठायें। यदि ऐन्टोनियो को दंड नहीं दिया जाता तो शाइलॉक उन अधिकारों का प्रश्न उठा देगा जो उस जैसे विदेशियों को भी वेनिस के नागरिकों की भाँति प्राप्त हैं। बीस व्यापारी, स्वयं ड्यूक और राजा के सर्वोच्च अधिकारी, सम्मानित पदाधिकारी उससे कह चुके हैं कि वह अपनी माँग हटा ले, किंतु कोई भी सफल नहीं हो सका है कि उसकी ईर्ष्या-भरी माँग को रोक सके, जो न्याय माँगती है और समय पर दस्तावेज़ की कीमत न रख सकने के कुसूर का मोल माँग रही है।

जैसिका : जब मैं अपने पिता के साथ रहती थी, मैंने उन्हें अपनी जाति के कई व्यक्तियों, ट्यूबॉल और चुस से यह जोरदार शब्दों में कहते सुना था कि वे ऐन्टोनियो को दिये रूपयों से बीस गुना धन लेने की अपेक्षा उसके शरीर का आधा सेर मांस लेना कहीं अधिक पसंद करेंगे। अपने पिता को पूरी तरह से जानते हुए, मैं विश्वास दिलाती हूँ कि श्रीमान् ! यदि कानून, राज्य के अधिकारी, और स्वयं ड्यूक की शक्ति उन्हें उनके पथ पर चलने की स्वतंत्रता देंगे तो बिचारे ऐन्टोनियो को दया नहीं मिल सकेगी।

पोर्शिया : क्या यही आपके वे दयालु और उदात्त विचार वाले मित्र

हैं जिन्होंने आपको धन दिया था ? क्या वे ही खतरे में हैं ?

बैसैनियो : वह मेरा अत्यंत प्रिय मित्र है । उसका हृदय बहुत ही दयालु है, उदात्त प्रकृति है, और वह कभी भी करुणा-भरे कार्य करते नहीं हटता । उसमें प्राचीन रोम-निवासियों का गौरव और सम्मान हैं, जैसा आज के इटली में शायद ही किसी में हों ।

पोर्शिया : उन्हें यहूदी को कितना धन देना है ?

बैसैनियो : मेरे कारण उन्हें यहूदी को ३००० सिक्के देने हैं ।

पोर्शिया : केवल तीन हजार ड्यूकैट देने हैं उन्हें यहूदी को ? उसे ६००० सिक्के दे दिये जायेंगे, वह उस लिखा-पढ़ी को रद्द कर दे । मैं उसे १२००० नहीं, १८००० ड्यूकैट तक ऐन्टोनियो जैसे अच्छे मित्र के लिये देने को तैयार हूँ । ऐसे मित्र को आपके कारण तनिक भी कष्ट नहीं सहना चाहिये । किंतु पहले हम सबको गिरजे जाकर विवाह करना चाहिये और तब आपको तुरंत वेनिस, अपने मित्र की रक्षा करने को, जाना चाहिये । मैं तब तक आपके निकट नहीं सोऊँगी जब तक कि आपकी सारी परेशानी दूर नहीं हो जाती । उस छोटे-से ऋण को चुकाने के लिये मैं आपको उस ऋण से बीसगुना ज्यादा धन दूँगी । जब धन दे दिया जाये तब आप अपने मित्र को भी यहीं ले आइये । तब तक मैं और नैरिसा सेविकाओं या विधवाओं की भाँति रहेंगी । शीघ्रता करें और आप यह भी याद रखें कि आपको विवाह के दिन ही वेनिस को रवाना हो जाना है । धैर्य रखिये और अपने मित्रों का उत्फुल्ल स्वागत कीजिये । मैं आपसे बहुत प्रेम करूँगी, क्योंकि मैंने आपको मुश्किल से पाया है । किंतु मुझे अपने मित्र ऐन्टोनियो का पत्र सुनाइये ।

बैसैनियो : (पत्र पढ़ता है) प्रिय बैसैनियो, मेरे सब जहाज नष्ट हैं

गये हैं । मेरे ऋणदाता सब निष्ठुर हो गये हैं और अपना सारा रुपया माँग रहे हैं । मेरे पास उन्हें देने के लिये कुछ भी नहीं है । क्योंकि मैं शाइलॉक को समय पर धन नहीं दे सका, और क्योंकि इसका दण्ड मृत्यु है, इसलिये, मैं उन सब ऋणों को जो तुम्हें मुझे चुकाने हैं, तुम पर से रद्द करता हूँ । किंतु मेरी बड़ी इच्छा है कि मरने के पहले एक बार तुमसे मिल सकूँ । यदि तुम्हारा नया प्रेम तुम्हें आने से रोकता है, तो मेरा पत्र तुम पर व्यर्थ ही दबाव न डाले यही चाहता हूँ ।

पोशिया : हाय रे ! हम अपना कार्य्य तुरंत समाप्त करें और शीघ्र आप वेनिस जाइये ।

बैसैनियो : मैं तुरंत जाऊँगा, क्योंकि तुमने अत्यंत कृपा करके आज्ञा दे दी है । किंतु मैं विश्वास दिलाता हूँ कि मैं वहाँ आवश्यकता से अधिक तनिक भी नहीं ठहरूँगा और तब तक विश्राम नहीं करूँगा जब तक जल्दी से जल्दी लौट न आऊँ ।

[प्रस्थान]

दृश्य ३

[वेनिस - पथ]

[शाइलॉक, बैसैनियो, एन्टोनियो और जेलर का प्रवेश]

शाइलॉक : जेलर ! इसका ध्यान रखना । मुझसे दया की मत कहो ।

यही है वह मूर्ख जो मुफ्त धन उधार देता था । जेलर ! इसको अच्छी तरह देखना । हाँ ! निकल न जाये !

एन्टोनियो : शाइलॉक ! मेरी बात तो सुनो !

शाइलॉक : मुझे तो दस्तावेज की शर्त से मतलब है, उसके विरुद्ध मत बोलना । मैंने कसम खाई है कि शर्त पूरी करवाऊँगा ।

तुमने अकारण मुझे कुत्ता कहा था, और क्योंकि मैं कुत्ता हूँ मेरे दाँतों से सावधान रहो। ड्यूक मुझे न्याय देंगे। मुझे ताज्जुब है ओ अधम जेलर! कि तुम इसकी प्रार्थना पर इसे लेकर बाहर आ गये। क्या तुम इतने मूर्ख हो ?

एन्टोनियो : कृपया मेरी बात तो सुन लें।

शाइलॉक : मुझे शर्त चाहिये। मैं तुम्हारी बात सुनना नहीं चाहता। मुझे शर्त पूरी करवानी है; और इसीलिये मुझसे और बातें मत करो। मैं कोमल और मंद दृष्टि मूर्ख नहीं बन सकता कि सिर हिला दूँ और दया करूँ, आह भरूँ और ईसाई मित्रों के सामने समर्पण कर दूँ। पीछे मत आओ। मैं बात नहीं करना चाहता, मुझे तो शर्त पूरी करवानी है।

[प्रस्थान]

सेलैनियो : मनुष्यों के बीच ऐसा हृदयहीन कुत्ता शायद ही कभी रहा हो!

एन्टोनियो : उसे छोड़ो, चाहे जिस राह पर वह चले। ऐसी निष्फल प्रार्थनाएँ लेकर मैं उसके पास नहीं जाऊँगा। वह मेरा जीवन चाहता है, और मैं खूब जानता हूँ कि वह ऐसा क्यों चाहता है। मेरे पास आकर अपना दुखड़ा रोनेवाले कितने ही व्यक्तियों को मैंने इसके चंगुल से छुड़ाया है। और यही कारण है कि वह मुझसे घृणा करता है।

सेलैनियो : मुझे निश्चय है कि ड्यूक ऐसी शर्त को कभी भी पूरा नहीं होने देंगे।

एन्टोनियो : ड्यूक कानून को तो नहीं रोक सकते। विदेशियों को हमारे साथ वेनिस में समानाधिकार है और यदि उससे उन्हें वंचित किया जाता है, तो राज्य के न्याय-विधान पर बड़ा अभियोग लगेगा। जानते हो न कि नगर का व्यापार और लाभ

सारी ही जातियों और राष्ट्रों से चलता है। इसीलिये जाने भी दो। इन दुखों और हानियों ने मुझे इतना निराश कर दिया है कि कल मेरे हिंस्र ऋणदाता को शायद ही आधा सेर मांस प्राप्त हो। चलो जेलर ! ईश्वर से प्रार्थना करो कि बैसैनियो आ जाये ताकि मैं उसका ऋण चुका दूँ और फिर शांति से प्राण त्याग कर दूँ।

[प्रस्थान]

दृश्य ४

[बेल्मोन्ट : पोशिया के घर का एक कमरा]

[पोशिया, नैरिसा, लौरेंजो, जंसिका और बॉलथाजर का प्रवेश]

लौरेंजो : श्रीमती ! यद्यपि मैं आपके सामने ही कहता हूँ कि आपके विचार अत्यंत उदार और उदात्त हैं, बल्कि आपको पवित्र प्रेम का भी पूरा ज्ञान है, आप इसे मेरी चाटुकारिता न समझें। अपने पति की अनुपस्थिति में भी जो उत्फुल्लता आपने प्रदर्शित की है वह निश्चय ही स्तुत्य है। किंतु यदि आपको मालूम होता कि जिसके प्रति आप इतनी दया दिखा रही हैं वह कितना महान् है, और आपके पति का उससे कितना गहरा स्नेह है, तो मैं निश्चय से कह सकता हूँ कि उसके प्रति कष्टना दिखाने में आपको कहीं अधिक हर्ष और गर्व होता। यदि यही आप किसी साधारण व्यक्ति के प्रति करतीं, तो उसमें आपको इतना आनंद नहीं होता।

पोशिया : मैंने कभी किसी का भला करने पर शोक नहीं किया, न अब करती हूँ। मुझे निश्चय है कि जो मनुष्य प्रेम के बंधन में दृढ़ता से बंधे रहते हैं और एक दूसरे के साथ समय को सुख से

बिताते हैं, वे सूरत-शकल, तमीज़ और स्वभाव में भी बहुत मिलते-जुलते हैं। और यही मुझे इस निष्कर्ष पर पहुँचाता है कि मेरे पति के अत्यंत प्रिय मित्र ऐन्टोनियो भी उन्हीं के समान उदात्त भाव वाले और योग्य होंगे। यदि यह सत्य है तो मैंने पति के एक मित्र की रक्षा में बहुत कम गँवाया है। लेकिन मुझे डर है कि कहीं मैं खुद ही तो अपनी तारीफ़ नहीं कर रही हूँ, इसलिये इस बारे में तो मैं बोलूंगी ही नहीं। देखो लौरैन्जो ! जब तक बैसैनियो नहीं लौटते तब तक तुम ही इस घर की देख-भाल करना। जहाँ तक मेरा सवाल है मैंने यह व्रत लिया है कि नैरिसा के साथ तब तक चिंतन और प्रार्थनाओं में समय निकालूंगी जब तक बैसैनियो और ग्रेशियानो लौटकर नहीं आ जाते। यहाँ से दो मील दूर एक गिरजा है, हम वहीं रहेंगी। मैं प्रार्थना करती हूँ कि आप यह कर्त्तव्य सँभालें और परिस्थितिवश ही आपके प्रति जो मेरा स्नेह है, आपसे यह अनुरोध कर रहा है।

लौरैन्जो : श्रीमती ! मैं सहर्ष यह कार्य्य करूँगा और आपकी दयालु आज्ञा का पालन करूँगा।

पोर्शिया : मैंने इसके बारे में अपने सेवकों को आदेश भी दे दिये हैं और वे आपको और जैसिका को स्वामी-स्वामिनी के रूप में ही देखेंगे, जब तक मैं और बैसैनियो लौट नहीं आते। अच्छा तो बिदा ! फिर मिलेंगे !

लौरैन्जो : ईश्वर करे आपका समय सुख से बीते।

जैसिका : आपकी मनोकामनाएँ पूर्ण हों !

पोर्शिया : मैं आपको इस वाञ्छा के लिये धन्यवाद देती हूँ और चाहती हूँ कि यही आपको भी मिले। अच्छा जैसिका ! बिदा ! (जैसिका और लौरैन्जो का प्रस्थान) हाँ, बॉलथाज़र ! मैंने तुम्हें हमेशा

ईमानदार और सच्चा ही पाया है, और आशा है आगे भी ऐसा ही पाऊँगी। यह पत्र लो और जितने शीघ्र जा सको मेरे भाई डॉक्टर बैलारियो के पास चले जाओ और जो भी वस्त्र और कागज़ वे दें उन्हें लेकर शीघ्रातिशीघ्र चले आओ और वह है न नावों का घाट, जहाँ वेनिस से यहाँ तक आने-जाने वाली नावें इकट्ठी होती हैं, वहीं तुरंत आ जाओ। बातों में समय नष्ट न करना। फौरन जाओ। मैं तुमसे पहले ही घाट पर पहुँच जाऊँगी।

बॉलथाज़र : श्रीमती ! जितनी जल्दी जा सकूँगा जाऊँगा।

[प्रस्थान]

पोर्शिया : चलो नैरिसा ! मेरे दिमाग में कुछ योजना है और अभी तक मैंने तुम्हें उसके बारे में कुछ भी नहीं बताया है। हम अपने पतियों के पास कहीं पहले पहुँच जायेंगी इतने पहले कि हमारी उपस्थिति उतनी शीघ्र सोचते भी न होंगे।

नैरिसा : लेकिन क्या वे हमारी उपस्थिति को वहाँ जान भी नहीं पायेंगे ?

पोर्शिया : हाँ ! वे हमें जिन वस्त्रों में देखेंगे, उनसे वे हमें स्त्री नहीं, पुरुष समझेंगे। जब हम दोनों दो नवयुवक बनेंगे, मैं शर्त बद कर कह सकती हूँ कि मैं ही अधिक फुर्तीली लगूँगी और मैं ही बड़े जोम से कटार भी लगाऊँगी। लड़कपन से जवानी में पाँव रखनेवाले तरुण के नये ही भारी होते स्वर में मैं बात करूँगी। ऐसे मदनिले लंबे कदम रख कर चलूँगी कि औरतों के तो दो कदम समा जायेंगे एक में ! लड़ाई, भगड़ों, द्वंद्वों की तो बढ़-बढ़कर बातें करूँगी और उच्च कुल की स्त्रियों ने किस प्रकार मेरा प्रेम जीतने का प्रयत्न किया इसके बारे में तरह-तरह के झूठे प्रेम के किस्से गढ़-गढ़कर सुनाऊँगी कि मैंने उनके प्रेम को ठुकरा

दिया और वे बीमार पड़कर मर गईं और तब मैं कुछ नहीं कर सका। फिर मैं शोक करूँगी, कि कहीं अच्छा होता गर मैं उनकी मृत्यु का कारण नहीं बनता। ऐसी ही छोटी-मोटी बीसियों भूँठें बोलूँगी कि जो सुनेंगे वे समझेंगे कि हाल ही में स्कूल से निकला हुआ कोई लड़का है। मैं ऐसे अक्खड़ स्कूल के लड़कों की हज़ारों चालबाज़ियाँ जानती हूँ और देख लेना उन्हीं को वहाँ दिखाऊँगी। अब चलो। मैं तुम्हें गाड़ी में अपनी पूरी योजना सुनाऊँगी। गाड़ी बाग के दरवाज़े पर हमारा इंतज़ार कर रही है। अब जल्दी करो, क्योंकि हमें दिन में बीस-बीस मील तक का सफ़र हर रोज़ तय करना है।

[प्रस्थान]

दृश्य ५

[वही : बाग]

[लॉन्सलौट और जैसिका का प्रवेश]

लॉन्सलौट : हाँ, आपको यह ध्यान में रखना चाहिये कि माँ-बाप के पाप संतान पर ही उतरते हैं। मुझे डर है कि कहीं अपने कुटिल पिता के कारण आप पर आँच न आवे, मैं सदैव आपसे बहुत स्पष्टवादी रहा हूँ और अब भी वैसे ही बातें कर रहा हूँ। साहस रखिये, क्योंकि मुझे लगता है कि आप पर सदा के लिये विनाश बरसने वाला है।

जैसिका : किंतु मैं अपने पति द्वारा बचा ली जाऊँगी, जिन्होंने मुझे ईसाई बना लिया है।

लॉन्सलौट : हाँ-हाँ, तुम्हें ईसाई बनाने के कारण तो उनपर भी अभि-

योग लगेगा । हम पहले ही काफ़ी ईसाई थे, इतने कि काफ़ी खुशी से मिल-जुलकर रह सकते थे । अगर इस तेज़ी से लोग ईसाई बनाये गये मुझे विश्वास है कि सूअर के गोश्त की कीमत चढ़ जायेगी और अगर सब ईसाई सूअर का मांस खाने लगे तो कुछ दिन बाद किसी भी कीमत पर सूअर का मांस तो मिलना ही बंद हो जायेगा ।

जसिका : मैं अपने पति को इसकी सूचना दूंगी लॉन्सलौट ! क्या कहते हो ! वे आ रहे हैं ।

[लोरेन्जो का प्रवेश]

लोरेन्जो : अगर तुम इसी तरह मेरी पत्नी से एकांत में बातें करते रहे लॉन्सलौट ! तो मुझे तुमसे ईर्ष्या होने लगेगी ।

जसिका : नहीं लोरेन्जो ! तुम्हें किसी डर की ज़रूरत नहीं । हम तो भगड़ रहे हैं । यह मुझसे साफ़-साफ़ कहता है कि मेरे लिये ईश्वर की ओर से कोई दया नहीं है, क्योंकि मैं यहूदी की बेटा हूँ । और यह कहता है कि तुम ईसाई बिरादरी के अच्छे सदस्य नहीं हो, क्योंकि तुम यहूदियों को ईसाई बनाकर सूअर के गोश्त की कीमत चढ़ा रहे हो !

लोरेन्जो : (लॉन्सलौट से) चलो भीतर ! जाकर कहो, खाने की तैयारी करें ।

लॉन्सलौट : वह तो तैयार है श्रीमान् ! उन सबके अपने पेट हैं ।

लोरेन्जो : कैसा बातूत आदमी है ! जाओ खाना तैयार करने को कहो ।

लॉन्सलौट : वह भी हो गया श्रीमान् ! केवल ढँकने* की कसर है ।

लॉरेन्जो : तो जा के ढँको* न ?

लॉन्सलौट : नहीं श्रीमान् ! मैं तो अपना काम जानता हूँ ऐसी गलती कैसे करूँ !*

लॉरेन्जो : अब बक-बक बंद करो । अपनी सारी अकल का पिटारा क्या इसी वक्त खोल दोगे ? मेरे लफ्जों का सीधा-सादा मतलब निकालो ! अपने साथी नौकरों में जाओ और उनसे कहो कि मेज़ बिछा दें, दस्तरखानों से ढँक दें और गोश्त परोसें, हम खाने आते हैं ।

लॉन्सलौट : अच्छा सरकार ! मेज़ लग जायेगी और गोश्त ढँक जायेगा, लेकिन खाने आना तो आपकी मर्जी और शौक पर ही निर्भर है ।

[प्रस्थान]

लॉरेन्जो : कैसी लफ्काजी है ! लफ्जों से खेलता है । इसके दिमाग में बड़े-बड़े शब्द भरे हुए हैं । और मैं कई बेवकूफों को जानता हूँ जो इससे कहीं ऊँचे पदों पर जीवन में आसीन हैं, वे भी बहुत शब्द जानते हैं किंतु नहीं जानते कि उनका प्रयोग कैसे करें । कहो प्रिये जैसिका ! क्या हाल है ? बैसैनियो की पत्नी तुम्हें कैसी लगी ?

जैसिका : उसकी प्रशंसा करने को मेरे पास समर्थ शब्द नहीं है । यह

*अंगरेजी में Cover शब्द है । पहले अर्थ में दस्तरखान से ढँकना है । दूसरे अर्थ में भी वही है किंतु तीसरे स्थान पर लॉन्सलौट Cover का अर्थ अपना टोप लगाने से लेता है । यूरोप में नौकर मालिक के सामने सिर नहीं ढँकते, वह मालिक की बेइज्जती समझी जाती है । शेक्सपियर ने दो अर्थ का शब्द प्रयोग किया है, जिसका हिंदी में पर्याय नहीं मिलता ।

तो उचित ही है कि श्रीमान् बैसैनियो अब कायदे की जिंदगी बितायें । उन्हें तो पोर्शिया जैसा रत्न मिलने पर यह पृथ्वी स्वर्ग का-सा आनंद देगी । यदि वे इस पृथ्वी पर अब भलमनसाहत से नहीं रह सकते, तो बहुत मुमकिन है कि उन्हें स्वर्ग में भी जगह न मिले । यदि दो देवता इस पृथ्वी की दो स्त्रियों के लिये प्रतिद्वन्द्विता में पड़ जायें और पोर्शिया उन दो स्त्रियों में से एक हो तो उस दूसरी स्त्री में अवश्य कुछ जोड़ना पड़े ताकि वह पोर्शिया की बराबरी में खड़ी हो सके, क्योंकि पोर्शिया की बराबरी तो कोई स्त्री कर ही नहीं सकती ।

लौरेन्जो : जिस प्रकार पोर्शिया अपनी सानी नहीं रखने वाली पत्नी है, उसी प्रकार मुझमें भी तुम्हें एक लासानी पति मिला है ।

जैसिका : ज़रा ठहरो ! पहले अपने बारे में मेरी राय तो सुन लो ।

लौरेन्जो : जरूर सुनूँगा , पर पहले खाने तो चलो ।

जैसिका : नहीं, इस वक्त मैं प्रसन्न हूँ, इसीलिये मुझे ज़रा तुम्हारा प्रशंसा कर लेने दो !

लौरेन्जो : नहीं अभी नहीं । खाते वक्त कह लेना, तब जो भी तुम कहोगी, और चीजों के साथ मैं उसे भी पचा जाऊँगा ।

जैसिका : अच्छी बात है । मैं वहीं तुम्हारी तारीफ़ करूँगी ।

[प्रस्थान]

चौथा अंक

दृश्य १

[बेनिस—न्यायालय]

[ड्यूक, बेनिस के राजकुलीन व्यक्ति, बेसैनियो, प्रेशियानो और सैलैनियो तथा अन्यो का प्रवेश]

ड्यूक : क्या ऐन्टोनियो यहाँ उपस्थित है ?

ऐन्टोनियो : जी हाँ महानुभाव !

ड्यूक : मुझे तुम्हारे लिये खेद है, तुम एक पाषाण हृदयवादी को उत्तर देने आये हो जो कि अमानुषिक अधम है, जो दयाहीन है, और जिसमें करुणा की एक बूंद भी शेष नहीं है।

ऐन्टोनियो : मैंने महानुभाव के उन प्रयत्नों के विषय में सुन लिया है जिनसे आपने उसके हृदय की कठोरता को कम करने की चेष्टा की है। पर क्योंकि यह अडिग हो रहा है, और उसकी घृणा से मुझे कानून नहीं बचा सकता, मैंने उसके क्रोध के सामने समर्पण करना स्वीकार कर लिया है और अब मैं धैर्य के कवच से उसकी कठोरता, अत्याचार और क्रोध को सहन करूँगा।

ड्यूक : कोई जाओ और यहूदी को न्यायालय में बुलाओ।

ऐन्टोनियो : वह द्वार पर ही खड़ा है। लीजिये श्रीमान् ! वह आ गया।

[शाइलॉक का प्रवेश]

ड्यूक : रास्ता छोड़ो। शाइलॉक को हमारे सामने खड़ा होने दो।

शाइलॉक ! संसार समझता है, और मैं भी समझता हूँ कि तुम

केवल अंतिम क्षण तक अपनी निष्ठुरता का इस प्रकार प्रदर्शन कर रहे हो, और अंत में करुणा और दया तुम्हारे हृदय में उत्पन्न होंगी और तुम्हारे घृणा-प्रदर्शन से भी अधिक आकर्षक बन जायेंगी। हमें आशा है कि अंत में न केवल तुम इस अभागे व्यापारी के शरीर से अपनी आधा सेर मांस की माँग को छोड़ दोगे, वरन् करुणा और दया की भावना से उद्वेलित होकर, ऐन्टोनियो को दिये मूलधन में से भी कुछ क्षमा कर दोगे। हमें निश्चय है कि तुम ऐन्टोनियो से सहानुभूति जताओगे क्योंकि उसने भारी हानि सही है और एक के बाद दूसरी विपत्ति उसे दबाती चली गई है। यद्यपि एक समय व्यापारियों में वह राजकुमार था, किंतु इस समय वह बिल्कुल बरबाद हो चुका है, और अब उसकी हालत ऐसी है कि अत्यंत कठोर और पाषाण हृदय तथा निष्ठुर हृदय भी उसे देखकर पसीज उठे; यहाँ तक कि हठी तुर्क और तातार जो किसी के प्रति दया नहीं दिखाते वे भी इसे देखकर विचलित हो सकते हैं। हम तुमसे सहानुभूतिपूर्ण शब्द सुनने की आशा करते हैं शाइलॉक !

शाइलॉक : मैं जो चाहता हूँ वह महानुभाव की सेवा में पहले ही निवेदन कर चुका हूँ। मैंने अपने पवित्र रविवार* की सौगंध खाई है कि इस शर्तनामे के हिसाब से जो मुझे मिलना है, उसे पूरी तरह से वसूल करूँगा। यदि आप मेरी कानूनी माँग को ठुकराते हैं तो आप अपने नगर के न्याय, कानून और नागरिक स्वतंत्रता के अधिकारों को ही ठुकराते हैं। आप मुझसे पूछते हैं कि मैं बेकार के गोश्त में से आधा सेर क्यों लेना चाहता हूँ,

*यहूदियों में रविवार को काम भी नहीं करते—वह पवित्र दिन माना जाता है।

तीन हजार ड्यूकैट क्यों नहीं ले लेता ? मैं इस प्रश्न का उत्तर देने को तैयार नहीं हूँ । मैं तो कहता हूँ कि यह मेरी तबियत है । मान लीजिये मेरे घर में चूहों की बहुतायत है और मैं उन्हें मरवाने को दस हजार ड्यूकैट खर्च करना चाहता हूँ, इससे किसी को मतलब क्या ? क्या इस उत्तरसे आपका काम चलता है ? कुछ लोग पतली आवाज़ में बोलता सूअर पसंद नहीं करते । कुछ तो बिल्ली देखकर पागल हो उठते हैं, और कुछ ऐसे हैं जो धौंकनी के बाजे को आवाज़ भी नहीं सुन सकते । मनुष्य सदैव ही तर्क और विवेक से वस्तुओं को पसंद-नापसंद नहीं करता, बल्कि वह भावों से परिचालित होता है, जो उसे नचाते हैं । कोई नहीं बता सकता कि क्यों किसी को सूअर का पुकारना बुरा लगता है । क्यों दूसरे को एक मासूम बिल्ली को देखकर पागल होने की धुन समाती है और क्यों कोई और आदमी धौंकनी के ऊनी कपड़े में लिपटे बाजे को नहीं चाहता । मामूली बातों से चिढ़कर वे ऐसे विरोधी भावों की अभिव्यक्ति करते हैं, जो समझाई नहीं जा सकती । इसी प्रकार मैं भी नहीं बता सकता कि ऐन्टोनियो के प्रति मेरे हृदय में इतनी घृणा क्यों है और इसीलिये शर्त्तनामे के पूरे न होने के कारण मैं उसका दण्ड माँग रहा हूँ, हालाँकि इसमें मेरी ३००० ड्यूकैट की हानि है ! क्या यह उत्तर आपको संतोष देता है ?

बेंसैनियो : ओ निष्ठुर हृदय यहूदी ! यह तो अपनी निर्दयता को न्याय्य बनाने का कोई तर्क नहीं है ।

शाइलॉक : मैं तुम्हें उत्तर देकर संतुष्ट करने को बाध्य नहीं हूँ ।

बेंसैनियो : क्या सब मनुष्य उस सबको मार डालने की इच्छा करते हैं जिसे वे नहीं चाहते ?

शाइलॉक : अगर एक आदमी किसी चीज़ से नफ़रत करता है तो क्या यह उसको बरबाद कर देना नहीं चाहते ?

बैंसनियो : विरोध की प्रत्येक भावना तुरंत ही ऐसी घोर घृणा की मंजिल पर नहीं पहुँच जाती ।

शाइलॉक : क्या तुम एक ही साँप को अपने को दो बार डस लेने दोगे ?

एन्टोनियो : कृपया यह याद रखें कि आप शाइलॉक से तर्क कर रहे हैं । आप समुद्र-तीर पर खड़े होकर उत्ताल तरंगों को आज्ञा दे सकते हैं कि लहरें अपनी गति की ऊर्ध्व सीमा तक नहीं जायें, आप एक भेड़िये से पूछ सकते हैं कि वह मेमने को क्यों खा गया , आप पर्वत पर उगे चीड़ के वृक्षों को आज्ञा दे सकते हैं कि वे तूफ़ान के झकोरों में भी मर्मर न करें, आप ऐसे और असंभव कार्य भी कर सकते हैं, किंतु इस आक्रोशग्रस्त व्यक्ति के यहूदी-हृदय को नर्म करने में सफलता प्राप्त नहीं कर सकते । इसलिये मैं आपसे अनुनय करता हूँ कि आप इसका हृदय परिवर्तित करने की व्यर्थ चेष्टा नहीं करें । मेरे विरुद्ध आदेश निकलने दीजिये । ऐसी स्पष्ट और मुखर घोषणा, जो न्याय के अनुसार उचित हो, और यहूदी की इच्छा को पूर्ण करे ।

बैंसनियो : शाइलॉक ! मैं तुम्हारे ३००० सिक्कों के स्थान पर तुम्हें ६००० सिक्के देने को तत्पर हूँ ।

शाइलॉक : तीन हजार सिक्के नहीं, अगर तुम ३६००० सिक्के भी दो, तो भी मैं लेने को तैयार नहीं हूँ । मुझे अपने शर्तनामे की सज़ा चाहिये और मैं कुछ नहीं चाहता ।

ड्यूक : जब तुम स्वयं दूसरों के प्रति दयाविहीन हो, तब स्वयं परमात्मा से दया की आशा कैसे कर सकते हो ?

शाइलॉक : परमात्मा के किस न्याय से भयभीत होऊँ मैं? मैंने क्या

पाप किया है ? तुममें से कितनों ही ने गुलाम खरीद रखे हैं । और तुम उनसे नीचे से नीचे दर्जे का काम भी लेते हो । तुम उन्हें अपने गधों, कुत्तों और खच्चरों की तरह गुलामी के कारण काम में लाते हो । क्यों ? सिर्फ इसलिये कि तुमने उन्हें खरीदा है । क्या मैं कहूँ कि तुम उन्हें छोड़ दो ? उन्हें आजाद कर दो ? अपने उत्तराधिकारियों से उनका विवाह कर दो ? तुम्हारे बोझों के नीचे उनका पसीना क्यों बहे ? क्यों न उनके बिस्तर भी तुम्हारे बिस्तरों की तरह गुदगुदे और मुलायम हों ? तुम्हारे स्वादिष्ट भोजनों से उनके भी हलक तर क्यों नहीं रहें ? तुम कहोगे—गुलाम हमारे हैं । और यही मेरा भी जवाब है । मैं जो इसका आधा सेर गोश्त माँगता हूँ, यह भी मैंने बहुत बड़ी कीमत पर खरीदा है । यह मेरा है और मैं उसे लेकर रहूँगा । अगर आप मुझसे इंकार करते हैं, तो आपके न्याय को धिक्कार है ! वेनिस के कानून में असलियत नहीं, वे लागू भी नहीं होते ! मैं इंसान के लिये खड़ा हूँ ! जवाब दीजिये ! जो मैं माँग रहा हूँ वह मुझे मिलेगा ?

ड्यूक : अपने में निहित अधिकारों के अनुसार मैं इस कचहरी को बर्खास्त कर दूँगा यदि योग्य वकील डॉक्टर बैलारियो आज नहीं आ जाते । मैंने उन्हें इस मामले में राय देने को बुलवाया है ।

सैलैरिनो : आदरणीय ! योग्य वकील के कुछ पत्र लेकर एक दूत अभी पदुआ से आया है, वह बाहर प्रतीक्षा कर रहा है ।

ड्यूक : दूत को आने दो और पत्रों को मेरे पास भेजो ।

सैसैनियो : निराश न हो एन्टोनियो ! अरे पुरुष हो ! धैर्य छोड़ते हो ? चिंता मत करो ! तुम्हारे रक्त की एक बूंद गिरने के पहले ही इस यहूदी को मैं अपना मांस, हड्डी और रक्त सब सौंप दूँगा ।

एन्टोनियो : मैं गल्ले की एक बीमार भेड़ की तरह हूँ और मैं ही मरने के सबसे अधिक योग्य हूँ । कमजोर फल ही सबसे पहले धरती पर गिर जाता है । जितनी जल्दी हो सके मुझे ही मरने दो । बैसेनियो ! तुम्हारे लिये जिंदा रहना ही ज्यादा अच्छा है ताकि मेरी कब्र पर अंतिम बात लिख सको ।

[नैरिसा का एक वकील के क्लर्क के पुरुष-वेश में प्रवेश]

ड्यूक : क्या तुम पदुग्रा से डॉक्टर बैलारियो के पास से आ रहे हो ?

नैरिसा : जी श्रीमान् ! मैं पदुग्रा से डॉक्टर बैलारियो के पास से ही आ रहा हूँ । उन्होंने आपको प्रणाम कहा है ।

[पत्र देता है ।]

बैसेनियो : शाइलॉक ! तुम इतने मनोयोग और आतुरता से अपना चाकू क्यों तेज कर रहे हो ?

शाइलॉक : उस दिवालिये से जमानत चुकाने के लिये ।

प्रेशियानो : तुम अपनी एड़ी पर नहीं, आत्मा पर ओ निर्मम यहूदी ! अपने चाकू को पंना कर रहे हो ! किंतु कोई भी धातु, यहाँ तक कि बधिक का परशु भी तुम्हारी घृणा की धार की आधी तेजी भी अपने में नहीं ला सकता । क्या कोई भी याचना तुम्हारे हृदय में अपना पथ नहीं बनाती ?

शाइलॉक : तुम सोच सको ऐसी तो मुझे कोई नजर ही नहीं आती ।

प्रेशियानो : तुम्हारा सर्वनाश हो ! ओ हृदयहीन कुत्ते ! जो न्याय तुम्हें जीवित रहने का अधिकार देता है, वह न्याय नहीं स्वयं वही अन्याय है । तुम्हारा जीवन और तुम्हारा चरित्र देखकर मेरा विश्वास ईसाई धर्म से डिगा जाता है ।^१ बल्कि मुझे तो

१. ईसाई पुनर्जन्म नहीं मानते ।

उस प्राचीन यूनानी दार्शनिक पाइथागोरस का सिद्धांत ही ठीक लगता है कि मनुष्य की देह में पशुओं की आत्मा भी अपना जन्म लेती है। तुम्हारी घृणा-भरी आत्मा पहले अवश्य किसी भेड़िये में रह चुकी है। और जब मनुष्य को मारने के कारण वह भेड़िया वध्यस्थान में था, वह निर्दय आत्मा उसमें से भाग निकली और तुम्हारे शरीर में घुस गई, उसी समय जब कि तुम अपनी माता के गर्भ में सो रहे थे। तुम्हारी इच्छाएँ भयानक, वीभत्स, निर्मम, क्रूर और भेड़िये की भाँति हिंस्र हैं।

शाइलॉक : जब तक तुम शर्तनामे की मोहर नहीं हटा सकते, तुम इतना चित्लाकर बेकार अपने फेफड़ों को दुखा रहे हो नौजवान ! होश में आओ ! वर्ना फिर तुम्हारे इस दिमाग का कोई इलाज भी नहीं हो पायेगा। मैं यहाँ इंसाफ के लिये खड़ा हूँ।

इयूक : बेलारियो का पत्र एक तरुण और अति विद्वान डॉक्टर को हमारे न्यायालय में भेजता है। वह कहाँ है ?

नैरिसा : वे निकट ही हैं। वे इसी को जानना चाहते हैं कि आप उन्हें भीतर घुसने की आज्ञा भी देंगे या नहीं ?

इयूक : अवश्य ! सहर्ष ! तुममें से तीन-चार आदमी बाहर जाओ और उन्हें न्यायालय में ससम्मान ले आओ। तब तक न्यायालय में बेलारियो का पत्र पढ़ा जाये।

क्लर्क : (पढ़ता है।) श्रीमंत से सविनय निवेदन है कि आपका पत्र प्राप्त हुआ। इस समय मैं बहुत अस्वस्थ हूँ। किंतु जिस समय आपका दूत आया है, उस समय ही रोम से एक तरुण डॉक्टर मित्र मुझसे मिलने आये हुए हैं। उनका नाम बॉलथाज़र है। मैंने उन्हें यहूदी और व्यापारी ऐन्टोनियो के भगड़े के बारे में बताया। हमने साथ-साथ कई किताबें देखीं। उन्हें मैंने अपनी

राय बताई है और फिर उनकी अपनी विद्वत्ता है, जो उस पर सान चढ़ा देगी। उनके ज्ञान की महानता के बारे में क्या कहूँ? मेरी प्रार्थना पर वे श्रीमान् के यहाँ मेरा स्थान भरने के लिये आ रहे हैं। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि उनकी आयु को कम समझने के कारण कहीं ऐसा न हो कि उनके सम्मान में किसी प्रकार की त्रुटि हो जाये। मैंने तो इतनी कम आयु में कहीं इतनी विद्वत्ता नहीं देखी। मैं श्रीमान् से निवेदन करता हूँ कि उन्हें स्वीकार करें और फिर वे स्वयं ही जो कुछ करेंगे, उसी से उनकी वास्तविकता प्रगट हो जायेगी, मैं और क्या कहूँ?

ड्यूक : आप सबने डॉक्टर बैलारियो का पत्र सुन लिया है। और मैं समझता हूँ कि डॉक्टर आ गये हैं।

[पोशिया का न्याय के डॉक्टर-वकील के रूप में पुरुष-वेश में प्रवेश]

ड्यूक : इधर आइये। आइये हाथ मिलायें। क्या आप ही वृद्ध बैलारियो की ओर से आये हैं?

पोशिया : जी हाँ श्रीमंत !

ड्यूक : आपका हार्दिक स्वागत है। कृपया बैठिये। मैं समझता हूँ कि आज हमें जिस भगड़े का इंसालफ़ करना है उससे आप पूरी वाक-फ़ियत रखते है ?

पोशिया : हाँ श्रीमंत ! मुझे पूरा मामला मालूम है। कौन-सा व्यक्ति एन्टोनियो है, और शाइलॉक कौन है ?

ड्यूक : एन्टोनियो और शाइलॉक ज़रा आगे बढ़ आयें।

पोशिया : क्या तुम्हारा नाम शाइलॉक है ?

शाइलॉक : हाँ, मेरा नाम शाइलॉक ही है।

पोशिया : तुम एक बहुत अस्वाभाविक मांग प्रस्तुत कर रहे हो शाइलॉक ! किंतु वह कानून के हिसाब से उचित है। अगर तुम

डटे रहोगे तो वेनिस का कानून उसे रोक नहीं सकता । (एन्टोनियो से) तुम इसके अधिकार में हो और यह तुम्हारी हानि कर सकता है, यही बात है न ?

एन्टोनियो : यह यही कहते हैं ।

पोर्शिया : तुम शर्तनामे को मंजूर करते हो ?

एन्टोनियो : करता हूँ ।

पोर्शिया : तब तो यहूदी को ही दयावान होना पड़ेगा ।

शाइलॉक : मुझ पर ऐसा क्या दबाव है ? ज़रा मैं भी तो सुनूँ !

पोर्शिया : करुणा एक ऐसा गुण है जिसका प्रयोग बल के द्वारा नहीं हो सकता । वह तो मनुष्य के हृदय में वैसे ही जाग्रत होती है, जैसे आकाश के मेघों से रस द्रवित होता है । करुणा तो दोनों पक्षों के लिये श्रेयस्कर है । जो करता है वह भी श्रेष्ठ है, जो पाता है वह तो उसका फल प्राप्त करता ही है । करुणा सशक्तों में भी सशक्त है, उससे महती कोई शक्ति नहीं । सिंहासनस्थ सम्राट् के राजमुकुट से वह ज्योति विकीर्ण नहीं होती, जो उसकी करुणा से होती है । राजदण्ड तो पार्थिव शक्ति का प्रतीक है, उससे वैभव और आतंक प्रदर्शित होता है, उससे शक्ति और बल का भय प्रगट होता है; किंतु करुणा राज-शक्ति से भी ऊँचा स्थान रखती है । वह तो सम्राटों के हृदय में वास करती है, वह तो एक दैवी शक्ति है, ईश्वरीय गुण है । यही पार्थिव शक्तियाँ उस समय दैवी बन जाती हैं जब न्याय का संचालन करुणा करती है । इसलिये यहूदी ! न्याय भले ही तुम्हारी माँग हो, तनिक इस पर भी विचार करो । न्यायमात्र में आत्मा की मुक्ति का कोई पथ नहीं है । हम करुणा की भीख माँगते हैं । और वही प्रार्थना हमें अन्यों के प्रति दयापूर्ण व्यवहार

करने की प्रेरणा देती है। तुम्हारी माँग के न्याय को तनिक विनम्र करने के लिये मैंने काफ़ी कह दिया है। किंतु यदि तुम उस पर अड़े रहोगे, तो न्याय के लिये ही खड़ा यह न्यायालय अवश्य ही ऐन्टोनियो को दण्डित करने को बाध्य हो जायेगा।

शाइलॉक : जो कुछ मेरे कर्म हैं उनका फल मुझे ही मिले ! मैं तो न्याय चाहता हूँ, मेरा शर्त्तनामा ! मेरी शर्त्त ! मेरा न्याय ! वही दण्ड ! बस !

पोर्शिया : क्या ऐन्टोनियो कर्ज नहीं चुका सकता ?

बैंसनियो : जी हाँ, चुका सकता है। मैं न्यायालय में उसकी ओर से रुपया देने को तैयार हूँ। मैं दुगना देने को तैयार हूँ। यदि वह भी काफ़ी नहीं है तो मैं दस गुना भरने को तत्पर हूँ। यदि ऐसा न कर सकूँ तो शाइलॉक मेरे हाथ, पाँव, सिर, सब ले ले। यदि यह भी शाइलॉक को स्वीकृत नहीं है तो यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रतिहिंसा सत्य पर छा गई है। मैं अनुनय करता हूँ कि एक बार अपने अधिकार से कानून बदल दें; एक महान औचित्य के लिये, एक लघु अनौचित्य भी करें, ताकि इस निर्दय शैतान की कुटिल कामना पूर्ण नहीं हो।

पोर्शिया : यह नहीं हो सकता। वेनिस में ऐसी कोई शक्ति नहीं जो कि स्थापित नियम को उलट सके। यह तो एक बुरा उदाहरण प्रस्तुत करने वाली बात है। और एक गलती के सहारे न जाने कितनी बुराइयाँ राज्य के कार्य में घुस जायेंगी। यह नहीं हो सकता।

शाइलॉक : अरे न्याय करने आज तो डैनियल* आ गया ! धर्मराज डैनियल आ गया !

*डैनियल—यहूदी कथाओं में निरासक्त सर्वश्रेष्ठ न्यायकर्त्ता।

ओ बुद्धिमान तरुण न्यायकर्ता ! मैं तुम्हारा कितना सम्मान करता हूँ !!

पोशिया : ज़रा महरबानी करके मुझे शर्तनामा तो दिखायें ।

शाइलॉक : ओ परम बुद्धिमान डॉक्टर ! यह लीजिये ! यह लीजिये !

पोशिया : शाइलॉक ! तुम्हारे दिए हुए धन से तिगुना दिया जा रहा है !

शाइलॉक : सौगंध है, सौगंध है, मैंने भी परमात्मा से एक सौगंध खाई है । क्या मैं अपनी आत्मा पर शपथ भंग करने का पाप डालूँ ? नहीं ! सारा वेनिस मुझे मिल जाये तब भी नहीं !

पोशिया : तब यह साफ़ कहा जा सकता है कि शर्तनामा पूरा नहीं हुआ और इसमें लिखी शर्त के मुताबिक़ शाइलॉक पूरी सज़ा देने का अख़्तियार रखता है । इसलिये यहूदी को आधा सेर गोश्त निकाल लेने का पूरा हक़ है—वह ऐन्टोनियो के शरीर से उसके हृदय के पास से कहीं से भी गोश्त निकाल सकता है । मैं तुम्हारे सामने प्रार्थना लिय खड़ा हूँ शाइलॉक ! फिर सोच लो ! तिगुना धन ले लो और मुझे शर्तनामा रद्द करने की इजाजत दो !

शाइलॉक : शर्तनामे में लिखी शर्त के मुताबिक़ शर्त पूरी हो जाने दीजिये, तब आप खुद इसे रद्द कर दीजिये । मुझे विश्वास है, आप एक अच्छे न्यायकर्ता हैं । आप तो न्याय के ज्ञाता हैं और आपकी न्याय की व्याख्या तो नितांत उचित और उत्तम है । मैं विनय करता हूँ कि आप अपना फ़ैसला सुना दें, उस क़ानून के नाम पर जिसकी आप इज्जत करते हैं, दुहाई देते हैं । मैं अपनी आत्मा की सौगंध खाकर कहता हूँ कि कोई भा सुंदर वक्तृता या कोई भी कर्तव्यतम याचना मेरे दृढ़ निश्चय को बदल नहीं सकती । मैं इसी पर जोर देता हूँ कि शर्तनामे की शर्त ही पूरी हो ।

एन्टोनियो : मैं भी न्याय से सहर्ष प्रार्थना करता हूँ कि अब दण्ड सुना दिया जाये ।

पोर्शिया : तब तो फिर ठीक है । उसके चाकू के लिये अपनी छाती को तैयार कर लो ।

शाइलॉक : आह महान न्यायी ! ओ सर्वश्रेष्ठ तरुण !

पोर्शिया : जिस कानून का ऐसे सवाल से ताल्लुक है इस सजा के बिल्कुल माकूल है और शाइलॉक एन्टोनियो से पूरी तरह वसूल कर सकता है ।

शाइलॉक : ओ परम विद्वान न्यायी ! ओ अविचलित महान व्यक्ति ! आप बिल्कुल ठीक हैं । श्रीमान्, आप अपनी आयु से कहीं अधिक बुद्धिमान हैं !

पोर्शिया : इसलिये अपना सीना खोल दो ।

शाइलॉक : हाँ, इसका सीना ! यही शब्द हैं शर्त्तनामे में । महान न्यायकर्त्ता ! लिखे शब्द हैं : 'उसके हृदय के निकटतम स्थान से'

पोर्शिया : हाँ, ठीक कहते हो । पर क्या तुम्हारे पास गोश्त तोलने के लिए तराजू भी है ?

शाइलॉक : बिल्कुल तैयार है ।

पोर्शिया : शाइलॉक ! एक डॉक्टर को अपने खर्चे से एन्टोनियो के पास खड़ा करो, कहीं ऐसा न हो कि उनका ज़रूरत से ज्यादा खून बह जाने से वह मर ही जाये ।

शाइलॉक : लेकिन यह तो शर्त्तनामे में नहीं लिखा !

पोर्शिया : हाँ, ऐसा नहीं लिखा है । लेकिन उससे क्या ? इतनी दया करोगे तो तुम्हारे लिये अच्छा ही है ।

शाइलॉक : मैं ऐसा नहीं कर सकता । यह शर्त्तनामे में नहीं लिखा है ।

पोर्शिया : एन्टोनियो ! क्या तुम कुछ कहना चाहते हो ?

ऐन्टोनियो : मैं अधिक कुछ नहीं कहना चाहता । मैं तो मौत का सामना करने को तैयार हूँ । आओ बैसैनियो ! बिदा । इस बात का दुख न करना कि तुम्हारे कारण मुझे ऐसी परिस्थिति में पड़ना पड़ा कि अंत में मुझे जान से हाथ धोना पड़ गया । साधारणतः अन्यों से भाग्य इतने अनुकूल नहीं रहा, जितना मुझसे । यह तो एक मामूली बात है कि भाग्य अभागों को तो संपत्ति-नाश पर भी उबार ले जाता है पर उससे बहुत दिन तक परेशानियों और ग़रीबी की ज़िदगी बिताने पर मजबूर करता है । मुझे तो मौत ऐसी ज़िदगी से नजात दे देगी । अपनी कुलीन पत्नी को मेरी शुभकामनाएँ देना और उन परिस्थितियों से अवगत कराना जिनके कारण मुझे मरना पड़ रहा है । उनको बताना कि मेरे-तुम्हारे कितने सुदृढ़ संबंध थे और मेरी मृत्यु के बाद मेरे बारे में प्रेम-भरे वचन कहना बैसैनियो ! जब तुम मेरी कथा कह चुको तब उनसे पूछना कि क्या उनके पति का एक बहुत प्यारा मित्र नहीं था ! इसका खेद न करो कि एक प्रिय मित्र अब सदा के लिये बिछुड़ जायगा । उसे इसका तनिक भी शोक नहीं कि वह तुम्हारा ऋण चुका रहा है, यदि यहूदों मेरे हृदय के पास से एक मांस-खण्ड काटता है, तो मैं सहर्ष इस दण्ड को भुगत लूँगा ।

बैसैनियो : ऐन्टोनियो ! मेरा ऐसी पत्नी से विवाह हुआ है जो मुझे अपनी ज़िदगी की तरह प्यारी है । किंतु स्वयं यह जीवन, मेरी पत्नी, और सारा संसार, इनमें से किसी को भी मैं तुम्हारे जीवन से ऊपर नहीं रखता । सच कहता हूँ, इस शतान से तुम्हें छुड़ाने के लिये मैं सबका बलिदान कर सकता हूँ ।

पोर्शिया : तुम्हारी यह बात सुनकर तुम्हारी पत्नी प्रसन्न नहीं होगी ।

प्रेशियानो : मेरी भी एक पत्नी है, जिसे मैं सौगंध खाकर कह सकता हूँ, प्रेम करता हूँ। मैं चाहता हूँ कि वह स्वर्ग चली जाये, काश, इस हृदयहीन यहूदी के भीतर दैवीशक्ति से कोई परिवर्तन ला सके।

नैरिसा : अच्छा है, आप अपनी स्त्री की अनुपस्थिति में ऐसी इच्छा कर रहे हैं, वरना अगर वह सुन लेती तो जरूर घर में आस्मान सिर पर उठा लेती।

शाइलॉक : (स्वगत) यह हैं ईसाई जाति के पति, जो अपनी पत्नियों को इतना सस्ता समझते हैं कि अपने स्वार्थों को पूरा करने के लिये उनका बलिदान देने को तत्पर हैं। मेरे भी एक पुत्री है! काश, उसका विवाह भी बैराबैस के वंश में से किसी से होता, न कि ईसाई से। (प्रगट) समय नष्ट हो रहा है। न्याय पूर्ण होने दीजिये।

पोर्शिया : इस सौदागर का आधा सेर गोश्त तुम्हारा है, न्यायालय तुम्हें देता है, कानून तुम्हें आज्ञा देता है।

शाइलॉक : अरे न्यायी ! अरे महान न्यायी !

पोर्शिया : और तुम यह गोश्त उसकी छाती से काट सकते हो ! न्यायालय तुम्हें देता है, कानून तुम्हें आज्ञा देता है।

शाइलॉक : अरे विद्वान न्यायकर्ता ! क्या दण्ड है ! चलो तैयार हो जाओ !

पोर्शिया : थोड़ा ठहरो ! कुछ और भी है। लेकिन यह शर्तनामा तुम्हें लोह की एक बूंद भी नहीं देता। साफ़ अल्फाज में लिखा है : 'आधा सेर गोश्त'। यह शर्तनामा है, अपना आधा सेर गोश्त निकाल लो। लेकिन अगर काटते वक्त तुमने इस ईसाई के लहू की एक बूंद भी टपका दी, तो तुम्हारे हाथ और संपत्ति, वेनिस

के कानून के मुताबिक वेनिस-राज्य के हाथों जब्त हो जायेंगे ।
ग्रेसियानो : अरे श्रेष्ठ न्यायकर्त्ता । यहूदी ! देख ! क्या विद्वान
 न्यायी है !

शाइलॉक : क्या यही कानून है ?

पोर्शिया : तुम स्वयं ही कानून देख लो । तुम न्याय पर जोर देते हो,
 तो विश्वास रखो, न्याय मिलेगा, जितना तुम चाहते हो, उससे
 भी अधिक ।

ग्रेसियानो : ओ परम विद्वान न्यायकर्त्ता ! यहूदी ! बोल ! ओ परम
 न्यायी !

शाइलॉक : तब मैं वह शर्त्त मंजूर करता हूँ । मुझे तिगुना धन दिला
 दें । ईसाई को जाने दें ।

बैसैनियो : यह रहा धन !

पोर्शिया : ठहरो ! यहूदी को न्याय मिलेगा । ठहरो । जल्दी न करो ।
 उसे दण्ड के अतिरिक्त कुछ भी नहीं चाहिये ।

ग्रेसियानो : अरे यहूदी ! वाह रे न्यायकर्त्ता ! परम विद्वान न्यायकर्त्ता !

पोर्शिया : इसलिये गोश्त काटने को तैयार हो जाओ । किंतु रक्त न
 बहाना । न ज्यादा काटना, न कम, सिर्फ आधा सेर गोश्त । अगर
 तनिक भी अधिक या कम काट लिया, चाहे वह कितना ही कम-
 ज्यादा क्यों न हो कि एक हिस्से का बीसवाँ हिस्सा भी इधर-
 उधर हो, बल्कि अगर तराजू बाल भर भी भ्रुक गई, तो तुम्हारी
 मौत है और तुम्हारी सारी संपत्ति जब्त करली जायेगी ।

ग्रेसियानो : दूसरा डैनियल ! यहूदी ! एक डैनियल आ गया है । अरे
 विधर्मी, अब तो आखिर पकड़ा गया न ?

पोर्शिया : यहूदी क्यों रुकता ? अपनी शर्त्त पूरी करे !

शाइलॉक : मेरा मूलधन ही दे दो, मुझे जाने दो ।

बैसैनियो : यह लो, मेरे पास तैयार है ।

पोर्शिया : उसने कचहरी में साफ़ इंकार किया है । उसे केवल न्याय मिलेगा । शर्त पूरी करे ।

ग्रेसियानो : डैनियल ! फिर कहता हूँ दूसरा डैनियल ! मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूँ यहूदी ! तूने मुझे यह मुहाविरा तो सिखा दिया ।

शाइलॉक : क्या मुझे केवल मूलधन भी वापिस नहीं मिलेगा ?

पोर्शिया : केवल शर्त पूरी करने की आज्ञा के अतिरिक्त तुम्हें कुछ भी नहीं मिलेगा । और तुम अपने ही खतरों पर पूरी कर सकते हो ।

शाइलॉक : शैतान की मार ! मैं अब यहाँ जिरह करने को नहीं रुकना चाहता ।

पोर्शिया : ठहरो यहूदी । अभी कानून की तुम पर एक और पकड़ है । वेनिस के कानून में कहा गया है कि यदि यह साबित हो जाये कि कोई विदेशी सीधे या किसी और तरीके से किसी नागरिक की जान लेना चाहता है तब जिसके विरुद्ध वह ऐसा करता है उसे अधिकार है कि वह मारने की कोशिश करने वाले की आधी संपत्ति प्राप्त कर ले । बाकी आधा सरकार के खजाने में जायेगा । मारनेवाले का जीवन केवल ड्यूक की दया पर निर्भर रहता है । यदि ड्यूक न चाहे तो किसी की भी प्रार्थना व्यर्थ है । तुम इस खतरनाक हालत में हो, क्योंकि यह बिल्कुल साफ़ है कि सीधे भी और हर तरीके से भी तुमने प्रतिवादी की जान लेने की कोशिश की है । इस तरह तुम इस जुर्म के मुजरिम साबित हुए हो । इसलिये फौरन अपने घुटने टेक कर ड्यूक से दया की भीख माँगो ।

ग्रेसियानो : यहूदी ! ड्यूक की आज्ञा के लिये प्रार्थना करो कि घर

जाकर फाँसी लगाकर मर सको। तुम तो यह भी नहीं कर सकते। क्योंकि तुम्हारी सारी जायदाद राज्य ने जब्त कर ली और अब तुम गले में बाँधने के लिये रस्सी भी कहाँ से लाओगे? रस्सी का भी खर्चा सरकार को ही करना पड़ेगा।

ड्यूक : अब तुम हमारी आत्मा का भेद देखो ! तुम्हारे याचना करने के पूर्व ही मैं तुम्हें क्षमा करता हूँ, जीवन-दान देता हूँ। तुम्हारी आधी संपत्ति ऐन्टोनियो की है और आधी राज्य की। यदि तुम दीन पश्चात्ताप करोगे तो मैं तुम्हारी जायदाद को जब्त न करके साधारण जुर्माना ही कर दूँगा।

पोर्शिया : आप राज्य का भाग छोड़ सकते हैं, ऐन्टोनियो का भाग नहीं।

शाइलॉक : नहीं, मेरा जीवन भी ले लो। जब सब संपत्ति ही ले लो, तब मेरे जीवित रहने से भी क्या लाभ? बिना आधार के घर ही कैसे खड़ा रह सकता है? जब मेरे जीवन का ही आधार ले लो तब मैं ही रह कर क्या करूँगा?

पोर्शिया : ऐन्टोनियो ! तुम इस पर क्या दया कर सकते हो ?

प्रेशियानो : एक फाँसी का फंदा मुफ्त दे सकते हैं ! भगवान के लिये ! और कुछ नहीं।

ऐन्टोनियो : मैं ड्यूक और न्यायालय से प्रार्थना करता हूँ कि जो जुर्माना इसकी आधी जायदाद से संबंध रखता है, जिसे राज्य ले लेगा, उसे क्षमा किया जाये; बशर्ते कि यह बाकी आधी मुझे दे दे, एक ट्रस्ट के रूप में, ताकि मैं उस भाग को उस व्यक्ति को इसकी मृत्यु के बाद दे सकूँ, जिसने इसकी पुत्री से विवाह किया है। यह जो इसे सहूलियत दी जा रही है, इसके बदले में मैं इसके सामने दो शर्तें पेश करता हूँ—एक यह कि यह तुरंत

ईसाई धर्म को अंगीकार कर ले, दूसरे यह न्यायालय में ही वह लिखा-पढ़ी पक्की कर दे जिसमें साफ़ लिखा हो कि जायदाद का आधा हिस्सा इसकी मौत के वक्त इसके दामाद और इसकी बेटी को मिल जाये ।

ड्यूक : यह ऐसा ही करेगा, वना अभी जो क्षमा दी गई है वह वापिस ले ली जायेगी ।

पोर्शिया : यहूदी ! क्या तुम तृप्त हो ? कुछ कहना है ?

शाइलॉक : मैं तृप्त हूँ ।

पोर्शिया : क्लर्क ! विरासत का दस्तावेज तैयार करो ।

शाइलॉक : मैं प्रार्थना करता हूँ कि मुझे यहाँ से जाने की आज्ञा दी जाये । मेरी तबियत ठीक नहीं है । मेरे पास दस्तावेज भेज दीजिये । मैं दस्तखत कर दूँगा ।

ड्यूक : जा सकते हो, पर काम पूरा कर देना ।

ग्रेसियानो : जब तुम ईसाई होगे तो तुम्हारे दो धर्मपिता^१ होंगे । यदि मैं न्यायकर्ता होता तो मैं तुम्हें १२ धर्मपिता देता ताकि जूरी बनकर वे तुम्हें ईसाई बनाने की बजाय फाँसी की सजा देते ।

[शाइलॉक का प्रस्थान]

ड्यूक : (पोर्शिया से) मैं आपको आज अपने यहाँ भोजन पर निमंत्रित करता हूँ ।

पोर्शिया : मैं अत्यंत विनय से क्षमा माँगता हूँ । मुझे आज रात ही पदुआ के लिए कूच कर देना है और यह मेरे लिये बहुत ही आवश्यक है ।

ड्यूक : क्या करें । खेद है आपको तनिक भी अवकाश नहीं ।

१. ईसाई बनाते समय एक व्यक्ति धर्मपिता बनता है । यहाँ दो हैं—पोर्शिया और ऐन्टोनियो ।

एन्टोनियो ! इन्हें अच्छा पुरस्कार देना । तुम वास्तव में इनके बहुत ऋणी हो ।

[ड्यूक तथा उसके सेवकों का प्रस्थान]

बेंसैनियो : योग्य मित्र ! आप ही की बुद्धिमत्ता से मैं इस भयानक संकट से निकल सका हूँ । आपके इस कष्ट के लिये हम शाइलॉक को दिये जाने वाले ३००० ड्यूकैट आपकी सेवा में अर्पित करना चाहते हैं ।
एन्टोनियो : और हम सदा सर्वदा के लिये प्रेम और सेवा के क्षेत्र में आपके ऋणी बने रहेंगे ।

पोर्शिया : जो पूर्ण तृप्त हो जाता है, उसे पूरा इनाम भी मिल जाता है । तुम्हें छुड़ाकर मैं पूर्ण संतुष्ट हूँ । और इसीलिये यह मानता हूँ कि मुझे पूरा इनाम मिल चुका है । रुपये की तरफ तो मेरा ध्यान नहीं था । मैं चाहता हूँ तुम सुखी रहो । अब बिदा दो ।

बेंसैनियो : श्रीमान् ! हम तो आपको इस विषय में दबाने के लिये मजबूर हैं । आप फीस के तौर पर नहीं, हमारी यादगार के तौर पर ही कोई भेंट तो लेते जाइये । मैं प्रार्थना करता हूँ, अस्वीकार न कीजिये ।

पोर्शिया : आप तो बहुत दबाते हैं । खैर मानना ही पड़ेगा । (एन्टोनियो से) मुझे अपने दस्ताने दे दीजिये, आपकी खातिर उन्हें पहना करूँगा । (बेंसैनियो से) आपके प्रेम की याद में मैं आपसे यह अंगूठी लूँगा । हाथ पीछे न खींचिये । मुझे और कुछ नहीं चाहिये । और फिर प्रेम है तो क्या आप इससे इंकार कर देंगे ?

बेंसैनियो : यह अंगूठी ! श्रीमान् ! क्या बताऊँ ! बड़ी मामूली चीज है । आपको इसे देना तो आपकी तौहीन करना है ।

पोर्शिया : मुझे तो बस यही चाहिये, अब तो बस मन में भर गई है ।
बेंसैनियो : मैं इसकी क्रीमत की वजह से नहीं हटता । मैं ऐलान

करा के वेनिस की कोई बहुत कीमती चीज़ आपके लिये तलाश कराता हूँ । पर इसके लिये मुझे माफ़ कीजिये । बस इतनी मेरी मान जाइये ।

पोर्शिया : आप भी ख़ूब ही देते हैं । एक तो मुझसे याचना करा ली और अब मुझे यह सिखा रहे हैं कि भिखारी को कैसे जवाब दिया जाता है ?

बैसैनियो : श्रीमान् ! यह अंगूठी तो मेरी पत्नी ने मुझे दी थी । और जब उसने पहनाई थी तब मुझसे कसम ले ली थी कि न मैं इसे बेचूंगा, न गँवाऊंगा ।

पोर्शिया : यह तो मर्दों में न देने के लिये आम बहाना है । अगर आपकी पत्नी पागल ही है, तो और बात है । क्या मैं इस अंगूठी के योग्य नहीं हूँ । आप इसे मुझे दे देंगे तो क्या वह बुरा मानेंगी । चले । रखिये । तकलीफ़ न उठाइये ।

[पोर्शिया और नैरिसा का प्रस्थान]

ऐन्टोनियो : श्रीमंत बैसैनियो ! अंगूठी दे दो न ? क्या उसका काम और मेरा प्रेम दोनों भी ऐसे नहीं हैं कि तुम्हारी पत्नी की आज्ञा को बदल सकें ?

बैसैनियो : ग्रेसियानो ! लेना ! दौड़ के उसे रोकना । उसे यह अंगूठी दे दो । और हो सके तो उसे ऐन्टोनियो के घर ले आना । जल्दी जाओ ।

[ग्रेसियानो का प्रस्थान]

चलो, हम तब तक वहाँ पहुँच जायें । हम लोग कल शाम को बेलमोन्ट के लिये रवाना होंगे । चलो ऐन्टोनियो, अब चलें ।

[प्रस्थान]

दृश्य २

[वही : पथ]

[पोशिया, नैरिसा का पुरुष-वेश में ही प्रवेश]

पोशिया : यहूदी का घर तलाश करो । उसे दस्तावेज दे दो और उससे दस्तखत करा लो । हम आज रात चलेंगे और अपने पतियों के आने के एक दिन पहले ही पहुँच जायेंगे । लीरेन्जो तो इस दस्तावेज को पाकर खुश हो जायेगा ।

[ग्रेशियानो का प्रवेश]

ग्रेशियानो : श्रीमान् ! बड़े भाग्य कि आप मिल तो गये ! श्रीमंत बैसैनियो ने बाद में सोचने पर अपना इरादा बदल दिया । उन्होंने अंगूठी भिजवाई है । उन्होंने आपको ऐन्टोनियो के घर पर भोजन के लिये निमंत्रित भी किया है ।

पोशिया : यह तो नहीं हो सकता । मैं नहीं आ सकूंगा । हाँ अंगूठी के लिये धन्यवाद देता हूँ । कृपया आप उनसे कह दें । और हाँ, कृपया तनिक शाइलॉक का घर इस नौजवान को दिखा दें ।

ग्रेशियानो : जरूर-जरूर ।

नैरिसा : श्रीमान् ! मैं कुछ कहना चाहता हूँ । (पोशिया से अलग) मैं देखती हूँ यदि मैं अपने पति की अंगूठी ले सकूँ, जिसे मैंने देते समय प्रतिज्ञा कर ली थी कि वे सदैव अपने पास रखेंगे ।

पोशिया : (नैरिसा से अलग) ले ले । जरूर मिलेगी । उन्होंने तो मर्दों को अंगूठियाँ दी हैं, पर हम तो कसम खाकर विरोध करेंगी और कहेंगी कि नहीं स्त्रियों को दी हैं । (जोर से) जल्दी-जल्दी करो । तुम जानते हो मैं कहाँ प्रतीक्षा करूँगा ?

नैरिसा : चलिये श्रीमान् ! आप ही मुझे घर दिखायेंगे न ?

[प्रस्थान]

पाँचवां अंक

दृश्य १

[बेल्मोन्ट : पोशिया के घर का रास्ता]

[लौरेंजो और जैसिका का प्रवेश]

लौरेंजो : कैसी चाँदनी निखरी हुई है । मीठी बयार निःशब्द-सी वृक्षों को चूमती हुई बह रही है । ऐसी ही चाँदनी रात में ट्रोंडलस ट्रॉय नगर की प्राचीर पर चढ़ा होगा और उसने उन यूनानी शिविरों की ओर देख कर लंबी-लंबी आहें भरी होंगी जहाँ उसकी विश्वासघातिनी प्रिया क्रैसिडा सो रही होगी ।^१

जैसिका : ऐसी ही चाँदनी रात में थिस्बी भीरुता से ओस भींगी घास पर चली होगी और जब उसने सिंह की झ्याया देखी तब घोर आतंक से भर कर भाग गई होगी ।

लौरेंजो : ऐसी ही चाँदनी रात में कारथेज को रानी दीदो उत्ताल तरंगों से आंदोलित समुद्र-तीर पर बिना एक भी हरी डाल हाथ में लिये खड़ी रही होगी, जहाँ से उसने अपने प्रेमी ईनीज़ को बिदा दी होगी और अनुनय-भरे स्वर में कहा होगा कि शीघ्र ही कारथेज लौट आना ।

जैसिका : ऐसी ही चाँदनी रात में जेसन की पत्नी मीडिआ ने ऐन्द्र-जालिक जड़ी-बूटियाँ एकत्र की होंगी । जिनसे उसने अपने सुसर ईसन को फिर युवक बना दिया था ।

१. एक प्राचीन यूनानी कथा का संदर्भ । इसी प्रकार यहाँ कई कथाएँ आई हैं जिनका मूल तात्पर्य प्रेम व्यक्त करना है ।

लौरेन्जो : ऐसी ही सुंदर रात को धनी यहूदी की पुत्री जैसिका, अपने पिता के घर से भागी थी अपने निर्धन प्रेमी के साथ बेलमोन्ट को ।

जैसिका : ऐसी ही मधुर रात्रि को तहण लौरेन्जो ने जैसिका से अपना अखंड और सर्वकालीन प्रेम प्रगट किया था और अपनी अनेक विश्वासदायिनी और शाश्वत रहने वाले प्रेम की प्रतिज्ञाओं से उसका हृदय जीत लिया था, वे प्रतिज्ञाएँ जिनमें से एक भी विश्वास करने योग्य नहीं थी ।

लौरेन्जो : ऐसी ही मनोहर रात में सुंदरी जैसिका ने अपनी तेज जीभ से अपने प्रेमी के विश्वास पर संदेह किया था, जिसे उसने क्षमा कर दिया था ।

जैसिका : ऐसी ही रात के तुम्हारे इस खेल में मैं तुम्हें अवश्य हरा देती, यदि कोई आता न होता । देखा न ? किसी की पदचाप सुनाई दे रही है ।

[स्टीफ़ेनो का प्रवेश]

लौरेन्जो : रात के सन्नाटे में इतनी तेजी से कौन आ रहा है ?

स्टीफ़ेनो : मित्र !

लौरेन्जो : मित्र ! कौन मित्र ! तुम्हारा नाम ! बताओ मित्र !

स्टीफ़ेनो : मेरा नाम स्टीफ़ेनो है और मैं यह संवाद लाया हूँ कि मेरी स्वामिनी पौ फटने से पहले यहाँ बेलमोन्ट में आ पहुँचेंगी । वे यहाँ-वहाँ तीर्थ-यात्री की भाँति घूम रही हैं और जहाँ-जहाँ पवित्र गिरजे हैं वहाँ-वहाँ दर्शन करतीं, एक सुखी दंपति के प्रार्थना करतीं, शुभकामना करतीं, पर्यटन कर रही हैं ।

लौरेन्जो : उनके साथ कौन आ रहा है ?

स्टीफ़ेनो : केवल एक पवित्र साधु है और नैरिसा है । क्या मेरे स्वामी बैसैनियो लौट आये हैं ?

लौरेंजो : नहीं वे नहीं आये, और न अभी कोई खबर आई है।
चलो जैसिका भीतर चलें और श्रीमती पोशिया के लिये महान
स्वागत का आयोजन करें।

[लॉन्सलोट का प्रवेश]

लॉन्सलोट : ऐ हो, ऐ हो ! कहाँ हो ! बोलो ! बोलो !

लौरेंजो : कौन है ?

लॉन्सलोट : अरे ? स्वामी लौरेंजो कहाँ है ! स्वामी लौरेंजो !

लौरेंजो : अरे चिल्लाओ मत। मैं यहाँ हूँ।

लॉन्सलोट : आप कहाँ हैं ?

लौरेंजो : यहाँ हूँ तो !

लॉन्सलोट : उनसे कहो कि स्वामी बैसैनियो के पास से एक दूत आया
है और संवाद लाया है कि वे पौ फटते तक आ पहुँचेंगे।

[प्रस्थान]

लौरेंजो : प्रिये जैसिका ! भीतर चलो, और वहीं उनकी प्रतीक्षा
करें। और फिर बात ही क्या है ? हम भीतर ही क्यों जायें ?
स्टीफ़ेनो ! तुम सेवकों को सूचना दे दो कि श्रीमती पोशिया
शीघ्र आ रही हैं और घर के गाने-बजाने वालों से भी कह दो
कि तैयार हो जायें और बाग में आ जायें।

[स्टीफ़ेनो का प्रस्थान]

इस तीर पर चाँदनी कँसी जादू-भरी-सी सो रही है !
आओ यहाँ बैठें और मधुर संगीत सुनें। संगीत की मीठी तानों
से रात की पूर्ण निस्तब्धता कितनी एकाकार हो गई है। बैठो
जैसिका। देखो, सुवर्ण की कणिकाओं से जटित आकाश कितना
सुहावना लग रहा है। छोटे से छोटा नक्षत्र भी आज मानों
मधुरतम स्वर से गा रहा है, धूमता हुआ मानों वे सब देवदूत

हैं, सुंदर ! ऐसी ही संगीत की तल्लीनता अमर आत्माओं में भी होती है, किंतु जब तक यह आत्मा क्षणभंगुर पार्थिव शरीर में रहती है तब तक हम उसे सुन नहीं पाते ।

[संगीतज्ञों का प्रवेश]

आओ ! आओ ! डायना^१ को अपने गीत से जगाओ । मीठे स्वरों से अपनी स्वामिनी की श्रुतियों को भर दो और उन्हें घर की ओर खींच लाओ ।

[संगीत]

जैसिका : मैं जब भी मधुर संगीत सुनती हूँ तब एक उदासी-सी मुझ पर छा जाती है ।

लौरेन्जो : इसका कारण है कि तुम उसमें तल्लीन हो जाती हो । जंगली और हिंस्र पशु भी संगीत से प्रभावित हो जाते हैं । चंचल और अनसीखे घोड़े भी, जो कि भयानक ढंग से कूदते हैं, चिल्लाते और जोर से हिनहिनाते हैं, शक्ति के स्फुरण से उच्छृंखल होते हैं, वे भी यदि तुरही-नाद सुनते हैं, या संगीत को मधुर धारा उनके कानों में पड़ जाती है, तो शांत इकट्ठे होकर खड़े हो जाते हैं । उनकी बर्बर आँखों में एक कोमलता आ जाती है । संगीत की ऐसी ही शक्ति है, इसीलिये लैटिन भाषा के कवि ओविड ने कल्पना की थी कि ऑरफियस अपने संगीत से न केवल हिंस्र पशुओं को काबू में कर लेता था वरन् उसका प्रभाव वृक्षों और चट्टानों पर भी पड़ता था । भरने मानों उसके वाद्ययंत्र की ध्वनि का अनुसरण करते हुए बहते थे । कौसा भी क्रूर और कर्कश व्यक्ति क्यों न हो, संगीत सदैव हृदय

१. डायना—चंद्रमा । यूरोप में चंद्रमा को देवता नहीं, देवी मानते हैं । डायना उस रूपवती देवी का नाम है ।

को कोमल बना देता है। जो न स्वयं गा पाता है, न संगीत से प्रभावित होता है, वह बड़ा ही खतरनाक होता है। वह विश्वासघात, धोखा, षड्यंत्र और लूट जैसे वीभत्स और घातक कर्म भी कर सकता है। उसके विचार और भावनाएँ अन्धकारमय और जघन्य होती हैं। ऐसे व्यक्ति का कभी विश्वास नहीं करना चाहिये। सुनो। संगीत सुनो।

[पोर्शिया और नेरिसा का प्रवेश]

पोर्शिया : वह प्रकाश मेरे भवन के मुख्य प्रकोष्ठ से आ रहा है। देखती हो, छोटी मोमबत्ती भी कितनी दूर तक अपनी किरण फेंकती है ! इस कुटिल संसार में अच्छा काम इसी प्रकार प्रकाशित होता है।

नेरिसा : हम चाँदनी में उस मोमबत्ती के प्रकाश को नहीं देख सके थे।

पोर्शिया : महान गौरव इसी प्रकार लघुता को ढँक लेता है। सम्राट के अभाव में उसके स्थान में काम करने वाला ही चमकता है। किंतु सम्राट के आते ही वह दिखना बंद हो जाता है, जैसे कोई क्षीण जलधारा समुद्र में गिरने पर अपना व्यक्तित्व खो बैठती है। सुनो न ? संगीत की मधुर तान को सुनो।

नेरिसा : श्रीमती ! यह संगीत तो अपने ही घर में हो रहा है।

पोर्शिया : अपने संदर्भ के बिना कुछ भी अच्छा नहीं लगता। दिन की तुलना में संगीत रात की निस्तब्धता में कितना मोहक लगता है !

नेरिसा : श्रीमती ! यह तो नीरवता ही है जो संगीत का सम्मोहन इतना बढ़ा रही है।

पोर्शिया : यदि हमने दोनों को नहीं सुना होता तो क्या श्यामा का संगीत हमें कौए की कर्कश आवाज़ की तुलना में विशेष अच्छा

लगता ? यदि कोई मधुर स्वर का कोकिल दिन में उस समय गाता जब कि बत्तख करकती आवाजें करती हैं, तब कौन उसे विशेष महत्त्व देता ? उपयुक्त समय और स्थान से ही बहुत-सी वस्तु प्रशंसा को प्राप्त होती हैं। कितना निस्तब्ध ! चंद्रदेवी अपने प्रेमी एन्डिमियन^१ के साथ सो रही है। कहीं जाग न जाये।

[संगीत रुकता है।]

लौरेन्जो : यदि मैं भूल नहीं कर रहा हूँ तो वह स्वर अवश्य ही पोर्शिया का है।

पोर्शिया : वह मुझे ऐसे जानता है जैसे बुरे स्वर के कारण अंधा आदमी कुक्कू पक्षी को पहँचान लेता है।

लौरेन्जो : श्रीमती, स्वागत है ! आइये घर पधारिये !

पोर्शिया : हम अपने पतियों के कुशल-मंगल की प्रार्थनाएँ करती घूम रही थीं। उनके फलस्वरूप वे तो सकुशल आ पहुँचे होंगे न ?

लौरेन्जो : श्रीमती ! अभी तो नहीं। किंतु कुछ पहले एक संवाद-वाहक आया था जिसने कहा था कि वे आने वाले हैं।

पोर्शिया : भीतर जाओ नैरिसा ! मेरे सेवकों से कहो कि वे ऐसी कोई बात प्रगट न होने दें कि हम अभी तक यहाँ नहीं थीं। लौरेन्जो ! जैसिका ! सुनते हो न ? कहना नहीं।

[तूर्य्य-नाद]

लौरेन्जो : आपके पति निकट हैं। मैं तूर्य्य-नाद सुन रहा हूँ। हम इधर-उधर की लगाने वाले नहीं हैं श्रीमती ! आप चिंता न करें।

पोर्शिया : रात कितनी उजेली है, ऐसा लगता है जैसे कोई धुँबला-सा दिन हो जब सूर्य्य मेघों में छिप जाता है।

१. चन्द्रमा देवी है, अतः उसका एक प्रेमी भी है।

[बंसैनियो, ऐन्टोनियो, ग्रेसियानो और सेवकों का प्रवेश]

बंसैनियो : हमारे यहाँ तो दिन ही रात में भी रहे, जैसे संसार की दूसरी तरफ़ होगा, यदि तुम (पोर्शिया) सूर्य के स्थान पर चलती रहो।

पोर्शिया : मुझे प्रकाश देने दो, लेकिन हल्का ^१ मत बनने दो, क्योंकि जो स्त्री तुच्छ होती है उसका पति सदैव व्यथित रहता है, उसका जीवन भारी हो जाता है। मैं तुम्हें ऐसा नहीं होने दूंगी बंसैनियो ! परमात्मा सब घटनाओं से मुक्ति दे। मेरे स्वामी ! आपका अपने घर में स्वागत है।

बंसैनियो : मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूँ श्रीमती। मेरे मित्र का स्वागत करो। यही ऐन्टोनियो हैं। इन्हीं से मेरा इतना गहरा स्नेह है।

पोर्शिया : इनसे तो आपको सदैव ही स्नेह रखना चाहिये, क्योंकि, मैंने सुना है इनका आप पर अगाध स्नेह है। आपके कारण ही तो इतने ऋणी ये रहे !

ऐन्टोनियो : कैसे भी रहे हों अब मैं सबसे मुक्त हूँ।

पोर्शिया : स्वागत है श्रीमान् ! यह स्वागत केवल शाब्दिक नहीं होना चाहिये इसलिये इतना ही कहकर चुप रह जाती हूँ।

ग्रेसियानो : (नरिसा से) इस प्रकाशमान चंद्र की सौगंध है, तुम मुझे व्यर्थ ही दोष दे रही हो। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि मैंने वकील के क्लर्क को अंगूठी दी है, और किसी को नहीं। मैं तो यही चाहता हूँ कि जिसे मैंने अंगूठी दी है वह मर ही जाये, क्यों कि तुम्हारे गुस्से का तो छोर ही नहीं !

पोर्शिया : क्यों शादी के बाद इतनी जल्दी भगड़ना शुरू कर दिया ? बात क्या है ?

१. शेक्सपियर ने Light का प्रयोग किया है, जिसके दोनों अर्थ हैं— प्रकाश, हल्का या तुच्छ।

प्रेसियानो : भगड़ा तो उस मामूली सोने की अंगूठी के पीछे है जो इसने मुझे दी थी। उसके भीतर की तरफ़ खुदा हुआ था, जैसे चाकू-वाकू पर खुदा होता है : 'मुझसे प्रेम करो और मुझसे वियोग मत करो।'

नैरिसा : तुम उस आलेख की बात क्यों करते हो ? तुम उस अंगूठी की कीमत पर क्यों बोलते हो ? तुमने, जब मैंने अंगूठी दी थी, वादा किया था कि तुम मृत्यु तक उसे पहने रहोगे। और वह तुम्हारे साथ कब्र में रहेगी। मेरे लिये न सही, तुम्हारी प्रतिज्ञाओं के लिये ही सही, तुमने उसे निबाहा तो होता, इसी लिये रखे होते। एक वकील के क्लर्क को दे दी ! नहीं ! भगवान मेरा न्याय करे। तुमने जिस क्लर्क को वह अंगूठी दी है, उसके गालों पर कभी बाल नहीं उगेंगे न ?

प्रेसियानो : वह पुरुष है, स्त्री नहीं। जब उम्र होगी तब दाढ़ी भी उग आयेगी उसके।

नैरिसा : हाँ-हाँ, अगर औरत मद बन जायेगी तो उसके भी दाढ़ी उगेगी।

प्रेसियानो : मैं अपने इस हाथ की कसम खाकर कहता हूँ कि मैंने अंगूठी एक नौजवान को दी है। वह वैसे मरा-सा नाटा-सा लड़का था, बक-बक करता था, पीछे पड़ गया कि हमारी सेवा के बदले में दे दीजिये और मैं उससे इंकार नहीं कर सका।

पोर्शिया : (प्रेसियानो से) मैं स्पष्ट कह दूँ कि आपने अपनी पत्नी की वस्तु इतनी शीघ्रता से दे कर अपराध ही किया है। उसने अंगूठी दी थी और आपने प्रतिज्ञा की थी कि सदैव अपने पास रखेंगे विश्वासपूर्वक। मैंने भी अपने पति को एक अंगूठी दी थी। उन्होंने भी उसे सदैव अपने पास रखने की प्रतिज्ञा की थी। वे

यहीं हैं। मैं विश्वासपूर्वक कह सकती हूँ कि उसे कभी नहीं छोड़ सकते चाहे सारे संसार की संपत्ति भी उन्हें क्यों न दे दी जाये। सच ग्रेसियानो ! तुम्हारी पत्नी बिल्कुल उचित ही तुम्हारे इस कार्य का विरोध कर रही है। अगर ऐसा मेरे साथ होता तो मैं तो पागल हो गई होती !

बेसैनियो : (स्वगत) जी करता है अपना बाँया हाथ काट डालूँ और इसे विश्वास दिलाऊँ कि एक चोर से अपनी अंगूठी की रक्षा करते समय यह कट गया।

ग्रेसियानो : श्रीमंत बेसैनियो ने भी अपनी अंगूठी वकील को दे दी। उसने इनसे माँगी थी और सचमुच उसकी सेवाएँ ऐसी थीं कि वह उसके योग्य था। और वकील के क्लर्क, जिसने दस्तावेज की नकल की थी, ने मेरी अंगूठी माँग ली। वकील और उसका क्लर्क अंगूठियों के सिवाय कुछ और लेने को ही तैयार नहीं होते थे।

पोशिया : मेरे स्वामी ! आपने वकील को कौन-सी अंगूठी दे दी ? वह तो नहीं दी होगी जो मैंने आपको दी थी !

बेसैनियो : यदि भूँठ बोलने से अपराध छिप जाता तो मैं बोल भी देता, लेकिन क्या करूँ उँगली तो खाली है। अंगूठी चली गई।

पोशिया : जैसे तुम्हारी उँगली बिना अंगूठी की है, वैसे ही तुम्हारा भूँठा हृदय भी सत्य से शून्य है। मैं तो तब तक तुम्हारी पत्नी नहीं होऊँगी जब तक अंगूठी नहीं देख लेती।

नैरिसा : सुनो ग्रेसियानो ! जब तक अंगूठी नहीं दिखाओगे तब तक मैं तुम्हारी पत्नी नहीं बनूँगी।

बेसैनियो : प्रिये पोशिया ! यदि तुम जानतीं कि मैंने अंगूठी किसे दी है, यदि तुम यह जानतीं कि मैंने उसे किसके लिये दी है,

यदि यह भी सोच पातीं कि मैंने वह अंगूठी क्यों दे दी है, कितनी अनिच्छा से उससे वियोग किया है; तब दी है जब वह और कुछ लेता ही न था, तब शायद तुम मुझ पर इतनी क्रुद्ध नहीं होती।

पोशिया : यदि तुम अंगूठी की शक्ति जानते होते, यदि तुम अपने कर्त्तव्यों से अवगत होते कि केवल उस अंगूठी से ही तुम अपना सम्मान जीवित रख सकते हो, तुमने वह इस तरह कभी नहीं दे दी होती। संसार में ऐसा कोई भी अनर्गल आदमी नहीं हो सकता कि वह उसे ही लेने पर अड़ जाये जिसे तुम इतना पवित्र कहते हो। यदि तुमने उससे अपने हृदय के आवेगों को प्रगट करके तर्क किया होता, अपनी अंगूठी अपने पास बनाये रखने की तीव्र इच्छा प्रगट की होती तो ऐसा न होता। मैं भी नैरिसा की भाँति यही सोचती हूँ कि तुमने वह अंगूठी किसी स्त्री को ही दी होगी। मैं तो इस बात पर अपनी जिदगी की शर्त्त लगा सकती हूँ।

बैसैनियो : श्रीमती, सुनो ! मैं अपने आत्मसम्मान की शपथ खाता हूँ। किसी स्त्री ने नहीं, वकील ने ली है। उसने मुझसे ३००० ड्यूकैट लेने से इंकार कर दिया और अंगूठी माँगी। मैंने उससे इंकार कर दिया, और वह असंतुष्ट चला गया; वह चला गया जिसने मेरे इतने प्रिय मित्र के जीवन की रक्षा की थी। क्या कहूँ सुंदरी ! मुझे मजबूर किया गया कि मैं अंगूठी उसके पास भेज दूँ। मुझे दाक्षिण्य और लज्जा ने घेर लिये। मेरा आत्मसम्मान मुझे धिक्कार देने लगा कि मैं इतना अकृतज्ञ कैसे हो गया। क्षमा करो देवी ! रात्रि के इन टिमटिमाते अनंत के दीपकों की शपथ ! यदि तुम वहाँ होती, तो स्वयं तुमने ही

उस योग्य वकील को उपहारस्वरूप देने को वह अंगूठी मुझसे मांग ली होती ।

पोर्शिया : उस वकील को मेरे घर से दूर रखिये । जिस रत्न को मैं इतना चाहती थी, वह उसे ही ले गया है । तुमने तो मेरे लिये उसे सदैव अपने पास रखने की प्रतिज्ञा की थी ! मैं भी तुम्हारी भाँति उदार हो जाऊँगी । वह जो भी माँगे उसे वही दे दूँगी ।

नैरिसा : (घेशियानो से) मैं उसके क्लर्क से कुछ भी इंकार नहीं करूँगी । इसलिये तुम्हें यही राय देती हूँ कि मेरी अच्छी निगरानी रखना ।

एन्टोनियो : यह सब भगड़े मुझ अभाग के कारण ही हैं ।

पोर्शिया : नहीं श्रीमान् ! आप खेद न करें । कुछ भी हो, आपका तो स्वागत है ।

बेंसैनियो : पोर्शिया, विवशता के इस अपराध के लिये मुझे क्षमा करो । अपने इतने मित्रों के सामने मैं तुम्हारी सुंदर आँखों की शपथ खाकर कहता हूँ, जहाँ मैं अपनी ही छाया देखता हूँ, कि मैंने मजबूरी में ऐसा किया ।

पोर्शिया : देखी आपने यह कसम ! अपनी छाया मेरी आँखों में देखते हैं । दो आँखें हैं, दो छाया हुई । यों दो-दो जीभ^१ की कसम हो गई । उसका मूल्य ही क्या है ?

बेंसैनियो : लेकिन सुनो तो ! इस अपराध को भूल जाओ, और सुनो मैं प्रतिज्ञा करता हूँ, अपनी आत्मा की शपथ ग्रहण करता हूँ कि अब कभी कोई बात कह कर नहीं तोड़ूँगा ।

एन्टोनियो : एक बार मैंने अपना जीवन इसके सुख के लिये दाँव पर

१. दो जीभ—मूल्य-रहित बात । हिन्दी में कहते हैं—क्या साँप-सी दो जीभ की बात कहते हो ।

रखा था। जिसे बैसैनियो ने अंगूठी दी है, उस वकील ने ही सफलता से मेरी रक्षा की है। मैं बैसैनियो के लिये अपनी आत्मा की जमानत देता हूँ कि यदि अब बैसैनियो अपनी बात नहीं रखेगा तो मैं अपनी जान दे दूँगा।

पोशिया : तो आप जामिन हुए। तो इन्हें अंगूठी दे दीजिये। यह लीजिये। और कह दीजिये कि इसकी ठीक से हिफाजत करें।

ऐन्टोनियो : यह लो बैसैनियो ! इस अंगूठी की रक्षा करने की शपथ ग्रहण करो।

बैसैनियो : अरे ! यह तो वही है जो मैंने उस वकील को दी थी !

पोशिया : क्षमा करो बैसैनियो ! मैंने यह उसी से ली है।

नैरिसा : श्रीमान् प्रेशियानो ! क्षमा करें ! मैंने भी डॉक्टर के क्लर्क उसी नाटे लड़के से यह अंगूठी पाई है।

पोशिया : तुम सब आश्चर्य में पड़ गये ? यह पत्र है, फुसंत में पढ़ना। पदुआ से बैलारियो के पास से आया है। इसमें लिखा है कि वकील तो पोशिया थी और नैरिसा उसका क्लर्क बनी थी। लोरेन्जो यहीं है और वह गवाह है कि तुम लोगों के जाते ही मैं भी चली गई थी और अभी लौटी हूँ। अभी तो मैं अपने घर में भी नहीं घुसी हूँ। स्वागत है ऐन्टोनियो ! और जिसकी तुम आशा भी नहीं करते, मैं तो तुम्हें ऐसी अच्छी खबर सुनाऊँगी ! यह पत्र शीघ्र मुहर तोड़कर खोलो। तब तुम्हें पता चलेगा कि अकस्मात् ही तुम्हारे बहुत माल से लदे तीन जहाज़ बंदरगाह पर आ गये हैं। पर यह नहीं बताऊँगी कि मुझे यह पत्र कैसे मिला।

ऐन्टोनियो : मैं तो वैसे ही अवाक् हूँ।

बैसैनियो : तुम वकील बनी थीं, मैं तो तुम्हें पहचान भी नहीं पाया।

प्रेशियानो : तुम क्लर्क थीं ।

एन्टोनियो : श्रीमती ! आपने मुझे जीवन ही नहीं दिया, वरन् जीविका भी दी है । क्योंकि इसमें स्पष्ट लिखा है कि मेरे जहाज बंदर-गाह पर सुरक्षित पहुँच गये हैं ।

पोशिया : लोरेन्जो ! कहो ! मेरे क्लर्क के पास तुम्हारे लिये भी कुछ बहुत अच्छी खबर है !

नैरिसा : और मैं तो इनसे फीस भी न लूँगी, यों ही बता देती हूँ ! यह है, तुम और जैसिका, दोनों लो, शाइलॉक की विरासत का दस्तावेज कि उसकी मृत्यु के बाद उसकी सारी सम्पत्ति लोरेन्जो की हो जायेगी ।

लोरेन्जो : सुंदर देवियो ! तुम तो बुभुक्षित जनों के लिये स्वर्ग का भोजन भेजती हो ।

पोशिया : अरे सुबह हो गई । लेकिन इतनी घटनाएँ हुई हैं कि इनसे क्या निबटना इतना सहज है ? चलो भीतर चलें और वहाँ मुझसे चाहे जितने सवाल पूछ लेना, सबका ठीक-ठीक जवाब दूँगी ।

प्रेशियानो : चलिये ! यही ठीक है । मैं तो जब तक जिंदा रहूँगा, मुझे तो किसी भी चीज का इतना डर नहीं लगेगा जितना नैरिसा की अंगूठी खो जाने का ।

[प्रस्थान]

५०
०
५
०
५
(३१)

१. इजराइली लोगों को स्वर्ग से देवदूतों ने लाकर भोजन खिलाया था, जब वे लोग अरब के निर्जनमह में फँस गये थे । यह एक 'पुरानी इंजील' की कहानी है ।

